

## **“Fighting Cancer”**

**“कैन्सर से जंग ”**

अपने स्वयं के कैन्सर से जंग के लिए कदम दर कदम सहायक मार्गदर्शिका  
के लेखक द्वारा

## **“Cancer...There’s Hope”**

**“कैन्सर..... उम्मीद अभी है”**

**मूल लेखक : एनीटी एवं रिचर्ड ब्लॉच**

**अनुवादक :**

**श्याम किशोर शर्मा B.Text., M.B.A.**

**संगीता शर्मा M.A., Hindi**

## अनुवादक के दो शब्द

यह पुस्तक, बिना किसी मूल्य के, आपको इस विश्वास के साथ दी जा रही है, कि इससे विभिन्न तरीकों द्वारा आपको अपने कैंसर से और ज्यादा सफलता पूर्वक लड़ने और उस पर विजय प्राप्त करने की संभावनाओं को बढ़ाने और इस लड़ाई के दौरान अपने जीवन को और बेहतर रखने में सहायता मिलेगी। मेरा अनुरोध है कि इसमें भाषा, साहित्य, व्याकरण संबंधित हर गलती को नजर अंदाज करके केवल इसमें व्यक्त भावनाओं को समझे।

आपसे निवेदन है कि इसको पढ़ने के पश्चात् कृपया किसी अन्य कैंसर पीड़ित को दे अथवा किसी लाइब्रेरी को दान कर दे। जिससे आप जैसे किसी अन्य को भी प्रेरणा एवं सहायता मिल सके।

इस पुस्तक में लिखा हुआ एक-एक शब्द इसके मूल-लेखक श्री रिचर्ड ब्लॉच के दिल की गहराईयों से निकला है। क्योंकि वे स्वयं भी अपने कैंसर से जंग की प्रक्रिया से निकलकर और उस पर विजय प्राप्त करने वाले भाग्यशालियों में से एक थे। “घायल की गति घायल जाने और ना जाने कोई”

आपसे मेरा विनम्र निवेदन है कि इसमें लिखे व सुझाए गए एक-एक शब्द को बड़ी शान्ति व धैर्य से पढ़कर खुले मन से उस पर विचार करें और उनका पालन करते हुए अपने कैंसर से जंग जीतने का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें। भविष्य की ना सोचें। भविष्य में जो भी होगा अच्छा ही होगा यह मानकर ही चलें। कर्म ही आपका धर्म है और केवल इसी पर आपका अधिकार है। अपने इस कैंसर से युद्ध को मानवता के हित में, धर्म युद्ध मानकर इससे युद्ध करें। जहाँ तक फल का सवाल है उस पर ना तो आपका कोई जोर है ना कोई हक। आप फल की केवल इच्छा या कामना तो कर सकते हैं उस पर अपना अधिकार नहीं मान सकते। **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।**

इस युद्ध में कई बार आपको लगेगा कि आपका शत्रु आप पर भारी पड़ रहा है, इससे निराश ना हो और अपने मनोबल को पुनः जागृत करके एक नई शक्ति व उत्साह से आप और भी ज्यादा संकल्पित होकर दृढ़ निश्चय से अपनी लड़ाई लड़ते रहे। कभी आपको ऐसा भी लगेगा कि आप अपने शत्रु पर भारी पड़ रहे हैं, तो मारे खुशी के जरा सा भी असावधान होने की गलती ना कर बैठें क्योंकि आपका शत्रु कैंसर अत्यंत चालाक, तेज-तर्रार व शक्तिशाली है कि वह आपको असावधान पाकर तुरंत दुबारा आक्रमण कर देगा जो शायद पहले से भी ज्यादा तीव्र व खतरनाक होगा। कभी बहुत कठिन परिस्थितियों से दो-चार होना पड़ेगा तो कभी आपको बहुत राहत भी महसूस होगी। प्रत्येक परिस्थिति में आपको अपने तन-मन को नियंत्रण में रखकर अपनी मनोदशा को स्थिर व अड़िग रखकर अपना ध्यान अपने शत्रु कैंसर पर ही केन्द्रित रखना है।

**सुखदुःखे समं कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ, ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।**

अर्जुन! अपनी मनोदशा को सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय में अविचलित रखते हुए अपना युद्ध करते हुए तू कभी भी पाप को प्राप्त नहीं होगा। (परिणाम हार हो या जीत)

मित्रो, आपका अपने शत्रु को परास्त कर उस पर जीत हासिल करने व अपने रोग से मुक्त होने का शुभ संदेश ही उन सभी के लिए एक सच्ची श्रृद्धांजलि होगी, जो शायद आपकी तरह भाग्यशाली नहीं थे। और अपने कैंसर की जंग में अपने शत्रु को हरा तो नहीं पाएँ पर एक वीर योद्धा की तरह, उसकी आखों में आंखे डालकर, पंजे से पंजा मिलाकर, अपने जीवन के

एक-एक पल की खातिर अपने महाविकराल व शक्तिशाली शत्रु को भी लोहे के चने चबाने के लिए मजबूर कर दिया और लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हो गए। इन वीरो में, मेरी स्वयं की पत्नी भी शामिल थी। इस प्रयास के द्वारा मैं अपनी पत्नी व उन सबको श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। मेरी कामना और विश्वास है कि, यह प्रयास एक ज्योति स्तम्भ की तरह, उन सभी को भी प्रेरणा देता रहेगा जो आज अभी इस वक्त भी, एक बेबस, निरीह-लाचार की तरह, अपने शत्रु के सामने आत्म समर्पण करके, बेबसी से अपनी मृत्यु का इंतजार करने की अपेक्षा, अपने शत्रु कैंसर को हराने के लिए जी तोड़ प्रयास कर रहे हैं।

मैं आभार व्यक्त करना चाहूँगा R.A. Cancer Centre व उनसे जुड़े हुए समस्त लोगो के प्रति विशेष तौर से Mrs. Annette Bloch, Ms. Vangie Rich, Mike Lyon, Linda Lyon, Jimi Jacob, & Stacy जिनके सहयोग व प्रोत्साहन के बिना मुझे उनके इस कैंसर के विरुद्ध प्रेरणा जगाने के प्रयास में अपना भी तुच्छ सहयोग देने का अवसर ही नहीं मिल सकता था।

अंत में, मैं आभार व्यक्त करना चाहूँगा मेरी पुत्रवधु श्रीमती संगीता शर्मा व मेरे मित्र व सहयोगी जितेन्द्र गर्ग व अन्य शुभाकांक्षियों जिनके सहयोग व शुभकामनाओं के बिना यह कार्य शायद सम्भव ही नहीं था।

हमारी शुभकामनाएँ और प्रार्थनाएँ आपके साथ है और रहेंगी। हम आपके रोगमुक्त होकर स्वस्थ होने के शुभ संदेश की प्रतीक्षा व प्रार्थना कर रहे हैं।

S.K. Sharma  
Cell - + 91 9818805904  
email – sks16348 @yahoo.co.in



## विषय-सूची

1. सर्म्पण	—
2. प्रस्तावना	—
3. उत्तर कहाँ मिलेगे	—
4. भविष्य में झॉककर समझने का प्रयास	—
5. पहली पहचान-निदान	—
6. रोग मुक्ति की राह पर — प्रस्थान	—
7. रेडिएशन थेरेपी	—
8. किमोथैरेपी	—
9. ऑपरेशन के लिए	—
10. स्वस्थ होने की राह पर	—
11. चिकित्सा दौर के उतार-चढ़ाव	—
12. छोटी-मोटी उलझने	—
13. आशा की किरण	—
14. चिकित्सा पैनल का गठन	—
15. कैंसर प्रबन्धन सैंटर का गठन	—
16. भविष्य दर्शन	—
17. सारांश एवं निष्कर्ष	—
18. नैशनल कैंसर इस्टीट्यूट द्वारा अधिकृत विशिष्ट कैंसर केन्द्र	—
19. लेखकों के बारे में	—
20. सामान्य भाषा में शब्द ज्ञान	—

## सर्मपण

यह पुस्तक “कैंसर — उम्मीद अभी बाकी है।” **Cancer – There is hope** मेरी तीनों बेटियों को समर्पित है जिनके प्यार, सहारे व मेरे प्रति सर्म्पण की भावना ने ही मुझे जीने की प्रेरणा व दृढ़ इच्छा शक्ति दी।

यह पुस्तक पूर्णतया निःशुल्क है, और इस विश्वास के साथ आपको दी जा रही है कि, यह आपको अपने कैंसर की जंग जीतकर उस पर विजय प्राप्त करने और एक रोग मुक्त स्वस्थ व सुंदर जीवन जीने के, ज्यादा अवसर प्रदान करेगी। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद, आप कृप्या किसी अन्य कैंसर मरीज को दे दें अन्यथा, किसी पुस्तकालय या धार्मिक संस्था को दान दे दें ताकि, वे इसे आपके जैसे ही, किसी अन्य जरूरत मंद को पढ़ने को दे सके।

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद, हमें अपनी भावनाओं, प्रतिक्रियाओं व सुझावों से, अवश्य अवगत कराएँ। इससे हमें बड़ी खुशी व प्रेरणा मिलेगी।

हमें आपकी बहुत चिंता है। हमारी शुभकामनाएँ और दुआएँ आपके साथ हैं।

—रिचर्ड और ऐनेटी ब्लॉच



## प्रस्तावना

सन् 1978 में, एच एण्ड आर ब्लॉच इंक के सह-संस्थापक व ओनरेरी चैयरमेन रिचर्ड ब्लॉच को कैंसर हो गया था। उस वक्त डाक्टरों ने उनको बताया था कि उनका कैंसर उनके लिए प्राणघातक हो सकता है। लेकिन, उन्होंने अपनी पत्नी ऐनेटी और अपने चिकित्सकों की सहायता से, अपने कैंसर को हराकर उस पर विजय प्राप्त करने के लिए, दृढ़ निश्चय के साथ रोगमुक्त होकर जीने के लिए, दो साल तक एक बड़ा ही कष्टदायक व भयंकर युद्ध किया। यह उसी का परिणाम है कि, आज वह पूर्णतया रोगमुक्त होकर सामान्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

उनका वह युद्ध और अपने शत्रु कैंसर पर विजय प्राप्त करके स्वस्थ होना अपने आप में इतना नाटकीय व अविश्वसनीय था कि, श्रीमती व श्री ब्लॉच ने यह निश्चय कर लिया कि वे अपना शेष जीवन, उनके जैसे कैंसर मरीजों को यह यकीन दिलाने में लगायेंगे कि, यदि वे भी चाहें और उन्हीं की तरह दृढ़ निश्चय से प्रयास करें तो, वे भी अपने कैंसर पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

इस पुस्तक का उद्देश्य कैंसर मरीजों, उनके परिजनों व मित्रों को इस बारे में सुझाव देना है कि, इन परिस्थितियों में वे कैसे स्वयं को पूर्णरूप से सहयोग दे सकते हैं। इसका दूसरा उद्देश्य डॉक्टरों व अन्य पेशेवर विशेषज्ञों को सुझाव देना भी है कि, उनके द्वारा दी जाने वाली चिकित्सा, व्यवहार और उनके किसी भी कथन का, मरीज और उनके परिजनों पर क्या-क्या प्रतिक्रियाएँ-प्रभाव या दुष्प्रभाव हो सकते हैं। जितना भी हम इस खतरनाक बीमारी के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल करेंगे उतने ही, ज्यादा से ज्यादा, इसको हराने के अवसर होंगे।



## उत्तर कहीं मिलेगे

यदि आपके मन में इस विषय पर कि आपको कौनसा कैंसर है और इसकी सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधाएँ व अन्य जानकारी कहीं उपलब्ध हो सकती है तो, 1-800-4-CANCER पर टोल फ्री नम्बर डायल करके आप नैशनल कैंसर इस्टीट्यूट द्वारा संचालित, कैंसर इन्फोमेशन सेंटर से सम्पर्क कर सकते हैं।

इस प्रकार आपका सम्पर्क, एक स्वचालित तंत्र द्वारा, अपने क्षेत्र के स्थानीय कैंसर इन्फोमेशन सेंटर से जुड़ जाएगा। यदि आपके क्षेत्र में कोई कैंसर इन्फोमेशन सेंटर नहीं है तो, आपका सम्पर्क खुद ब खुद ही, नैशनल कैंसर इन्फोमेशन सेंटर की सेवा लाइनो से जुड़ जाएगा।

अपने कैंसर विशेष के बारे में सभी प्रकार की ताजा तरीन आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों की उपलब्धता और अपने कैंसर की स्थिति व उससे संबधित हर प्रकार की जानकारी के बारे में पूछिए और यह भी पूछिए कि, आपके कैंसर की स्थिति और इसके किस्म को ध्यान में रखते हुए, अमेरिका में कहीं-कहीं इसके इलाज के लिए ताजा-तरीन व आधुनिकतम चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस सूचना से आपको बड़ी राहत मिलेगी कि, आपके डॉक्टर ने भी आपको सही स्थान पर जाने के लिए सुझाव दिया है।

यदि और भी कोई प्रश्न या दुविधा आपके मन में है, तो, अपने डॉक्टर से इसके बारे में अवश्य जानकारी लें।



## भविष्य में डॉककर समझने का प्रयास

28 मार्च 1978 को डॉक्टर ने मुझे बताया कि, मुझे कैंसर है और मेरा यह फेफड़ों का कैंसर ऑपरेशन योग्य भी नहीं था। मुझे अपने कारोबार को, इस परिस्थिति को ध्यान में रखकर, व्यवस्थित कर लेना चाहिए।

2 साल बाद ही मेरे डॉक्टरों ने मुझे बताया कि अब मैं पूर्णतया कैंसर मुक्त होकर ठीक हो चुका हूँ और मुझमें दूबारा फेफड़ों के कैंसर होने की, किसी भी सामान्य आदमी से ज्यादा, संभावना नहीं है।

यह पुस्तक हर उस व्यक्ति के लिए लिखी जा रही है जिसको, या तो स्वयं में कैंसर का निदान हुआ है या उनके किसी मित्र या परिजन को कैंसर है। इसमें, एक भुक्तभोगी की दृष्टि से, जो स्वयं भी इन सब प्रक्रियाओं व अनुभवों के दौर से गुजर चुका है, आपके इलाज के लिए भविष्य में दी जाने वाली चिकित्साओं व उससे जुड़ी अन्य परिस्थितियों के बारे में बताने की कोशिश की गई है।

यह पुस्तक कोई डॉक्टरी कहानियों का संग्रह नहीं है। इसमें लिखा एक-एक शब्द मेरे अपने स्वयं के निजी अनुभवों पर आधारित है। मेरे साथ मेरी चिकित्सा व उसके पश्चात्, स्वास्थ्य लाभ के दौरान क्या-क्या घटित हुआ, मैंने क्या समझा और कैसा महसूस किया, यह पुस्तक उन सब भावनाओं का संग्रह है।

मेरा यह सोचना है कि, इसमें, कुछ ना कुछ ऐसा अवश्य ही मिलेगा, जिससे कहीं ना कहीं, कभी ना कभी आपका भी सम्बंध पड़ेगा।

मेने इसमें पर कहीं भी, किसी से भी किसी भी, प्रकार की, तुलना करने का प्रयास नहीं किया है, क्योंकि कैंसर का हर मामला अपने आप में केवल एक ही होता है जो किसी भी दूसरे मामले से भिन्न होता है। ना केवल जाति और प्रजाति भिन्न होती है, हर व्यक्ति में स्थान व स्थिति भी भिन्न हो सकती है और वे व्यक्ति अलग-अलग, उम्र के सामाजिक परिवेश के और उनकी ताकत और कमजोरीयां भी पूर्णतया भिन्न हो सकती है। इसलिए कैंसर का हर मामला, उँगलियों की छाप की तरह, अपने आप में सबसे अलग ही होता है।

हर पाठक को यह ठीक तरह से और अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए और इस पर विशेष जोर देना चाहिए कि, हर कैंसर ग्रस्त आदमी के साथ क्या हो रहा है, वह किस प्रकार की परिस्थितियों से गुजर रहा है और वह अपने कैंसर से निपटने के लिए स्वयं के लिए क्या कुछ कर रहा है, या कर सकता है। इस पुस्तक के द्वारा यह बताने की कोशिश की गई है कि, अच्छी चिकित्सीय देखभाल, तुरंत और कारगर कार्यवाई और सकारात्मक व स्वस्थ मनोदशा, आपके इलाज व उससे रोगमुक्त होकर स्वस्थ होने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण आधार है।

कैंसर शरीर की कौशिकाओं की अनियंत्रित बढ़त की क्रिया है। कैंसर कोशिकाएँ बहुत ही सूक्ष्म होती हैं। दस लाख कैंसर कोशिकाओं का आकार लगभग एक आलपिन के सिर के बराबर होता है। एक खरब कैंसर कोशिकाओं का आकार लगभग एक छोटे मार्बल पत्थर के बराबर होता है। ये कैंसर कोशिकाएँ शरीर की सामान्य व स्वस्थ कौशिकाओं के मुकाबले कमजोर होती हैं, परन्तु क्योंकि, ये बड़ी तेजी से अपने आपको गुणात्मक रूप से बढ़ाती रहती हैं, ये सामान्य कौशिकाओं से ज्यादा शक्तिशाली हो जाती हैं। कैंसर के इलाज में मुख्यतया: छ प्रकार की चिकित्सीय पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। ये पद्धतियां कभी अकेले ही या कभी अन्य पद्धतियों के साथ मिलाजुला कर, संयुक्त रूप से, किसी कैंसर के इलाज में प्रयोग में ली जा सकती हैं।



**ऑपरेशन** – किसी भी कैंसर की गॉठ को ऑपरेशन के द्वारा काट कर शरीर से निकाल देना।

**रेडियोथैरेपी** – एक्स-रे किरणों द्वारा कैंसर कोशिकाओं का विनाश।

**किमोथैरेपी** – रसायनों द्वारा कैंसर कोशिकाओं का विनाश।

**इमुनाइजेशन थैरेपी**— रसायनों की मदद से शरीर की रोग प्रतिरक्षण क्षमता को ही और ज्यादा मजबूत बनाके, सक्रिय करना और इसके द्वारा ही कैंसर कोशिकाओं का विनाश करना।

**हीट थैरेपी**— एक ही स्थान पर केन्द्रित (स्थानीय) गर्मी के द्वारा कैंसर कोशिकाओं का नाश।

**साइकोथैरेपी (मनश्चिकित्सा)** – मानव की मस्तिष्क की एकाग्रता को नियंत्रित करके इसके द्वारा, कैंसर कोशिकाओं का नाश करने में सहायता लेना और इसके द्वारा शरीर की रोग प्रतिरक्षण क्षमता को और ज्यादा प्रभावशाली व सक्रिय करके कैंसर कोशिकाओं का सफाया कराना।

रैडिएशन, ऑपरेशन और हीट थैरेपी सभी पूर्ण रूप से कारगर हो पाती हैं, जबकी, कैंसर शरीर के एक थोड़े से भाग तक ही सीमित रहता है। ये पद्धतियां एक सीमित दायरे में केन्द्रित, परन्तु बड़े कैंसर के फोड़े से ही निपट सकती है। दूसरी तरफ किमोथैरेपी, इमुनाइजेशन थैरेपी और साइको थैरेपी ऐसी पद्धतियां हैं जो शरीर में विस्तृत फैले हुए कैंसर के मामले में ज्यादा योजनाबद्ध व सफलता पूर्वक कार्य करती हैं। ये पद्धतियां शरीर के पूरे कोशिका तंत्र में जाकर अपना काम (कैंसर कोशिकाओं का विनाश) करती है परन्तु, ये पद्धतियां, शायद एक ही भाग में केन्द्रित, बड़े कैंसर का नाश करने में बहुत ज्यादा प्रभावशाली नहीं हो पाती है। यही कारण है कि चिकित्सा के पहले दौर में, आमतौर से, पहले शरीर के एक ही स्थान पर केन्द्रित कैंसर के मुख्य भाग को किसी भी उपर्युक्त स्थानीय कैंसर चिकित्सा पद्धतियों का इस्तेमाल करके, उस बड़े कैंसर की गॉठ को शरीर से निकाल देना ही शायद सबसे बेहतर विकल्प होता है और इसके बाद किसी भी अन्य चिकित्सा पद्धतियों का प्रयोग करके, यह सुनिश्चित किया जाता है कि शरीर में बची-कुची कैंसर की जो भी कोशिकाएँ हैं, उनका पूर्णरूप से सफाया कर दिया जाए।

क्योंकि, कैंसर की कोशिकाएँ अपनी संख्या को गुणात्मक तरीके से बढ़ाती है, (एक से दो, दो से चार, चार से आठ और इसी तरह आगे विघटन) इसलिए यह सबसे जरूरी है कि, जितना संभव हो उतना शीघ्र ही कैंसर का निदान हो और फिर फौरन ही उसकी उपयुक्त चिकित्सा शुरू कर दी जाए। पीछे मुड़कर अपने आप को कोसिएँ मत कि, पहले इस कैंसर का आपको पता क्यों नहीं चला? परन्तु जब भी इसका निदान हो जाएँ, उसके बाद तो सबसे जरूरी यह हो जाता है कि, बिना एक पल भी गवाएँ इसका इलाज शुरू कर दिया जाए। ध्यान रहे, एक दिन की देरी भी, जीवन मृत्यु में बदल सकती है।

रैडिएशन और कुछ रसायन आपको केवल एक सीमित मात्रा में ही दिये जा सकते हैं। कुछ तरह के ऑपरेशन भी दुबारा नहीं किये जा सकते। उदाहरण के लिए, आपका केवल एक ही फ़ैफ़ड़ा ऑपरेशन करके निकाला जा सकता है, दूसरे ऑपरेशन करके दूसरा फ़ैफ़ड़ा निकलवाकर आप जीवित ही नहीं रह सकते। अतः यह सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है कि, कैंसर पहली बार में ही पूर्णतया ठीक हो जाए, क्योंकि, कई प्रकार के कैंसर यदि पुर्नजीवित हो जाएँ तो फिर, उनके इलाज की कोई संभावना शेष नहीं रहती और मृत्यु लगभग निश्चित ही होती है।

इन्ही सब बातों से जुड़ा हुआ एक बहुत ही रोचक उदाहरण एक चिकित्सक ने दिया है। उन्होंने पाया है कि, आमतौर से एक विशेष प्रकार का रक्त कैंसर अक्सर कुछ समय के लिए अपने आप ही समाप्त हो जाता है और फिर पुर्नजीवित भी हो जाता है और उस समय यह निश्चित तौर पर प्राणघातक ही सिद्ध होता है। परन्तु जब यह विशेष प्रजाति का रक्त कैंसर, स्वयं ही समाप्त के दौर में होता है, उस दौरान यदि उस मरीज की अस्थि मज्जा (बोन मैरो) निकाल

ली जाए और इसे फ्रिज में ठंडा करके जमा कर रख लें और इसके पुर्नजीवित हो जाने की स्थिति में यदि, इसे पुनः उस मरीज के शरीर में डाल दिया जाए तो, डॉक्टर अक्सर उस मरीज को ठीक करने में सफल होते हैं।

मेरे खुद के मामले में तो मैं अपनी ठीक होने की प्रक्रिया का श्रेय इन निम्नलिखित पाँच बिन्दुओं को देना चाहूँगा।

- मेरी पत्नी व बेटियों का मेरे प्रति पूर्ण समर्पण व सहयोग, जिन्होंने मुझे मेरे कैंसर को हराकर जीने की प्रेरणा दी थी।
- उपयुक्त चिकित्सक व चिकित्सा पद्धति के चयन में सफलता। मैं ना केवल उन डाक्टर के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने मेरा सफल इलाज किया बल्कि, उन सबके प्रति भी दिल से आभार प्रकट करना चाहूँगा, जिन्होंने मेरी उन चिकित्सा पद्धतियों को सुझाने व सही विकल्प का चयन करने में मेरी सहायता की, जिनका प्रयोग मेरी चिकित्सा में किया गया था।
- स्वस्थ व सकारात्मक मनोदशा— जैसे ही मैं अपने कैंसर के निदान की पहली सूचना के सदमें से उबरा, उस वक्त मैं अच्छी तरह से जानता था और मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि अब मुझे अपने कैंसर को हराना ही है, और मैं उस पर विजय हासिल करने के लिए कुछ भी करूँगा।
- भाग्य— क्योंकि मेरे कैंसर का फोड़ा एक ऐसी नस के आस-पास था जिससे मुझे असहनीय दर्द होता था और मुझे इस दर्द के कारण से बार-बार डॉक्टरों की राय लेनी पड़ती थी।
- ईश्वर में विश्वास— मेरी स्वयं की प्रार्थनाएँ और अन्य मित्रो व परिजनों की मेरे लिए की गई प्रार्थनाएँ जो निश्चित तोर पर मेरे लिए बहुत मायने रखती थी। और वे भी मेरे कैंसर पर विजय पाने का बहुत ही महत्वपूर्ण कारण रही थी।



## पहली पहचान—निदान

कैंसर से मेरी जंग की शुरूआत नवम्बर 1977 के पहले सप्ताह में हुई थी। हमने अकापुलको में, पाँच सप्ताह के लिए, एक मकान किराए पर लिया था। यहीं पर पहले सप्ताह के बाद, मुझे अपनी गर्दन में अकडन व सूजन का आभास हुआ था। मैंने इसको सुबह ज्यादा टेनिस खेलने या अपने कमरे में लगे ऐयरकंडीशनर के कारण समझा।

मैंने इस बारे में अपनी पत्नी को कुछ भी नहीं बताया था, मेरा विचार था कि, एक सप्ताह में यह अपने आप ही ठीक हो जाएगा। लेकिन ऐसा हुआ नहीं बल्कि, यह अगले चार सप्ताह में धीरे-धीरे और बढ़ गया। कन्सास वापिस आकर, मेने अपने डॉक्टर को फोन किया। उन्होंने मुझे अगले दिन मिलने का समय दिया। उन्होंने मेरे कंधे के एक्स-रे किये और मुझे भरोसा दिया कि, यह केवल मॉस-पेशियों में खिचाव के कारण है। मैंने उनको बताया कि उनकी इस सूचना से मेरे मन को बड़ी राहत मिली है। परन्तु पता नहीं क्यों, मेरे इस कंधे के दर्द से अचानक ही, मुझे अपने चाचाजी की मुझे याद आई, जिनको भी कैंसर से मृत्यु से पहले, कुछ इसी तरह की शिकायत हुई थी। जब मैंने अपनी इस आशंका के बारे में डॉक्टर को बताया तो, उन्होंने मेरे कंधे के तीन और एक्स-रे किये और उनकी जाँच करने के बाद मुझ बड़े विश्वास के साथ कहा कि, वह बड़े दावे के साथ कह सकता है कि, यह कैंसर नहीं है। उन्होंने मुझे भरोसा दिलाया कि, यह सूजन अगले तीस दिनों में अपने आप ही खत्म हो जाएगी। यह पन्द्रह दिसम्बर का दिन था, और इस दिन पहली बार मैंने अपनी पत्नी को, इसके बारे में कुछ बताया।

जनवरी में हम फ्लोरीडा चले गए। दर्द अभी भी था, बल्कि यह और भी बढ़ कर मेरे हाथ के नीचे तक उतर चुका था। केन्सास वापिसी पर मैंने एक हड्डीयों के सर्जन से मिलने का समय लिया इनका ऑफिस मेरी बिल्डिंग में ही था।

उन्होंने तुरन्त मेरे से सारे एक्स-रे मगवाएँ, उन्हें देखने के बाद उन्होंने बताया की ये एक्स-रे शरीर के गलत भाग से लिये गए हैं। उन्होंने मेरी गर्दन के चार और एक्स-रे किये और मुझे दिखाया कि, यह समस्या मेरी गर्दन में हुई गठियां की गाँठ के कारण है, जिसके बढ़ जाने से, मेरी गर्दन की किसी नस पर दबाव पड़ रहा है और उसी के कारण मेरी गर्दन और हाथ में दर्द रहता है। यह सब मेरी भी समझ में आ रहा था। मैंने उन्हें अपने मन की कैंसर की चिन्ता के बारे में बताया तो, उन्होंने भी मुझे भरोसा दिलाया की इस बारे में मेरा डर और आशंका पूर्णतया निर्मूल है और यह दर्द अगले तीस दिन में, खुद ही समाप्त हो जाएगा। हम फ्लोरीडा वापिस आ गए परन्तु दर्द बजाए खत्म होने के इस हद तक बढ़ गया कि, मेरे हाथ में कम्पन सी रहने लगी और कुछ-कुछ सुन्न सा होने लगा था। मैं अपने दाहिने हाथ से कुछ पकड़ भी नहीं रहा था।

27 मार्च 1978 को, केन्सास वापिस आने पर, मैंने एक हड्डी रोग सर्जन से बात की। अपने इस दर्द का वास्तविक कारण जानना चाहता था। जब मैंने उनको सारी स्थिति से अवगत कराया तो, उनका तुरन्त जवाब था कि वे मेरे लिए उपयुक्त डॉक्टर नहीं थे। उन्होंने मुझे किसी न्यूरो सर्जन को दिखाने का सुझाव दिया। मैंने उनके सुझाव के अनुसार, न्यूरो सर्जन को टेलीफोन पर अपने बारे में सब कुछ बताया। मेरे विचार में, वे मुझे अगले सप्ताह मिलने का समय देने वाले थे। परन्तु, उन्होंने अगले एक घंटे में ही, मुझे अपने रिसर्च अस्पताल के आपातकालीन कक्ष में मिलने को कहा।

मैं और मेरी पत्नी उनसे मिले। उन्होंने मुझे गर्दन आगे पीछे घुमाने को कहा और फिर बड़े विश्वास के साथ कहा कि निश्चित तौर पर यह गठिया का दर्द नहीं था। फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि “मैं दिन में कितनी सिगरेट पीता हूँ। मैंने उनसे कहा था कि, उनका यह प्रश्न मुझे अच्छा नहीं लगा था। परन्तु इस प्रश्न से मेरे मन को इतना उत्तर तो अवश्य मिल गया था कि,

उनका इस प्रश्न के पीछे वास्तविक मतलब क्या है? और यह भी कि मेरा कैंसर के बारे में सोचना, और डरना निर्मूल नहीं था।

मैं अपने इन डॉक्टरों के प्रति अंत्यन्त आभारी हूँ। ये पहले डॉक्टर थे ना केवल जिन्होंने, मेरी समस्या के मूल कारण को पकड़ा बल्कि, फौरन कार्यवाही भी शुरू कर दी। उन्होंने एक अस्पताल में, मेरे लिए प्रातः साढ़े सात बजे का समय तय करवाया, जहाँ मेरे दाहिने हाथ व कंधे की कई इलेक्ट्रॉनिक जॉचे होनी थी। जिनसे यह पता चलने वाला था कि मेरी कोशिकाओं में किस सीमा तक नुकसान हुआ है। इसके अतिरिक्त वे मेरी छाती का एक्स-रे भी करने वाले थे। एक्स-रे में, मेरे दाहिने कंधे पर छाती से उपर एक बड़ी सी गॉठ दिखाई दी, जो वास्तव में ही बहुत खतरनाक लगती थी। उसके बाद मेरे पूरे शरीर का बोन स्कैन किया गया। जिससे यह पता लगा कि यह गॉठ एक फोडा है। अगले दिन बायोप्सी करना तय किया गया। जिससे यह पता चलता है कि, यह फोडा सामान्य है या कैंसर का।

जब मैं दवाओं के प्रभाव से बेहोश था मेरी पत्नी व तीनों बेटियाँ बड़े धैर्यपूर्वक बैठी मेरा इंतजार कर रही थी। वे अभी तक भी इस पर विश्वास नहीं कर पा रही थी कि, यह सब क्या हो रहा था। बायोप्सी की जॉच के बाद, सर्जन और उसके सहायक मेरी सभी जॉचों का नतीजा मेरे परिवार को बताने के लिए आए। वे कुछ जरूरत से ज्यादा ही रूखे स्वभाव के थे। उन्होंने आते ही मेरी पत्नीयों और बेटियों को बताया कि, मुझे फैंफड़ों का कैंसर था यह अत्यंत खतरनाक स्थिति का था और ज्यादा से ज्यादा तीस प्रतिशत ही इसके ठीक होने की संभावनाएँ थी। सच्चाई बताने का, अनावश्यक रूप से, यह कितना कठोर व निर्दयतीया पूर्ण तरीका था! ईमानदारी व सच्चाई आवश्यक है। परन्तु इस प्रकार की सूचना देने के लिए शायद इतने ज्यादा रूखे व कठोर व्यवहार की भी आवश्यकता नहीं थी। यह कार्य कहीं ज्यादा विनम्रता व शालीनता से भी किया जा सकता था। मेरा परिवार गुस्से, बेबसी और अविश्वास से रो पड़ा। धीरे-धीरे उन्होंने, अपने आप को संभालकर सहज मानसिक स्थिति में आकर, मेरे भाई हेनरी व उसकी पत्नी से इस विषय पर बात करी कि, अब आगे कौन-कौन से विकल्प हैं।

इसी दौरान, जबकी वे सर्जन अभी मेरे कक्ष में ही थे, मुझे होश आ गया। जिन शब्दों का प्रयोग का करते हुए, उन्होंने मुझे मेरी बीमारी की सूचना दी, वे थे, “यह कैंसर है, इसका ऑपरेशन भी नहीं किया जा सकता। यदि मैं तुम्हारी जगह होता तो तुरन्त ही अपने व्यवसाय की वैकल्पिक व्यवस्था करता”। जब मैंने उनसे पूछा, क्या ऑपरेशन के अलावा भी मेरे पास कोई चिकित्सा विकल्प है? तो उनका जबाब था कि, वे मुझे रेडिएशन दे सकते थे, पर उसका भी कुछ फायदा होने वाला नहीं था। बल्कि, वे मुझे और ज्यादा बीमार कर देगी। मैंने जब उनसे पूछा कि, मैं कहीं और जा सकता हूँ। तो उनका उत्तर था की वे मेरे को जहाँ भी जाना चाहूँ भेज सकते हैं, पर जितना वे जानते हैं उससे ज्यादा कोई और जानकार नहीं हो सकता।

मेरी भावनाएँ उस वक्त तक भी इस परिस्थिति पर विश्वास नहीं कर पा रही थी। मुझे अभी भी लग रहा था कि, डॉक्टर किसी अन्य के बारे में बात कर रहे थे, मेरे बारे में नहीं। मैं तो 52 साल का एक खुशमिजाज और स्वस्थ व्यक्ति था और ऐसी चीजें तो किसी दूसरे के साथ ही घटित हो सकती थी। मेरे साथ नहीं। मैं और मेरी पत्नी पिछले 31 साल से शादी-शुदा थे। हमारी तीन प्यारी-प्यारी बेटियाँ, दो दामाद, चार नाते-नातिन और एक सफल व्यवसाय था। कुल मिलाकर, मेरे पास जीने के लिए बहुत कुछ था। मैं और भी बहुत कुछ पूछना चाहता था पर यह नहीं फैसला कर पा रहा था कि, क्या पूछूँ और किससे पूछूँ?

मैं तो यह भी नहीं जानता था कि, यह बीमारी जिसका नाम कैंसर था, यह है क्या बला? मेरा दिमाग इस हद तक सुन्न हो गया था कि, मुझे यह भी नहीं याद आ रहा था कि, मैं ऐसे किसी व्यक्ति को जानता भी हूँ जिसे, कभी कैंसर हुआ हो। मैं उस वक्त यह भी भूल गया था कि, मेरे चाचाजी की मृत्यु कैंसर से ही हुई थी। आठ साल से भी कम समय पहले मेरी पत्नी की बहन

की दर्दनाक मृत्यु भी कैंसर के कारण ही हुई थी। हमें सहायता चाहिए थी, पर यह नहीं जानते थे कि, किससे ले, और कैसे ले।

उस रात मेरे एक मित्र बड़्डी बाम ने, जिसकी पत्नी हाल में ही कैंसर का शिकार हो गई थी, मुझसे बात की। उन्होंने जैसे ही मेरी समस्या के बारे में सुना, मेरे से बिना पूछे ही, हाउसटन में उस डॉक्टर से बात की जिन्होंने उनकी पत्नी का इलाज किया था। उन्होंने जब उस डॉक्टर को मेरे बारे में सब कुछ बताया तब उन्होंने उत्तर दिया कि वे घर पर तुरन्त मेरी कॉल का इन्तजार करेंगे।

मेने हाउसटन में, उस डॉक्टर से बात की। उन्होंने मुझे तुरन्त गुरुवार को ही, हवाई जहाज से हाउसटन आने को कहा और बताया कि, शुक्रवार से ही वे मेरी जाँच प्रक्रिया शुरू कर देंगे। मैंने उन्हें बताया कि, मैं सोमवार का आना चाहूँगा क्योंकि, इस दौरान मुझे कुछ निजी व आवश्यक व्यवसायिक कार्य निपटाने थे। उनका सीधा और स्पष्ट उत्तर था कि, शनिवार, रविवार को उनका अस्पताल बंद रहता था। मेरे मामले में समय बहुत ही कीमती है और यदि मैं गुरुवार रात को ही हाउसटन नहीं पहुँचता, तो फिर वे मेरा इलाज ही नहीं करेंगे।

गुरुवार को सुबह साढ़े छ बजे मैं अपने शानदार ऑफिस में बैठा था, शायद— नहीं, शायद नहीं मेरे डॉक्टर के अनुसार तो अंतिम बार ही। मुझे अपने ऑफिस से बहुत प्यार था। केवल इसलिए नहीं कि, यह मेरा एक शानदार ऑफिस था परन्तु, उससे जुड़ी हुई बहुत सी विशेष यादों के कारण। देखने में तो यह बहुत पुराना था और इसमें भूरे, ऑरेंज, रस्ट व क्रीम रंगों का इस्तेमाल किया गया था। इसमें रखे एक-एक साजो सामान मेरी, नजदीकी व दूर पूर्व की यात्राओं के, शानदान यादगार थे।

मेरा ऑफिस मेरे लिए ऐसा था जैसे कोई चीज धूल से उठाकर बनाई गई हो। मेरे भाई हेनेरी और मैंने यह व्यवसाय अपनी कल्पना शक्ति से ही शुरू किया था। आज के दिन, पूरे विश्व में 8000 से भी ज्यादा हमारे कार्यालय थे जहाँ हम लोगो का आयकर फार्म भरकर जमा कराते थे। मैंने उन सब लोगों के बारे में सोचा जिन्होंने हमारी इस लम्बे सफर में मदद की थी और हम आज बहुत ही सफल व्यक्ति थे। मैंने उन सबके बारे में भी सोचा जिनकी हमने मदद की थी। ये ही सब मायने थे, इस ऑफिस के लिए मेरे लिए, जिसको मैं आज शाम छोड़कर, शायद हमेशा के लिए, हाउसटन जाने वाला था।

मैं ऑफिस आया तो था अपनी फाइलों को व्यवस्थित करने के लिए, परन्तु मैं यहाँ आकर अपने विचारों में डूबा, एक टक बैठा ही रहा। मेरी पिछली पूरी शानदार जिंदगी की घटनाएँ, जैसे मेरी आँखों के सामने आकर, एक-एक कर धटित हो रही थी। मुझे किसी भी बात का खेद नहीं था। मैं मरने से भी नहीं डरता था। परन्तु उस वक्त, जबकी मैं अपने जिंदगी के सबसे शानदार दौर से गुजर रहा था, उस वक्त इन सबको छोड़कर जाने के विचार से ही, मुझे इन सबसे नफरत सी हो रही थी।

मैंने अपनी मेज की दराज खोली, खोलकर उस क्रिसमस कार्ड को निकाला जिसे, 1976 में मेरी बेटी बारबरा ने मुझे भेजा था। इसमें लिखी कुछ लाइने इस प्रकार थी— — “और तब मैंने आपकी, एक छोटे से बूढ़े छोटे से मासूम बच्चे को, जिसकी आँखें शरारत पूर्ण चमक से चमक रही थी, नाव खेते हुए किनारे की ओर आते हुए देखा तो, मैंने आपकी फोटो खींच ली थी। आप जो भी करते हैं उसमें पूरा आनंद लेते हैं। और मैंने कहा था कि हे भगवान! तेरा लाख-लाख शुक्र है कि उसने आपको इतना शानदार दिल दिया है।

और फिर, मैंने आपके उस दृढ़ निश्चय के बारे में सोचा जिसके साथ आप अपना प्रत्येक काम करते हैं। मुझे आपके आत्मबल व आत्मशक्ति की प्रशंसा करनी पड़ेगी।

और मैं शुक्रिया अदा करना चाहूँगी, परमात्मा का, जिसने आपको इतनी शक्ति प्रदान की है कि, आपका कद इतना उँचा है और आप अपने किसी भी निश्चय पर अडिग खड़े रह सकते हैं, फिर मैंने सोचा कि, आपने मुझे सिखाया था कि, किसी को कुछ देना कितना महत्वपूर्ण होता है, ना केवल शब्दों से बल्कि स्वयं एक उदाहरण बनकर। मैं कितना गर्व महसूस करती हूँ, यह सोचकर कि आपने मुझे मकान—“ब्रेक-थ्रू” उपहार में दिया। ना केवल इसलिए कि, मुझे उस वक्त उसकी सख्त जरूरत थी बल्कि, इसलिए भी कि यह उपहार, मैं जो कुछ भी कर रही थी या उस वक्त तक किया था, आपके द्वारा उन सबकी एक प्रशंसात्मक पहचान व पुरस्कार था। आपका यह कार्य, मेरे लिए जितना आप जानते हैं या सोचते हैं उससे कहीं ज्यादा मायने रखता है। मैं ईश्वर से आपकी इस दरिया दिली के लिए एक बार फिर शुक्रिया अदा करती हूँ।”

यह कार्ड पढ़ने के बाद, मैं जानता था कि, मेरे पास सिवाय यह कार्य सफलता पूर्वक पूरा करने के, (अपने कैंसर को हराकर उस पर विजय प्राप्त करना), और कोई रास्ता ही नहीं था। मैं मैदान छोड़कर हथियार डालने वालो में से भी नहीं था। मैं ऐनेटी के साथ मिलकर अपने इस कैंसर से तब तक जंग करता रहूँगा जब तक कि इसे पूर्णतया हरा ना दूँ। यदि हाउसटन मेरे इलाज का सही स्थान नहीं होता तो, हम कोई दूसरा विकल्प ढूँढेंगे और तब तक ढूँढते रहेंगे जब तक सही विकल्प नहीं मिलता। मुझे मेरे परिवार की, और मेरे परिवार को भी मेरी उतनी आवश्यकता थी।

उस शाम हमने एन्डरसन—मे फेयर होटल में एक कमरा ले लिया। मेरे साथ मेरी सारी एक्स—रे रिपोर्टें, स्लाईडें और सारी जॉच रिपोर्टें थी। हम यहाँ एक अनिश्चित समय के लिए आए थे। यह विचार भी, कि हमें यह भी नहीं मालूम था कि मैं यहाँ से एक दिन बाद लौटूँगा, एक सप्ताह के बाद, एक महीने के बाद और शायद कभी नहीं, बड़ा कष्टदायक व वेदनापूर्ण था। ये झण वास्तव में असहनीय थे।

अगले दिन हम अस्पताल में गए जहाँ पर मेरा नाम बाह्य रोगी के रूप में दर्ज किया गया। परन्तु, पता नहीं क्यों, जब हमने एम डी एन्डरसन कैंसर अस्पताल का बोर्ड देखा हमें अच्छा व दिल को बड़ी राहत महसूस हुई। शुरुआती जानकारी के दौर में, हमें एक फिल्म दिखाई गई, जिसमें यह दिखाया गया था कि, हम इस अस्पताल से कितनी कुछ अपेक्षाएँ कर सकते हैं। जब हमें यह पता चला कि इसमें प्रतिदिन लगभग 1200 उन कैंसर मरीजों का इलाज होता है जो, किसी ना किसी तरह के कैंसर से पीड़ित थे तो, हमें विश्वास हो गया कि, हम सही स्थान पर सुरक्षित हाथों में हैं।

इसमें कार्यरत सभी स्टॉफ पैनल का आत्मविश्वास, उनका सौहार्दपूर्ण व खुशनुमा व्यवहार ने हमारे दिलों से कैंसर शब्द के डर को काफी हद तक खत्म सा कर दिया था। बाद में मुझे महसूस हुआ कि मेरे कैंसर इलाज का एक बहुत बड़ा भाग तो केवल मरीज प्रतीक्षा कक्ष में ही पूरा हो गया था जब, मैंने उन सब लोगों से बात की जो, पहले मेरी तरह कैंसर ग्रसित थे और अब उससे मुक्ति पा चुके हैं या वे जिनका अभी भी सफलता पूर्वक इलाज चल रहा है।

प्रारम्भिक जान—पहचान के बाद हम अपने डॉक्टर से मिले। वे चिकित्सा के प्रोफेसर और इम्यूनार्इजेशन विभाग के अध्यक्ष थे। उन्होंने हमें बताया कि, शुक्रवार को मेरी विभिन्न प्रकार की जॉच की जाएगी। शनिवार व रविवार को अस्तताल बंद रहेगा, इस दौरान मेरे जॉच नमूनों का परीक्षण किया जाएगा। और सोमवार को सुबह वे मुझसे फिर मिलेंगे।

शुक्रवार का पूरा दिन, मेरे लिए शायद सबसे ज्यादा थकाने वाला दिन था। सारे दिन विभिन्न जॉच प्रक्रियाएँ — ब्रेन स्केन, लीवर स्केन, टोमोग्राम और अत्यंत कष्टदायक बोनमैरो टेस्ट इत्यादि। उस वक्त मैं उनको, वे जो भी चाहे— जैसे भी जॉच करना चाहे, करने देना चाहता

था। मैं जानता था कि, उनके द्वारा कि जाने वाली हर जॉच से मेरे को, केन्सास में की गई, भयानक भविष्यवाणी से बचने का कोई अवसर दे सकती थी।

जॉच प्रक्रिया शाम पाँच बजे पूरी हो गई अब हमारे पास सप्ताहंत का अवसर था। परन्तु जब मृत्यु आपका दरवाजा खटखटा रही हो तो, उस सप्ताहंत में हम क्या कर सकते थे? कहाँ जा सकते थे। हमारी इच्छा, इस हताशा या बेबसी की दशा में अपने किसी मित्र या परिजन का सामना करने की भी नहीं थी। इससे केवल सहानुभूति व दया की भावनाएँ ही जन्म लेनी वाली थी। सिवाय इसके कि दोनो पक्षों को कष्ट ही पहुँचता, इसमें और तो कोई लाभ होने वाला नहीं था। इसलिए हमने, फोर्ट लाउडर डेले फ्लोरिडा के एक छोटे से घर में ही जाने का निश्चय किया। यह भी बड़ा ही अजीबो गरीब छुट्टियाँ बिताने का मौका था। मैं और मेरी पत्नी अपने ही विचारों व अनकहे प्रश्नों के उधेड़बुनों में खोए हुए थे। हम दोनो काफी-काफी देर तक अकेले बैठे गुमसुम से बैठे सोचते ही रहते थे।

हमारे पूरे परिवार को, हमारी एक छोटी सी स्पीड बोट, “आफ्टर टेक्सेस” से बहुत प्यार था। शनिवार को सुबह हम एक स्टोर में गये। वहाँ से हमने थोड़ी सी शराब, थोड़ा पनीर और पिकनिक का भोजन पैक करवाया। हम अपनी नाव में सवार होकर निकल पड़े। ना कोई उद्देश्य था, ना कोई योजना बस वैसे ही इधर-उधर घूमकर कुछ सोचने और बातचीत करने का इरादा था। हमने उस सब यात्राओं के बारे में सोचा जो, हमने आज तक साथ-साथ की थी। ऐनेटी सोच रही थी कि, उसने मेरे साथ बिना शायद ही कोई काम किया हो। यदि मैं उसके साथ नहीं होता तो शायद वे यहाँ कभी आई ही नहीं होती। इससे पहले भी, जब हम जवान थे, यहाँ कई बार आ चुके थे। हमारा एक बहुत ही शानदार भरा पूरा परिवार था। इसमें तीन प्यारी बेटियाँ, दो दामाद, तीसरा भी शायद शीघ्र होने वाला था। और चार प्यारे-प्यारे नाती-नातिन। हमें अपने बच्चों के साथ घूमना बहुत प्रिय था। यदि इस वक्त मुझे कुछ हो गया तो, शायद सब कुछ थम सा जाएगा।

और हम यहाँ अपनी नाव में, मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे। थोड़ी देर बाद हम एक छोटे से टापू पर, जो शायद पचास फुट से ज्यादा लम्बा नहीं था, पहुँचे। इस टापू से किनारा कम से कम, एक सौ पचास फिट दूर था। यहाँ काफी पक्षी और सफेद रेत थी। नाव को किनारे लगाकर, नीचे उतरकर बैठने के बाद, हमने बातचीत का सिलसिला शुरू करने का प्रयास किया। हम अभी तक भी इस घटनाचक्र पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि, यह एक वास्तविकता है या सपना। हम बार-बार यह सोचते कि, क्या वास्तव में यह हमारे ही साथ हुआ है या, हमारे किसी जानकार के साथ तो नहीं हुआ था? लेकिन, हमने वहाँ उस वक्त इतना तो दृढ़ निश्चय कर लिया कि, हम सब एक जुट होकर, मेरे कैँसर से लड़ेंगे, और इसे हराकर ही रहेंगे। हम सब आपस में कितना प्यार करते हैं, कितना चाहते हैं इस बारे में मैं हमने काफी बातचीत की। मुझे, ठीक होना ही था।

ऐनेटी ने मेरे मन के डर को शायद भाँप लिया था। मैं वास्तव में ही जिंदगी को बहुत प्यार करता था। अपने बितारे, एक-एक पल का, भरपूर आनंद लिया था। मैंने हमेशा दूसरों की अच्छाईयाँ ही देखने की कोशिश की थी। ऐनेटी तो मुझसे अक्सर मजाक करती थी कि, मैं तो शायद सुई में भी कोई सुराख नहीं देख पाऊंगा। मैं अपनी जीवन यात्रा को रोकने को तैयार नहीं था। हमने एक दूसरे की आँखों में झॉककर देखा, और फिर से दृढ़ निश्चय किया कि मुझे अपने कैँसर को हराना ही पड़ेगा। हमें एक जुट होकर इससे निपटना ही पड़ेगा। ऐनेटी ने एक बच्चे की तरह एक लकड़ी की छड़ी उठाकर उससे रेत पर एक बड़ा सा पैनल बनाया। उसमें हम सब के नाम लिखे और फिर लिखा की, “हम फिर लौटेंगे”। उसके बाद हम वापिस नाव में आ गये और नाव को एक सुनसान जगह में जाकर रोक लिया जहाँ से हम किसी को भी नहीं देख सकते थे। हमने आपस में कुछ और बातें की। परन्तु ज्यादातर समय केवल खामोश बैठकर, एक-दूसरे की ओर बैठकर सोचते ही रहे थे।





## रोग मुक्ति की राह पर – प्रस्थान

3 अप्रैल 1978, सोमवार सुबह हम हाउसटन वापिस आए और अपने डॉक्टर से वापिस मिले। उन्होंने हमें बताया कि, उनके अस्पताल में उनके अलावा और भी कई डाक्टर हैं। उन्होंने सबके साथ मिलकर मेरी जॉच रिपोर्टों का अध्ययन करके, मेरे मामले पर बड़े विस्तार से गहन विचार विमर्श किया था।

उनके द्वारा कहे गए, एक-एक शब्द इस प्रकार थे, “डिक तुम एक बहुत ही बीमार लड़के हो और कुछ समय के लिए हम तुम्हें और भी ज्यादा बीमार बनाने वाले हैं। पर हम निश्चित तौर पर तुम्हें ठीक कर देंगे। हम तुम्हारा इलाज करेंगे और तुम सफलता पूर्वक अपने कैंसर से निपट सकोगे”।

सुनने में ये शब्द कुछ नाटकीय से लगते हैं। परन्तु मेरा सोचना है कि, ऐसी नाटकीयता भी हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंश है जिससे हर मानवीय जीव जुड़ा हुआ है। इससे हमारे मन में जीने और उसके लिए लड़ने की भावना दृढ़ इच्छा शक्ति का जन्म होता है। मैंने तभी, मन ही मन, यह फैसला कर लिया था कि यदि मैं किमोथैरेपी-रेडियोथैरेपी इत्यादि वाली दुर्गम राह पर चलकर, सफलता पूर्वक मैं अपने कैंसर को हराने में सफल हो जाता हूँ तो, अपना आगे का जीवन अपने जैसे ही मरीजों की सेवा करने में ही समर्पित कर दूंगा।

हम सबका आत्मविश्वास सचमुच ही जाग उठा था। पहली बार ऐसा हुआ था कि, किसी ने इतने सकारात्मक शब्दों का प्रयोग करके हमें पहली आशा की किरण दिखाई थी। यही हम सब चाहते भी थे। परन्तु, इस पर विश्वास करके कि उसको स्वीकार करना अभी भी काफी कठिन था।

डॉक्टर ने हमें बताया कि किस क्रम से मुझे एक के बाद एक चिकित्साएँ दी जाएंगी। शायद बिल्कुल ऐसा क्रम इससे पहले नहीं अपनाया गया है। मुझे पहले दो सप्ताह रेडिएशन थैरेपी दी जाएगी। उसके बाद एक सप्ताह किमोथैरेपी। फिर दो सप्ताह का आराम दिया जाएगा ताकि, मैं अपनी खोई हुई शक्ति को पुनः वापिस पा सकूँ। इसके बाद ऑपरेशन द्वारा मेरे शरीर के कैंसर ग्रसित भाग को निकाल दिया जाएगा और इसके तुरन्त बाद मुझे ईमुनाईजेशन थैरेपी दी जाएगी। इन सब प्रक्रियाओं से स्वस्थ होने के बाद मुझे एक साल तक लगातार किमोथैरेपी दी जाएगी।

इन सबके पीछे का तर्क संगत कारण भी मुझे समझाया गया। कैंसर की कोशिकाएँ बहुत ही सूक्ष्म होती हैं। दस लाख कैंसर कोशिकाओं का मिला हुआ आकार एक आलपिन के सिर जितना होता है। एक करोड़ कैंसर कोशिकाओं का संयुक्त आकार, एक सेटीमीटर के साइज वाले, छोटे मार्बल पत्थर जैसा होता है। कैंसर कोशिकाओं का नाश, स्वस्थ कोशिकाओं के मुकाबले ज्यादा आसानी से किया जा सकता है। मुझे जो रेडिएशन थैरेपी दी जाएगी वह प्रतिदिन मेरे शरीर की ठीक 72 प्रतिशत कैंसर कोशिकाओं का नाश करेगी। इसलिए इस प्रकार यदि, आज मेरे शरीर में एक अरब कैंसर कोशिकाएँ हैं तो पहले रेडियोथैरेपी के बाद केवल 28 करोड़ रह जाएंगी और दस दिन के बाद केवल दो लाख छियानवे हजार ही बचेगी।

दूसरी तरफ, किमोथैरेपी शरीर में बहुत विस्तृत रूप से फैले हुए कैंसर के विरुद्ध इतनी ज्यादा प्रभावशाली नहीं होती परन्तु, अलग-थलग पड़ी हुई कैंसर की प्रत्येक कैंसर कोशिकाओं का नाश करने में यह बहुत मारने प्रभावशाली होती है। इसलिए इस प्रकार दो सप्ताह के रेडिएशन के बाद, एक सप्ताह के बाद दी जाने वाली किमोथैरेपी, मेरे शरीर की बची-कुची अलग-थलग पड़ी हुई कैंसर कोशिकाओं का नाश, बड़ी ही सफलता पूर्वक कर पाएगी। कैंसर के साथ एक बड़ी समस्या यह भी है कि कैंसर की कोशिकाएँ बहुत ही सूक्ष्म होती हैं। इनकी मुख्य कैंसर के

फोड़े से अलग होकर अपने आप को शरीर के दूसरे भागों में ले जाने की बड़ी द्रवी प्रवृत्ति होती है। मस्तिष्क और जिगर दोनों में ही खून खींचने की प्रवृत्ति होती है। यही कारण है कि, कैंसर आमतौर से इन दो स्थानों पर ज्यादा फैलता है। सर्जरी से पहले किमोथैरेपी करना इसलिए आवश्यक थी कि, ताकि जबकी मैं, रेडियोथैरेपी और अपने फेफड़ों के ऑपरेशन के बाद स्वास्थ्य लाभ की प्रक्रिया के दौर से गुजर रहा हूँ, उस दौरान मेरा कैंसर दूसरी जगह पर ना फैल पाए।

यहाँ तक इम्यूनार्जेशन थैरेपी का सवाल है, यह उस विश्वास पर आधारित है कि हर मानव शरीर में अपना ही एक रोग प्रतिरक्षण तंत्र होता है, जो स्वयं ही कैंसर कोशिकाओं का नाश करता रहता है। शरीर में कुछ कमजोरी होने के कारण यह रोग प्रतिरक्षण तंत्र कमजोर होकर निष्क्रिय हो जाता है। और कैंसर की कोशिकाओं को बढ़ने देता है। क्योंकि मुझे कैंसर है, तो, निश्चित तौर पर, मेरे रोग प्रतिरक्षण तंत्र में कुछ ना कुछ खराबी या कमी आई ही होगी।

शोधो से यह भी पता चलता है कि, जिन आदमियों को क्षय रोग या तपेदिक होती है, उनको फेफड़ों का कैंसर बहुत कम होता है। इसी मान्यता को ध्यान में रखते हुए ऑपरेशन के बाद मुझे क्षय रोग की दवाईयां भी दी जाने वाली थी जिससे ऑपरेशन के बाद, मेरा रोग प्रतिरक्षण तंत्र और ज्यादा सक्रिय होकर, मेरे ठीक होने के दौरान फेफड़े के कैंसर को दुबारा पुर्नजीवित होने से रोके।

इसके बाद एक साल बाद दी जाने वाली किमोथैरेपी, भविष्य में मेरे कैंसर को कभी भी पुर्नजीवित होने की संभावनाओं को, पूर्णतया समाप्त करने के लिए दी जाएगी। हांलाकी इस बात की बहुत संभावनाए थी कि मैं पूर्णतया अपने कैंसर से मुक्त हो जाऊंगा फिर भी, यदि किसी भी हालत में, यह दुबारा पुर्नजीवित हो जाता तो, उस वक्त यह मेरे लिए बहुत खतरनाक होगा।



## रेडिएशन थैरेपी

मंगलवार को सुबह, मैं और मेरी पत्नी, अस्पताल के उस भाग की ओर चल पड़े, जहाँ छाती की रेडिएशन थैरेपी की जाती थी। रास्ते में हमें सिर और गर्दन की रेडिएशन थैरेपी विभाग से होकर गुजरना था। यहाँ पर कमरे की दोनो दिवारो के साथ, लाईन में साठ कुर्सियां लगी हुई थी और प्रत्येक कुर्सी भरी हुई थी। उन पर बैठे हुए सभी लोग एकदम गंजे, जिनका सिर मुंडा हुआ था और उनकी सिर और गर्दन के उपर लाल रंग की लाईनें लगाई हुई थी। ऐसा लगता था मानो हम किसी शैतान की दुनिया से गुजर रहे थे। यह एक दूसरी ही दुनिया थी और इसमें बैठे हुए व्यक्ति भी, किसी दूसरे ग्रह से आये थे। वे बिल्कुल ही अलग सभ्यता के लगते थे। मैंने उनकी तरफ देखा भी नहीं और ना ही देखना चाहता था। उनको देखने से ही मेरे शरीर में सिरहन सी होती थी।

किसी भी उस व्यक्ति के लिए जिसे, बिल्कुल भी अंदाजा नहीं हो कि आगे क्या होने वाला है, यह कोई बहुत आरामदायक दृश्य नहीं था। मेरे को एक छोटे से सभा कक्ष में ले जाया गया जहाँ श्रोताओं के रूप में लगभग पच्चीस डॉक्टर बैठे हुए थे। मैं एक मंच पर, अपने रेडियोलोजिस्ट के साथ बैठ गया। मेरी एक्स-रे रिपोर्ट सब को दिखाई जा रही थी। और मेरे मामले पर बहस चल रही थी। उनके द्वारा प्रयोग में लाने वाले शब्द इतने तकनीकी थे कि, मुझे पूछें जाने वाले प्रश्न और उनके उत्तरों के बारे में कोई भी नहीं हो पा रहा था। फिर भी, मैं इतना तो समझ रहा था कि, वे सब मिलकर मेरे लिए सर्वोत्तम चिकित्सा निर्धारित करने के लिए उपर्युक्त आधार बनाने की कोशिश कर रहे हैं। यह सब देख और सोचकर मुझे बड़ा अच्छा लग रहा था।

मुझे एक्स-रे मशीन जैसी, कोई विशाल सी मशीन दिखाई गई। मुझे एक मेज पर लेटने को कहा गया। मुझे बताया गया कि, यह मशीन केवल एक मॉडल था। इसके अंदर कोई भी काम करता हुआ तंत्र नहीं लगा था। इसका उपयोग मेरे आगे की चिकित्सा के लिए आधार बनाना होता था। इसका कारण था असली मशीन बहुत ही महंगी थी और उसका समय बर्बाद ना हो। डॉक्टर ने, एक मार्कर पैन लिया और कुछ नापने के बाद मेरी छाती पर एक बिन्दु बना दिया। उसके बाद और एक बिन्दु फिर एक और बिन्दु ऐसे करके उन्होंने काफी सारे बिन्दु लगाए। फिर उन्होंने सारे बिन्दुओं को जोड़ दिया। वे क्या कर रहे थे? उनके पास कोई चाकू भी नहीं था, केवल एक मार्कर पैन था। मैं उलटा लेट गया और उसने बिल्कुल वैसा ही मेरी कमर पर भी वैसा ही किया। वे एक स्केल का इस्तेमाल करके बड़ी बारीकी से नाप रहे थे। फिर उन्होंने मेरी छाती पर ब्लॉक जैसी कोई चीज रखी। वे सही साईज का ब्लॉक ढूढके, मेरी छाती पर रखके उसके चारो ओर मार्कर पैन से निशान लगा रहे थे। इसका कारण यह था कि, मुझे दी जाने वाली हर चिकित्सा, केवल इसी विशेष स्थान पर केन्द्रित रहे।

जब रेडियोलोजिस्ट ने, मेरे शरीर पर चिन्ह लगाने का कार्य पूरा किया, तो मुझे ऐसा लगता था जैसे, किसी गौमांस के चित्र के साईड में, उसके विभिन्न अंगों के नाम लिखे गये हों। उसको मेरा नाप लेने में लगभग एक घंटा लगा होगा। ये सारी गणनाएँ एक कम्प्यूटर द्वारा कि जा रही थी।

मुझे काफी दुःख हो रहा था क्योंकि, मुझे पहले से यह नहीं बताया गया था कि, अब मैं दो सप्ताह तक स्नान नहीं कर सकूंगा। ताकि मेरे शरीर पर लगी, ये लाल लाईनें, मिट ना जाए।

सारी गणनाएँ की गई और कम्प्यूटर में मेरा चिकित्सा प्रोग्राम डाल दिया गया। बड़ी घबराहट के साथ मैं एक दूसरे कमरे में गया जहाँ पर वास्तविक काम करने वाली मशीन रखी हुई थी। मशीन देखने में ही बड़ी अजीबोगरीब सी लग रही थी। इस कम्प्यूटर द्वारा नियंत्रित मशीन का संचालन एक ऑपरेटर के द्वारा किया जाता था, जो कमरे से बाहर बैठकर अंदर देखता रहता

था। नर्स को मुझे सही स्थिति में लिटाने में और मेरी छाती के उपर और कमर के नीचे लैड के कवर रखने में, लगभग दो मिनट का समय लगा होगा। यह लैड के कवर, मेरे दूसरे संवेदनशील अंगों को, रेडिएशन किरणों के दुष्प्रभाव से बचाने के लिए लगाए गए थे। चिकित्सा का दौर एक तरफ (छाती या कमर) ही केवल चालीस सैकण्ड से भी कम था। रेडिएशन मेरी, छाती और कमर, दोनों तरफ से दिया गया। मुझे बिल्कुल भी कुछ पता नहीं चला। लगता था जैसे केवल मेरी फोटो खींची गई थी। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैं तो बहुत कुछ और ज्यादा की सोच रहा था।

डॉक्टर ने मुझे सावधान किया कि, इस चिकित्सा का शुरू में तो कोई प्रभाव नहीं दिखेगा लेकिन, अंतिम चिकित्सा दौर के, चौदह दिन के बाद, मेरे गले में इतनी सूजन आ जाएगी, जितनी शायद पहले कभी ना आई हो। रोज सुबह आठ बजे, मैं चिकित्सा के लिए इस विभाग में आता और इस सारी कार्यवाही में केवल पाँच मिनट का समय लगता था। मेरे लिए पूरा दिन बिल्कुल खाली रहता था। इस समय के दौरान, मेरी पत्नी और मैंने कैंसर से संबंधित बहुत कुछ जानकारी हासिल की और उसे पढ़ा। हाउसटन के अखबार में, इस अस्पताल के बारे में भी एक लेख छपा था। यह अस्पताल, एक पति-पत्नी के द्वारा चलाया जा रहा था, जिसका नाम सिमोनटन था। पति रेडियोलोजिस्ट थे और पत्नी मनोचिकित्सक (साईक्लोजिस्ट) थी। उन दोनों ने मिलकर इस अस्पताल का निर्माण इस मान्यता के साथ किया था कि मस्तिष्क द्वारा शरीर के रोग प्रतिरक्षण क्षमता शक्ति को और ज्यादा सक्रिय करके, इससे कैंसर के इलाज में सहायता ली जा सकती है। डॉक्टर होने के नाते, डॉक्टरी चिकित्सा में ही, उनका पहला और सबसे ज्यादा विश्वास था। फिर भी उन्होंने कई बहुत ही मजबूत सकारात्मक सोच के बढ़ाने के तरीके ढूँढे जिनको, बहुत ही विस्मयकारी नतीजे आए।

जहाँ तक मुझे याद है, उनके इस इलाज पद्धति पर आधारित, एक शोध के आंकड़ों के अनुसार, अंतिम स्तर के उन मरीजों का, जिनके इलाज के लिए कोई भी ज्ञात डॉक्टरी चिकित्सा सुविधा संभव नहीं थी, केवल दो साल के बाद, उनमें से लगभग दस प्रतिशत लोग से पूरी तरह से ठीक हो गए थे। दूसरे दस प्रतिशत लोगों की हालत में काफी सुधार आया था और तीसरे दस प्रतिशत के लोगों का कैंसर, अपनी यथा स्थिति पर ही, स्थिर हो गया था। हम सब के लिए, यह, वास्तव में ही एक सुखद रहस्योद्घाटन ही था। हमने फैसला किया कि, यदि एम0 डी0 एन्डरसन अस्पताल ने मेरा इलाज करने में असमर्थता जताई तो हम सिमोनटन क्लिनिक में जाएंगे और तब मैं स्वयं ही अपने ही ढंग से, जैसा भी मुझे समझ में आएगा, उनके द्वारा सुझाए हुए सकारात्मक सोच व ईमेजिंग प्रक्रियाओं को अपनाऊंगा।

मेरे लिए इसका मतलब था कि, मैं अपने दिमाग में कैंसर का चित्रांकन करूँ। मैंने अपनी सोच के अनुसार, कैंसर का एक बहुत ही बदसूरत काले रंग के गोले का चित्र बनाया जो, एक तारकोल जैसे रंग के, काले गोले के रूप में था और मेरे कंधे में स्थित था। यह गोला लगातार बहुत तेजी से गरजते हुए, बापैनल के समान हरकत कर रहा था। मैंने अपने मस्तिष्क में ही चित्र बनाकर सोचा, जैसे मैं इस गोले को घूँसे मार-मारकर, इसके टूकड़े-टूकड़े करके, बाहर फेंक रहा था। मैंने यह चित्र बनाया जैसे की मुझे दी जाने वाली चिकित्साएँ और उनकी दवाईयाँ, इस बड़े से दिखने वाले गोले को अपने अंदर घोल रही थी। मैं काफी देर तक अपने मस्तिष्क के इसी चित्र और उसमें घटित घटनाचक्र में ही, अपना ध्यान केन्द्रित किये रहा। शायद मुझे बताए गए इस तथ्य ने कि, मुझे दी जाने वाली रेडिएशन चिकित्सा मेरे अन्दर के 72 प्रतिशत कैंसर कोशिका का प्रतिदिन नाश करेगी, मुझे इस ऐकाग्रचित्तता बनाने में बहुत मदद कर रही थी।



## किमोथैरेपी

मेरी दो सप्ताह की रेडियोथैरेपी चिकित्सा के दौरान, ऐनेटी ने मेरी बाद में होने वाली किमोथैरेपी चिकित्सा के बारे में, काफी कुछ पढ़कर जानकारी हासिल कर ली थी। जैसे कि यदि किमोथैरेपी की किसी बहुत तेज दवा के प्रभाव से, मेरा सामना ज्यादा जी मितलाने की समस्या से हो जाए तो, उसने पढ़ा था कि, गांजे के प्रयोग से इस समस्या से काफी हद तक राहत मिल जाती है और इसी कारण से कई राज्यों में तो, इसे कानूनी तौर से वैध भी घोषित कर दिया था। उसने डॉक्टर से इस विषय पर बात की। उन्होंने भी इसका अनुमोदन किया परन्तु, यह भी बताया कि, टेक्सास में फिलहाल इसको कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं थी। ऐनेटी ने तो मन में यह ठान लिया था कि, चाहे जैसे भी हो, मेरी इस किमोथैरेपी को, जितना भी संभव हो सके, कम से कम कष्टदायक बनाया जाए।

परन्तु मैं भी इस निर्णय पर अड़ा था कि, मैं गांजे युक्त सिगरेट नहीं पीऊंगा। दो साल पहले ही तो मैं अपनी धूम्रपान की लत को छोड़ने के लिए, इतना हैरान-परेशान हुआ था कि, अब फिर से कोई नई लत पालने को तैयार नहीं था।

मैं गांजे के बारे में कुछ भी नहीं जानता था और ना ही आज तक किसी भी रूप में इसका सेवन ही किया था। डॉक्टर ने कहा था कि, यदि तुम इसकी व्यवस्था कर सकते हो ठीक है। शायद इससे कुछ मदद मिल जाए। मेरी एक बेटी ने थोड़े से गांजे की व्यवस्था कर भी ली। हमने तय किया कि हमें गांजे की बनी हुई चटनी ट्राई करनी चाहिए। एक डॉक्टर ने कैलिफोर्निया में, एक दूसरे डॉक्टर मित्र को टेलीफोन करके, इसको बनाने का तरीका पूछा और हमें वह तरीका भी मिल गया। मेरी पहली किमोथैरेपी चिकित्सा से पहली रात को ऐनेटी और मेरी बेटी रात को एक बजे तक, इसको बनाने में लगी रही। वे यह सब कर तो रही थी पर, खुद भी नहीं जानती थी कि, वे क्या कर रही हैं और इसका फायदा होगा भी या नहीं?

उन्होंने उसके उपर ढेर सारी आईसक्रिम डालने की सोची ताकि, उसके स्वाद में गांजे का स्वाद दब जाए। ऐनेटी ने मुझे बाद में बताया था कि उसने सोचा था कि, सारी आईसक्रिम से, शायद मुझको इसके स्वाद का पता ही नहीं चलेगा। पर यह बहुत ही तेज थी और इसका स्वाद भी भयंकर था।

सवेरे सात बजे मैं किमोथैरेपी विभाग में गया। उस कमरे में आमने-सामने की दिवार के साथ-साथ छः-छः पंलग थे और हर पंलग के बीच लगभग पाँच फुट का फ़ैसला था। जरूरत पड़ने पर, दो पंलगों के बीच में पर्दा भी किया जा सकता था पर आमतौर पर ऐसा होता नहीं था। हर पंलग के पास रखे स्टैंड पर एक द्रव्य की बोटल लटक रही थी, जिससे रबर की नली द्वारा, उसका द्रव्य मरीज के शरीर में जा रहा था। वहाँ मरीजों के धीरे-धीरे करहाने, उबकाई की सी आवाजे और दवाईयों की तीखी बदबू, ऐसा आभास दिलाती थी कि, मानो हम सांपो के किसी बड़े से बिल में खड़े हो जब मैं इस कमरे में प्रवेश कर रहा था तो, यही सोच कर कि, मुझे इस कमरे और इस माहौल में, काफी समय तक रहना पड़ेगा, मेरे घुटने काँपने लगे थे और चिकित्सा शुरू होने से पहले ही, मेरे पेट में उबकाई सी उठने लगी थी।

एक सुंदर सी नर्स ने बड़ी धैर्यता पूर्वक समझाया कि अब मेरे साथ आगे क्या होना वाला था। उसने हमें लिखित तौर पर, उन चारो दवाईयो के बारे में पूरी सूचना विस्तार से दी, जो मुझे दी जाने वाली थी। इन दवाईयों में क्या-क्या था, कितनी मात्रा में और कब-कब दी जाने थी और कौनसी दवा का क्या संभावित प्रभाव या दुष्प्रभाव हो सकता था।

तकनीकी तौर पर किमोथैरेपी का अर्थ किसी भी रसायनिक दवाओ के प्रयोग से कि जाने वाली चिकित्सा है। यदि आप दो ऐस्पिरिन भी ले रहे हैं तो यह भी एक प्रकार से किमोथैरेपी ही है।

मुझे किमोथैरेपी सुबह 7 बजे से शाम 7 बजे तक और कभी 11 बजे तक दी जानी थी। परन्तु ज्यादातर समय अन्तःसिरा (इन्ट्रावेनसनली—Intravenously) के जरिए, मुझे केवल सादा पानी या सालिन—Saline ही दिया जाना था। किमोथैरेपी में दी जाने वाली दवाईयों के रसायन इतने तीव्र होते हैं कि उनको आपके नाड़ी तंत्र में, पतला करके बहाना बहुत आवश्यक होता है इसलिए इन दवाईयों को शरीर में देने से पहले और बाद में भी, काफी सारा पानी और द्रव्य, देना बहुत आवश्यक हो जाता है।

इन सब जानकारियों के पश्चात् अब इस डरावनी चिकित्सा शुरू करने का समय था। चिकित्सा शुरू होने से पहले ही मैंने अपनी पत्नी और बेटा द्वारा बड़ी मेहनत से तैयार की गई, उस आईसक्रीम युक्त गांजे की चटनी का लगभग एक चौथाई भाग खा लिया। पर जैसे ही मैंने जबरदस्ती उसको अपने हलक से नीचे उतारने की कोशिश की, मुझे तुरन्त ही बड़े जोर से उल्टी आ गई। गांजे का स्वाद इतना खराब था कि, मैं ईमानदारी से कह सकता हूँ कि यह स्वाद और इसका असर किमोथैरेपी के किसी भी परिणाम या दुष्प्रभाव से ज्यादा खराब था। महिनो तक भी यह स्वाद मुझे किसी भूत की तरह डराता रहा था। आज भी उसकी याद आते ही मेरे पेट में उबकाई सी आने लगती थी। यह था मेरा गांजे का पहला और अंतिम अनुभव।

मेरी किमोथैरेपी चिकित्सा शुरू कर दी गई। ऐनेटी और बेटा नैनसी, चिकित्सा के दौरान पूरे चार दिनों तक, मेरे पास ही बैठी रहती थी। उनका मुझे और बाकी मरीजों को लगातार बीमार व पीड़ीत होते हुए देखना वाकई बड़ा निराशाजनक व कष्टदायक अनुभव था। मैं अपने को इतना बेबस व असहाय महसूस करता था कि, अपना दर्द व परेशानी उनसे चाह कर भी, छिपा नहीं पाता था। किमोथैरेपी के बाद तो, रात को मैं इतनी कमजोरी महसूस करता था कि, उन दोनों को मुझे कार व होटल तक, पहुंचने में भी सहारा देना पड़ता था।

लेकिन इन सबका एक अच्छा पहलू भी था जिसने मेरे मस्तिष्क को वह सकारात्मक व अच्छी सोच की मनोदशा भी दी थी, जिसके बारे में, मैंने अब तक पढ़ा भी था। मेरी इस शारीरिक दशा ने, मेरे मन में एक सोच को जन्म दिया था कि, यदि मुझे दी जाने वाली चिकित्सा व उसकी दवाएँ, मेरे इतने बड़े व मजबूत शरीर का इतना बुरा हाल बना सकती हैं तो, इन्होंने मेरे शरीर की नन्ही—नन्ही सी और कमजोर कैंसर कोशिकाओं का क्या हाल बना दिया होगा। इस सोच ने ही, कैंसर के डर को मेरे मन से भगाने में काफी मदद की थी। दवाओं द्वारा होने वाले इन दुष्प्रभावों को, आप वैसा ही मान सकते हैं जैसा, ज्यादा शराब पी लेने के बाद आपकी हालत होती है। मुझे आज भी याद है कि, नये साल के अवसर पर जब मैंने बहुत ज्यादा शराब पी ली थी, तब भी मेरी कुछ ऐसी ही हालत हो गई थी। अन्तर केवल इतना ही तो था कि, वह थोड़े समय के लिए थी जबकि, इसने चार दिनों तक मुझे कमजोर व परेशान करके रखा था। चार दिन की किमोथैरेपी के बाद, जब मैं शुक्रवार की शाम को उस नरक से बाहर निकला तो वह समय मेरी जिन्दगी के बहुत ही शानदार व यादगार दिनों में से एक था। रात को ही हम हवाई—जहाज से कन्सास पहुँच गए। यह बात अलग थी कि, मुझे हवाई जहाज तक व्हील चैयर तक ले जाना पड़ा था।

आगे मेरे भाग्य में क्या—क्या लिखा है इसका मुझे तनिक भी आभास नहीं था। हालांकि, किमोथैरेपी के बाद मेरी भूख बिल्कूल ही बंद हो गई थी किन्तु, फिलहाल तो मैं केवल यही सोच रहा था कि, कम से कम अगले तीन सप्ताह तक तो, मेरी किमोथैरेपी या कोई अन्य चिकित्सा नहीं होने वाली थी और मेरे पास आराम और केवल आराम का ही समय था। इस तीन सप्ताह के दौरान, मेरे को स्वास्थ्य और ताकत हासिल करनी थी ताकि, मैं होने वाले ऑपरेशन का सामना कर सकूँ।

एक तो मैं पहले से ही कमजोर था और अगले कुछ दिनों में और भी ज्यादा कमजोर हो गया। किमोथैरेपी ने मेरी भूख, स्वाद व सूँघने की शक्ति की पूरी तरह समाप्त कर दिया था। मेरे

सबसे ज्यादा पसंदीदा भोजन भी मुझे अच्छे नहीं लगते थे। बेट्टी, हमारा भोजन बनाने वाली, जब भी रसोई में कुछ पकाती थी तभी, हांलाकि मैं अपने मकान के दूसरे कोने में स्थित अपने कमरे में होता था, फिर भी मैं उसके पकाने की गंध को भी नहीं सह पाता था। यहाँ तक कि, मेरे कमरे में सूखे फूलों का एक गुलदस्ता था और मैं उसकी गंध तक भी सहन नहीं कर पाता था। मैं अक्सर बेट्टी को टोकता था कि, उसने कॉफी जला क्यों दी है। मैं कॉफी का केवल एक ही घूंट पी पाता था और लगता था कि, इससे ज्यादा खराब स्वाद की कोई दूसरी हो ही नहीं सकती। मुझे कभी लगता था कि, मैं हर चीज में जरूरत से ज्यादा ही नुकर-चुकर करने वाला और बेहद चिड़चिड़ा हो गया था जो हर चीज में कुछ ना कुछ कमी ही निकालता रहता था। उस समय मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि, खराबी मुझे दी जाने वाली चीजों में नहीं बल्कि मेरे स्वाद शक्ति ही अनियंत्रित व खराब हो गई थी। मैं तो यही सोचता था कि, पकाने में ही कुछ कमी और फिजूल ही गुस्सा करने लगता था।

मेरा शरीर ठंडा रहता था। 75 डिग्री फारेनहाइट पर भी मुझे ठंड लगती थी। मैं ऐसी बंद कर देता था जबकी और घर के अन्य सभी लोग गर्मी से परेशान रहते थे। कभी तो मुझे ऐसा लगता था कि, मेरे शरीर में रक्त संचार हो भी रहा था कि नहीं। पता नहीं, बड़ा ही अजीबोगरीब सा लगता रहता था।

यह बड़ा अविश्वसनीय सा लगता है कि मेरे साथ लगभग बिल्कुल वैसा ही हो रहा था मेरे डॉक्टरों ने चिकित्सा शुरू करने से पहले, मुझे सावधान किया था। अब भी आपको लगता है कि वे केवल अनुमान ही लगा रहे थे— नहीं, बिल्कुल नहीं। उन्होंने मुझे बताया था कि घर जाने के बाद गले में सूजन आएगी और वह आई भी। उन्होंने कहा कि, शायद इससे पहले इतनी सूजन कभी भी नहीं आई हो और बिल्कुल ऐसा ही था। उस दौरान मैं गले से बिल्कुल भी नहीं निगल पा रहा था। बेट्टी दो दिनों तक मुझे एक छोटे बच्चे की तरह खिलाती रही थी। वह उबले हुए अंडे की तरह कोई नरम सी चीज बनाती ओर आधा-आधा चम्मच मुझे खिलाती थी। मैं जैसे ही उसको निगलता था, वह जोर से ताली बजाकर कहती थी, “अरे वाह! शाबास”।

शुरू-शुरू में तो पहले पानी भी नहीं गटक पाता था। कभी-कभी तो ऐनेटी को जबरदस्ती ही जैम जैसा खाना, मेरे हलक से नीचे उतरवाना पड़ता था। मैं जानता और समझता था कि, ऐनेटी चाहती थी कि, मैं कुछ ना कुछ अवश्य खाऊँ और मैं भी यह चाहता था। मैं जानता था कि खाना मेरे लिए बहुत ही जरूरी है। पर परेशानी यह थी कि मैं खा नहीं पा रहा था। मेरा वजन लगातार घट रहा था। उस वक्त भी यही सकारात्मक सोच मुझे खुशी और तसल्ली देती थी कि यदि रेडिएशन ने मेरे गले की स्वस्थ कोशिकाओं का यह हाल बना दिया है तो उन छोटी-छोटी कैंसर कोशिकाओं की तो दुर्गति बना दी होगी। धीरे-धीरे पर, निश्चित तोर से, मेरी जी मितलाने और दर्द की समस्या कम होती गई और मेरे शरीर में ताकत भी आने लगी। मैं किसी पहलवान की तरह तो ताकतवर नहीं बन पाया, पर फिर भी, पहले से काफी सुधार था। परन्तु इधर जैसे-जैसे ताकत आती गई और हालत में सुधार आता गया उधर, मेरे शरीर के बाल उड़ने लगे।

हांलाकी, इस बारे में मुझे पहले ही स्पष्ट तोर पर आगाह कर दिया गया था परन्तु, मैं बिल्कुल एक यति साधु की तरह से सफाचट गंजा ही हो जाऊंगा, ऐसा मैंने भी नहीं सोचा था। पहले तो कंधे में दो-चार बाल निकलने शुरू हुए। फिर सुबह उठकर तकिए पर काफी बाल मिलने लगे और फिर तो गुच्छे के गुच्छे ही निकलने लगे। एक सप्ताह में ही मेरे पूरे शरीर पर एक भी बाल नहीं बचा था यहाँ तक कि हाथ-पॉव-भौवे और सभी जगह। इसमें मुझे तो कोई खास परेशानी नहीं हो रही थी पर जो मुझे देखते और मिलते थे, उनको कुछ ज्यादा ही परेशानी ओर तकलीफ होती थी।

मेरी सबसे छोटी बेटी लिन्डा की शादी मेरे ऑपरेशन के पाँच सप्ताह के बाद होनी निश्चित हुई थी। वह तो, स्वेच्छा से ही इसको आगे टालना चाहती थी। पर मैंने ही जिद्द की थी कि, इस कार्यक्रम में कोई फेरबदल नहीं होगा। मेरी पत्नी ने मुझे कहा कि यदि मैं अपने लिए विग बनवा लूँ तो उस पर बड़ा अहसान होगा। क्योंकि, इससे मैं दिखने में ठीक लगूंगा। हांलाकि, मुझे इसकी कुछ ज्यादा कुछ चिन्ता नहीं थी परन्तु उसकी खुशी के लिए मैं इसके लिए तैयार हो गया। अगले पूरे साल तक मैं बिल्कुल गंजा रहा पर, केवल शादी जैसे उत्सवों पर ही इस विग का इस्तेमाल करता था।

डॉक्टरों ने मेरे ठीक होने की अवधि के बारे में जो भविष्यवाणी की थी, वह आश्चर्यजनक रूप से सच थी। मैं हर दिन पहले से ज्यादा स्वस्थ महसूस करता था। जब मैं हाउसटन गया, उस वक्त इतना उत्साहित था कि, मैं अपनी पत्नी और बेटियों के साथ शाम को शहर में घूमने निकल पड़ा। हमने हाउसटन का सबसे अच्छा रेस्टोरेंट देखा और वहाँ, मुझे याद नहीं कि, हम चारों ने कितनी शराब पी थी। मैं नहीं जानता कि, हम इस तरह से आगे कभी खा-पी कर आनंद ले पाएंगे कि नहीं? हम वापिस कमरे में गए और बड़े से पंलग पर सारे ही एक साथ लेट गए— बारबरा तीस साल, नैनसी सत्ताईस साल और हम दोनो। हम चारो छोटे-छोटे बच्चों की तरह काफी देर तक हंसी-मजाक करते रहे। इन सबके पीछे हमारे मन में होने वाले ऑपरेशन के डर और चिन्ता को भगाना था जिसमें हम पूरी तरह सफल भी रहे।





## ऑपरेशन के लिए

सोमवार को मैं अपनी विभिन्न और जॉचों के लिए अस्पताल गया। उनमें से एक जॉच एक भीमकाय विशाल मशीन के नीचे की गई। यहाँ एक-एक करके मेरे फ़ैफ़ड़े के विभिन्न भागों में श्वास लेने की क्षमता की जॉच की गई। इसका उद्देश्य शायद यह पता करना होगा कि वे मेरे फ़ैफ़ड़े का कितना भाग निकाल सकते थे, ताकि मैं जीवित भी रह सकूँ। मुझे बताया गया कि, पूरे अमेरिका में इस तरह की, केवल दो ही मशीनें थीं। इसके परिणामों पर मिनायोलिस से कम्प्यूटर द्वारा नियंत्रण किया जाता था। उस वक्त मेरे दिमाग में, उन सब लोगों का ध्यान आया जिनका ऑपरेशन बिना इस मशीन की जॉच के होता होगा।

रात को साढ़े दस बजे डॉक्टरों ने मेरा टोमोग्राम— (कम्प्यूटर द्वारा एक्स-रे जॉच जिससे शरीर के विभिन्न भागों की खड़ी जॉच की जाती है) किया। इस जॉच के दौरान मेरी गर्दन से पेट तक के भाग का, एक इंच के एक तिहाई हिस्से के हिसाब से एक्स-रे किया गया। ऑपरेशन करने से पहले, डॉक्टर मेरी छाती के बारे में, ज्यादा से ज्यादा जानकारी प्राप्त करना चाहते थे।

ऑपरेशन से एक दिन पहले, मेरे कमरे में अस्पताल का एक कर्मचारी कुछ सामान लेकर आया। उसने मेरे परिवार के सभी सदस्यों को बाहर जाने को कहा ताकि मुझे ऑपरेशन के लिए “तैयार” कर सके। मैं डर रहा था कि पता नहीं मेरे साथ, अब वह क्या करने वाला है। उसने केवल मेरे पेट, छाती और कमर के बाल रेजर से साफ कर दिए। यदि, शुरू में ही वह सादे-सादे शब्दों में यह सब बता देता, बजाय यह कहने कि “तैयार” करना है तो, मेरे मन में फिजूल की उठने वाली आशंकाएँ व डर पैदा ही नहीं होता।

एक और बड़ा ही बेकार सा अनुभव हुआ। जब मेने सहायक सर्जन से पूछा कि ऑपरेशन के बाद, मैं अपने दाहिने हाथ का कितना इस्तेमाल कर पाउंगा ? उसका उत्तर था कि वह नहीं जानता। मेरे ख्याल से उसको बस यही पर रूक जाना चाहिए था। पर उन्होंने अपने आप ही आगे बताया कि, मुझे होना चाहिए कि मेरा बहुत ही खतरनाक स्तर का ऑपरेशन होना वाला था और मेरे पास पाने को कुछ भी नहीं बल्कि, केवल सब कुछ खोने को ही था। मेरा यह ऑपरेशन शरीर के किसी क्षतिग्रस्त भाग की मरम्मत या उसको निकालने के लिए नहीं था बल्कि, शरीर के उन सभी भागों को ऑपरेशन द्वारा बाहर निकालना था जिनमें कैंसर मौजूद था और वह भी उस हद तक कि बस मैं मरने से बच जाऊँ। उसने कहा, “तुम जिस ऑपरेशन के लिए अन्दर जा रहे हो उससे अच्छी हालत में तो बाहर आने वाले नहीं हो। तुम जैसे हो उससे खराब हालत में बाहर आने वाले हो। हमें तुम्हारे शरीर से कैंसर को बाहर निकालना है, और वह हमें जहाँ भी दिखेगा निकाल देंगे। हमें नहीं पता यह कितना और कहीं-कहाँ हो सकता है। जरूरत पड़ेगी तो हम पूरा की पूरा कंधा भी निकाल सकते हैं और उस हालत में तुम बिना दाहिने हाथ के ही बाहर निकलोगे”।

मेरे ख्याल में तो उसे अपने उत्तर में इस्तेमाल किए हुए शब्दों को इतना कठोर व विकृत बनाने की जरा सी भी आवश्यकता नहीं थी। ये सब बातें तो ऑपरेशन से पहली रात को ही मेरे मन में आ चुकी थी। पता नहीं क्यों इतनी डराने वाली नकारात्मक शब्दों को प्रयोग किया उसने? मेरे ख्याल से तो डॉक्टर हमको शायद बुरी से बुरी स्थिति के लिए भी मानसिक तौर से तैयार करना चाहते थे, पर इससे क्या लाभ होने वाला था। यदि किसी कैंसर मरीज को यह सब, इस प्रकार से कहा जाएँगा तो फिर वह अपने भविष्य के बारे में उम्मीदों भरी सकारात्मक सोच कैसे बना सकता है।

मई 16, ऑपरेशन का दिन भी आ गया। जब मुझे, व्हील चैयर से ऑपरेशन थियेटर में ले जाया जा रहा था, तब उस वक्त दवाओं के असर से अर्द्ध-बेहोशी की दशा में, मुझे केवल अपनी पत्नी, बेटियों, दामाद, मेरे दोनो भाईयो, और भाभीयों के प्यार और गर्मजोशी से भरपूर सर्म्पण

ही याद था। वे सभी भी मेरे साथ ही, मेरे इस बोझ को सह रहे थे। मैं वास्तव में ही बहुत भाग्यशाली था।



## स्वस्थ होने की राह पर

मेरा पूरा परिवार, ऑपरेशन थियेटर के बाहर, प्रतीक्षा कक्ष में बैचेनी से इंतजार कर रहा था। मेरी पत्नी और बच्चे अपनी विचारों की उधेड़बुन में कभी बैठते तो कभी चहल-कदमी कर रहे थे। उनके सिर पर यह भी तलवार लटक रही थी कि वे मुझे दुबारा जिंदा भी देख पाएंगे कि नहीं। हाँलाकि, मेरी पत्नी की सोच इस मामले में काफी उम्मीदों भरी व सकारात्मक थी और वह बार-बार यही दोहराती रहती थी कि, “मुझे रोग मुक्त होना ही पड़ेगा”।

ऐनेटी ने बाद में कहा था कि, “मैं शायद अपनी पूरी जिंदगी में उन पलों को नहीं भूल सकती, जब ऑपरेशन थियेटर से हमारे लिए बुलावा आया था। ऑपरेशन समाप्त हो चुका था। सर्जन हमसे बात करना चाहते थे। उसी वक्त मेरा दिल जोर-जोर से धडकने लगा और मैं बहुत घबरा सी गई थी, मैं नहीं जानती थी कि डॉक्टर मुझसे क्या बात कहेंगे? या तो वो के कहने वाले थे कि, डिक का ऑपरेशन सफल रहा या फिर, सब कुछ समाप्त हो चुका है। हमको प्रतीक्षा कक्ष में जाना था। सब एकदम गुमसुम थे मैं लगातार प्रार्थना कर रही थी। मेरी हालत एक पिजरें में बंद जानवर की तरह थी। हम सर्जन का इंतजार कर रहे थे। हाँलाकि, यह इंतजार केवल दस मिनट का ही था परन्तु मुझे लगा, पता नहीं कितना लम्बा है। जैसे ही, उन्होंने कमरे में प्रवेश किया, मुझे लगा कि शायद मेरा दिल धडकना ही बंद हो जाएगा”।

“समय जैसे ठहर सा गया था, सभी को एक शब्द बोलने में डर सा लग रहा था। मैं उसके पास गई और गुमसुम सी खड़ी हो गई। अचानक ही उसने मुस्कराते हुए कहा, “तुम इतनी उदास क्यों दिख रही हो, सब कुछ ठीक हो गया”। मेरा सिर घूमने लगा। मैं विश्वास नहीं कर पा रही थी। वे बैठ गए और फिर हमको सब कुछ बताया”।

उन्होंने मेरे दाहिने फ़ैफड़े के उपरी भाग से दो पूरी और तीसरी का एक हिस्सा और मेरे दाहिने कंधे की कुछ कोशिकाओं को निकाल दिया था। डॉक्टर ने हमें बताया कि, कैंसर का फोड़ा इतना सिकुड़ चुका था कि वे उसका सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग भी निकालने में सफल रहे हैं। एक खास बात यह रही की, ऑपरेशन के बाद की गई बायोप्सी जाँच ने भी यह दिखाया कि, अब मेरे शरीर में एक भी कैंसर की जीवित कोशिका नहीं बची थी। सब खुशी से चिल्ला पड़े। रात को मेरी पत्नी सबको, खाने पर ले गई।

जब मैं सवेरे उठा, तो मैं सबके चेहरों पर मुस्कराहट देखकर तुरन्त ही जान गया था कि, सब कुछ ठीक हो गया था। डॉक्टर ने मुझे बताया कि, मेरे साईड में जो ट्यूबे पम्प से जुड़ी हुई हैं, वे केवल सफाई के लिए हैं। उसने और आगे बताया कि, मेरे कंधे से जो नसे निकाल दी गई हैं, इससे मुझे पसीना नहीं आएगा और अब मैं शायद टेनिस नहीं खेल पाऊँगा। उनके यह कहने पर मैंने सीधे उनकी आखों में आखें डालकर कहा, “अच्छा! मैं दूबारा टेनिस अवश्य खेलूँगा”। जो भी हो, कैंसर से छुटकारा प्राप्त करने के लिए, यह कोई भी कीमत नहीं थी।

मेरी ठीक होने की प्रक्रिया बहुत ही सामान्य रही। मुझे प्रतिदिन एक लम्बा और थका देने वाला फ़ैफड़ो का व्यायाम करना पड़ता था। दर्द मेरी स्वस्थ होने की प्रक्रिया में रुकावट बन सकता था अतः मुझे नियमित तौर पर दर्द निवारक गोलियां लेनी होती थी। कुछ दिनों के बाद मेरी साईड में लगी हुई नलियों के द्वारा, फ़ैफड़ो में सीधा दिया गया। बी सी जी इम्यूनाईजेशन थेरेपी में प्रयोग किए जाने वाली एक दवा होती है। इससे शरीर में तपेदिक से मिलती-जुलती बीमारी का जन्म होता है, जिसका बड़ी आसानी से इलाज हो सकता है। यह शरीर के रोग प्रतिरक्षण तंत्र को सक्रिय करता है जो फ़ैफड़ो के कैंसर को पुनर्जीवित होने से बचाती है। जैसा होना ही था, कुछ दिनों के बाद मुझे तेज बुखार हो गया— 105 डिग्री के आस-पास।

उन्होंने मुझे तीस दिन तक एक गोली रोज दी। और उसके बाद मैं टी बी से पूर्णतया मुक्त हो गया।

मैं तीन सप्ताह हॉस्पिटल में रहा। मेरी तीनो बेटियों, बारबरा, नैन्सी और लिन्डा, बारी-बारी से एनेटी के साथ रहती थी ताकि, उसे इस कठिन परीक्षा के दौर में कभी भी अकेला ना रहना पड़े। हम अस्पताल की जिस मंजिल पर थे वहाँ सभी प्राइवेट कमरे थे। प्रत्येक कमरे में मरीज के परिवार वालों के सोने के लिए, एक अलग से सोफा बैड भी था। इससे एन्डरसन का यह विश्वास और भी सिद्ध होता है कि, कैंसर जैसी बीमारी में मरीज के परिजन व मित्रों का, साथ कितना आवश्यक होता है।

एम डी एन्डरसन अस्पताल, यद्यपि एक 400 बिस्तरो वाला ही था फिर भी, उसमें छः स्थाई तौर पर धर्म गुरु/पादरी नियुक्त थे। हांलाकि मैं अपने आपको कोई बहुत ज्यादा धार्मिक व्यक्ति नहीं मानता फिर भी, उनमें से कोई धर्म गुरु, मुझे रोज मिलने आता था इससे मुझे बहुत ही अच्छा लगता था और मन को शान्ति मिलती थी।

हाउसटन का एक रिटायर्ड कर्मचारी, हाईमन सैचल, जिसको हम कैंन्सास शहर में मिले थे, वह भी मुझसे प्रतिदिन अस्पताल में मिलने आता था। उसका बड़ा गर्म जोशी व सौहार्दपूर्ण व्यवहार मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण था और उससे मुझे बड़ी ताकत मिलती थी। मेरे पास अपने शुभ-चिन्तकों और मित्रों के स्वास्थ्य लाभ संदेश, पत्र, फूलों के गुलदस्ते और टेलीफोन कॉले आने लगी। वे सभी मेरे लिए बहुमूल्य खजाने जैसे थी। मेरे बहुत से उन मित्रों के भी संदेश आये, जिनसे काफी समय से मेरा कोई सम्पर्क नहीं था। मैं बता नहीं सकता कि किसी भी कैंसर मरीज को यह जानकर कि, लोगो को उसकी कितनी परवाह है और वे उसके बारे में कितने चिन्तित है, कितनी खुशी और राहत का अहसास होता है।

शायद उन सब में सबसे ज्यादा मायने, मेरे लिए उन लोगो के होते थे जो कहते थे कि, वे मेरे लिए प्रार्थना कर रहे थे। मेरे एक मित्र ने, जो मुझे कन्सास में मिला था बताया कि वह रोज सुबह मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। मेरा यह मानना है कि, मेरी स्वयं की व बाकी इन सब लोगो की प्रार्थना से ही मैं ठीक हो पा रहा था।

ऑपरेशन के दो सप्ताह के बाद यह सोचकर कि, अब मैं अपने दायें हाथ का पूरा इस्तेमाल नहीं कर पाउंगा, मुझे थोडा दुख हो रहा था। मैं दांये हाथ से लिखने की तो छोड़ो, पेन्सिल भी नहीं पकड़ पा रहा था। उन्होंने मुझे एक फिजियोथैरेपिस्ट से मिलने को कहा। फिजियोथैरेपिस्ट ने, यह जानने के लिए कि मेरे दाहिने हाथ की नाड़ियों में किस सीमा तक नुकसान हुआ है, मेरी फिर से एक ईलेक्ट्रोनिक जाँच की। उन्होंने मेरे दाहिने हाथ पर विभिन्न स्थानों पर लाल रंग के आठ X क्रोस के चिन्ह लगा दिये। उन्होंने मुझे एक मशीन दी, जो उन लाल चिन्हों को छूने पर मेरे हाथ में, विद्युत की किरणे प्रवाहित करने वाली थी। यदि आपने कभी स्वयं को बिजली के झटके लगाए हो तो आपको भी अहसास होगा कि, इस प्रक्रिया में कैसा अनुभव होता है। मेरी पत्नी दिन में दो बार प्रत्येक X के चिन्ह पर पाँच सैकण्ड तक बिजली का झटका देती और फिर पाँच सैकण्ड का आराम देती। इस प्रकार एक बार में यह प्रक्रिया लगभग ढाई घंटे तक चलती थी। इस चिकित्सा के आखिरी दिन हमारा मन खुशी से प्रफुल्लित हो गया जब हमने देखा कि, झटका लगने से मेरी सम्बंधित अंगुली में, कम्पन शुरू हो गया था।

ऑपरेशन के तीन सप्ताह के बाद मैं अपने घर कन्सास में वापिस गया। मैं उस वक्त बेहद कमजोर, एकदम गंजा और देखने में ऐसा लगता था जैसे मैं एक दस साल का बच्चा हूँ जो किसी को भी अपनी संवेदनशील दाहिनी तरफ, हाथ लगाने से भी डरता था, पर जिन्दा था मैं। डॉक्टर ने मुझे कहा था कि वापिस मैं अपनी बेटि के साथ, पैदल चल कर जाउंगा और जैसा कि, हर बार पहले हुआ था, इस बार भी उनकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई थी।



## चिकित्सा दौर के उतार-चढ़ाव

भगवान का लाख-लाख शुक्र है कि, आखिरकार मैं घर आया और अपनी बेटी लिन्डा की शादी के बारे में सोचने की स्थिति में आ गया था। मैं बिल्कुल चील की तरह गंजा था। ना केवल मेरे सिर पर बल्कि, मेरे पूरे शरीर में, एक भी बाल नहीं था। मेरा वजन 145 पाउण्ड-65 किलोग्राम ही रह गया था। देखने में भी मैं बड़ा अजीब सा लगता था। मेरी पत्नी ऐनेटी चाहती थी कि, यदि मैं अपने लिए एक विग ले लू तो उसे अच्छा लगेगा और मेने कहा था कि, प्रिय, मैं तुम्हारे लिए कुछ भी करूंगा।

ऐनेटी की सोच थी कि, इस विग से मुझे अच्छा लगेगा। उसे लगता था कि, मैं देखने में बूढ़ा लगता हूँ, जबकि मैं वास्तव में, नहीं था। उसका सोचना था कि यदि मैं देखने में अच्छा लगूंगा तो मुझे अच्छा लगेगा। हमने 300 डॉलर मूल्य की विग मंगवाई और मुझे उसको पहना कर देखा। मैंने जिंदगी में कभी इतने बाल नहीं रखे थे। ऐनेटी ने मेरे साथ बैठकर, अपने सामने ही, जैसा वो चाहती थी, नाई से मेरे बाल सैट करवा दिए।

जब हम घर वापिस आए तो ऐनेटी ने कहा कि, मैं फिर उसे पहन कर ट्राई करूँ। उसे लगा कि, उस वक्त भी उस विग में ज्यादा घने बाल थे। वह वापिस गई और नाई से, बिल्कुल अपने हिसाब से, काट-छाट करवाई। नाई ने हमसे बीस डॉलर लिए। मेरे लिए इस वक्त, सबसे महत्वपूर्ण यह था कि, इससे ऐनेटी को बहुत खुशी मिली थी। शादी से एक सप्ताह पहले ऐनेटी ने मुझे फिर से उस विग की, पहनकर ट्राई लेने को कहा और जब मेने पहना तो उसे लगा कि, अभी भी उसके बाल ज्यादा कुछ घने थे। वह फिर उसी नाई के पास गई। उसे फिर बीस डॉलर दिए और अपने हिसाब से फिर कॉट-छॉट करवाई। उसके विचार से, अब मैं इसको शादी में पहन सकता था। यह वह विग थी जिसके बाल बढ़ते तो नहीं थे फिर भी, उसके तीन-तीन बार बाल कटवाए गए थे।

मैंने शादी के बाद दुबारा फिर कभी उस विग को नहीं पहना। जिसने भी मुझे शादी के बाद बिना विग के देखा, उन सबका यही कहना था कि, मैं बिना विग के ज्यादा अच्छा दिखता हूँ।

शादी के दौरान मैं लिन्डा के साथ-साथ गलियारे में चलकर आया और सबसे पहले मेने ही उसके साथ डांस किया। सब कुछ वैसा ही किया जैसा, हमने मेरी कैंसर चिकित्सा से पहले, तय किया था।

जून के अंत में मैं अपना चैकअप कराने के लिए हाउसटन अस्पताल में गया। मैं पहले से काफी ज्यादा ताकत महसूस कर रहा था। मैंने सोचा था कि, यह एक सामान्य जाँच प्रक्रिया होगी और मैं अगली रात को ही, वापिस आ जाऊंगा। लेकिन डॉक्टरों ने मुझे बताया कि, मेरे फैंफडो में पानी भर गया है और मुझे दुबारा अस्पताल में भर्ती कर लिया। उस वक्त, जबकि मुझे लग रहा था कि, सब चीजे इतनी अच्छी हो रही थी यह मेरे लिए एक हल्का सा झटका था पर बाद में मैंने महसूस किया कि, ऐसे उतार-चढ़ाव तो मेरे सामने आते ही रहेंगे।

वे दुबारा मेरी बगल में नली लगाना चाहते थे जिससे फैंफडो का पानी बाहर निकाला जा सके। यद्यपि, मैं वास्तव में ही, इस तरह के दर्द और असुविधा को झेलने में, मुझे कोई दुख: नहीं महसूस हो रहा था, फिर भी मैंने उनको कि दो-तीन दिन इंतजार कर लें। चार दिन तक अस्पताल के बिस्तर पर बिना कुछ भी किए मैं ऐसे ही लेटा रहा। 5 जुलाई को मेरा एक्स-रे किया गया। मेरे अंदर के पानी का जमाव अपने आप ही साफ हो चुका था और अब मैं घर जाने के लिए आजाद था।

एक तरफ तो मुझे इस बात की बेहद खुशी व तसल्ली थी कि, मैं सब इन ट्यूब लगाने के चक्करों से बच गया तो दूसरी तरफ इस बात पे गुस्सा भी था कि, उन्होंने चार दिन तक मेरे को बेकार ही अस्पताल में रोककर रखा। मेरी पत्नी भी काफी हैरान-परेशान हो रही थी। मैं देखने में अचानक बहुत बूढ़ा लगने लगा था जबकि, मुझे खुद को भी ऐसा कुछ भी नहीं लग रहा था। देखने में, ना केवल मैं बिल्कुल बाल रहित, दुबला-पतला सा और पीले रंग का दिखता था बल्कि, मेरी चाल भी बिल्कुल बूढ़े व्यक्तियों जैसी हो गई थी। मैं जो कुछ भी करता बहुत धीरे-धीरे करता था जैसे कोई बहुत बूढ़ा आदमी हरकत कर रहा हो।

मेरी पत्नी मुझे बार-बार कहती कि मैं सीधा खड़ा रहूँ और चलू तो अपने पाँव उठाकर चंलू। वह यह नहीं समझ पा रही थी कि अपनी दाहिनी बाँह की हरकत ना करने में, लगातार अपनी दाहिनी बगल को सुरक्षित रखने में, अपने पाँव धसीट कर चलने में और झुककर चलने में ज्यादा सुविधा महसूस होती थी। वह मुझे बार-बार समझाने की कोशिश करती थी कि, अभी में जवान था और मुझे एक नवयुवक की तरह से ही, सब काम करने चाहिए। कभी-कभी मैं उसके इस प्रकार बार-बार समझाने से उसको झिडक भी देता था। लेकिन आज भी बाद में मैं उसके प्रति बहुत आभारी महसूस करता था कि वह यह सब करके मेरा हौसला बढ़ाती रही। अतंतः वह, इस विषय में, एक डॉक्टर के पास सहायता के लिए गई। उस डॉक्टर ने मुझे जो भाषण दिया उसे मैं भूल नहीं सकता था। तभी और उसी वक्त से मैंने, बड़ी दृढ़ निश्चयता से, अपनी उम्र पर काबू पाने का, सीधे खड़े होने का, पैर उठाकर चलने का और मुस्कराते रहने का फैसला कर लिया।

इसके साथ ही मेरे साथ कुछ और भी नया हुआ। बचपन में मेरा वजन बहुत ज्यादा था, और मैं लगभग पूरी जवानी के दिनों में, नियंत्रित आहार पर ही रहा। पिछले तीस साल में मैं, अपना वजन 190 पाउण्ड से 165 लाने में सफल हुआ। आईसक्रीम और मिल्कशेक की यादे तो केवल बचपन की ही थी। रात का खाना तो मुझे याद नहीं मैंने कब खाया था। तीस साल से मेरे खाने में ना कभी मिठाई थी और ना किसी किस्म का नाश्ता। अब मेरा वजन अपने आप ही 145 पाउंड हो गया था। मेरे डॉक्टरों ने मुझे समझाया कि मेरा वजन कम होना कैंसर होने के कारण भी हो सकता था और यह सिद्ध करने के लिए कि अब मैं कैंसर मुक्त हो चुका हूँ, वे चाहते थे कि, मैं अपना वजन बढ़ाऊँ। आज से एक साल पहले यह केवल एक सपना जैसा था। परन्तु, मेरे सूजे हुए गले के कारण, मेरी गांजे की चटनी के कारण, मेरे ऑपरेशन और किमोथैरेपी के कारण, अधिक खाने की तो छोड़िए, सामान्य खाना भी मुझे अच्छा नहीं लगता था। मैंने मन ही मन यह निश्चय कर लिया कि, अच्छी खुराक लेने को भी, मैं अपनी चिकित्सा का एक अंग मानकर आगे से, अपनी खुराक पर विशेष ध्यान रखूंगा।

कुछ दिनों तक मैं दोपहर का खाना मक्खन के साथ, चासनी में डूबो के खाता रहा। जब मेरा वजन 155 पाउण्ड का हो गया तो मैंने डॉक्टर से पूछा कि, क्या अब मैं इसे बंद कर दूँ। डॉक्टर ने इसकी इजाजत नहीं दी और मुझे यह खाते रहने को कहा। 165 पाउण्ड वजन होने पर भी मैंने दुबारा डॉक्टर से पूछा और उन्होंने फिर भी मना कर दिया। आखिरकार जब मेरा वजन 170 पाउण्ड हो गया तभी उन्होंने मुझे सामान्य खुराक लेने की आज्ञा दी।

मुझे 165 पाउण्ड वजन पर वापिस आने के लिए एक साल तक, फिर से अपनी खुराक पर सख्त नियंत्रण करना पड़ा था। 155 पाउण्ड पर जाना तो काफी मुश्किल था, पर कम से कम 165 पाउण्ड वजन पर तो, स्थिर ही रहना चाहता था।

फिर, एक बड़ी समस्या सामने आई। मैं अब और किमोथैरेपी चिकित्सा नहीं करवाना चाहता था। मुझे यह बेहद असुविधाजनक, खराब और कमजोर करने वाली लगती थी। मुझे लगता था कि इन दवाईयों का भविष्य में मेरे दूसरे अंगों पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है। मेरा विचार था कि, मेरे ठीक होने में, ना केवल मेरी चिकित्सा का हाथ है बल्कि, सबसे बड़ा कारण यह था कि

ऑपरेशन के बाद मेरे शरीर से कैंसर की कोशिकाएँ पूर्णतया समाप्त हो ही चुकी थी फिर, अपने शरीर और स्वयं को, क्यों बेकार में कष्ट दिया जाए।

लेकिन मेरे डॉक्टर ने बड़ी दृढ़ता से कहा कि, मुझे मेरी किमोथैरेपी चिकित्सा लेनी ही थी। मेरी पत्नी भी जिद कर रही थी कि, जिन डॉक्टरों ने मेरी जिंदगी बचाई है, मेरे को उनकी बात माननी ही होगी।

मैंने जिन लोगों को किमोथैरेपी लेते हुए देखा था, उन सबसे बात की थी। मेरे स्वास्थ्य लाभ के दौरान, एक सहायक सर्जन, जो मेरे ऑपरेशन के दौरान मौजूद रहे थे, ने कहा था कि, ऑपरेशन के समय उसने खुद भी देखा था कि मेरे शरीर में एक भी कैंसर का निशान बाकी नहीं बचा था अतः मुझे फिर दुबारा से किमोथैरेपी की परेशानियां झेलने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है।

जब मैं घर पर था तो मेरी एक पुरानी मित्र मेरे घर आई। उसने भी पिछले साल ऑपरेशन करवाके अपना कैंसर ग्रस्त फेफड़ा बाहर निकलवाया था। और उसके सर्जन ने उसको बताया था कि अब वह, पूर्णतया स्वस्थ होकर, कैंसर मुक्त हो चुकी थी और अब उसे आगे किसी प्रकार की किमोथैरेपी लेने की आवश्यकता नहीं थी। ऐसे ही एक और मित्र भी मेरे पास आए थे जिसको भी, मेरी तरह फेफड़ों का कैंसर था। डॉक्टर ने ऑपरेशन करके, उनका भी फेफड़ा निकाल कर उनको भी पूर्णतया कैंसर मुक्त होने का सर्टिफिकेट देकर, यह सुझाव दिया कि, अब उनको आगे किमोथैरेपी लेने की आवश्यकता नहीं थी।

मैंने अपने ये सारे अनुभव अपने डॉक्टर को बताए और उनका दो टूक स्पष्ट उत्तर था, “डिंक तुमने किसी से कुछ नहीं पूछा है और ना कुछ सुना है। तुम्हें अपनी किमोथैरेपी की चिकित्सा लेनी है”।

मेरी पत्नी का भी इस बारे में यही सोचना था कि, कैंसर के बारे में किसी को भी, जो कुछ भी वह कर सकता है, पहली बार में ही कर लेना चाहिए। बाद में इतनी देरी हो सकती है कि, उसको पीछे मुड़के देखने का और यह कहने का भी अवसर नहीं मिल पाता है कि, “काश! मैंने यह किया होता”। जब मैं, सोचता हूँ कि, कैंसर की कोशिकाएँ बहुत ही छोटी होती हैं तो, यह बहुत हद तक संभव भी है कि, उनमें से कुछ को कोई भी “नंगी” आंखों से शायद नहीं देख पाए। इसलिए यदि कोई यह डॉक्टर कहता भी है कि, उसने सारी कैंसर की कोशिकाएँ निकाल दी हैं तो निश्चित तौर उसने वही तो निकाली होगी जो वह देख पाया होगा। लेकिन अगर कोई इक्की-दुक्की कैंसर की कोशिकाएँ फेफड़ों, लीवर, मस्तिष्क या शरीर के किसी अन्य भाग के कोने या दरार में रह गई हो तो, बहुत हद तक संभव है कि, वह ना भी देख पाए।

मेरी वह मित्र जो मुझसे मिली थी, उसके दूसरे फेफड़े में भी कैंसर पुर्नजीवित हो गया। स्वाभाविक ही है कि, उस वक्त उसका ऑपरेशन करना संभव नहीं था क्योंकि अब उसके शरीर में एक ही फेफड़ा शेष था। थोड़े समय के बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। मेरे दूसरे मित्र के साथ भी ऐसा ही हुआ। पिछले दो साल में इसके अतिरिक्त मेरे दो और पहचान वाले थे, जिनका ऑपरेशन के बाद कैंसर ग्रसित फेफड़ा निकाल दिया गया था। उनको भी ऑपरेशन करने वाले डॉक्टरों ने आश्वस्त किया था कि, उनके शरीर से कैंसर पूरी तरह निकाल दिया गया था। अब उन्हें और किमोथैरेपी लेने की आवश्यकता नहीं थी। उन दोनों की ही मृत्यु दूसरे फेफड़े में भी कैंसर पुर्नजीवित होने के कारण हो चुकी थी।

मैं कोई डॉक्टर नहीं हूँ, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि जिस किसी को भी कैंसर हो उसके लिए किमोथैरेपी लेना आवश्यक ही है। मैं तो यह कह रहा हूँ कि, यदि मेरे सर्जन मुझे कहते हैं कि, मुझे और किमोथैरेपी की आवश्यकता नहीं है तो मैं किसी कैंसर विशेषज्ञ से भी इस बारे में



आश्वासन चाहूँगा। बहुत से कैंसरों के मामलों में, उसको हराकर उसका नाश करने के लिए, केवल एक ही मौका मिलता है। और यदि पहले मौके में हम चूक गए तो, दूसरा मौका शायद मिलता ही नहीं है।

किमोथैरेपी लेने के लिए बार-बार हाउसटन कि यात्राओं से बचने के लिए, टेक्सास के डॉक्टर ने मेरे लिए, कैंसर कन्सास सिटी में ही मुझे किमोथैरेपी देने के लिए, एक नवयुवक कैंसर विशेषज्ञ की व्यवस्था कर दी। किसी भी पास के अस्पताल में, चिकित्सा करवाना ना केवल सुविधाजनक होता है बल्कि, स्थानीय डॉक्टर से आप कभी भी अपनी समस्याओं व शंकाओं के समाधान के लिए उनकी बहुमूल्य राय ले सकते हैं। मेरे चिकित्सा के दौरान, ये दोनो डॉक्टर लगातार, मेरे सम्पर्क में रहे।

मूल किमोथैरेपी चिकित्सा महीने में एक बार दी जाने होती थी और उसके बाद मुझे तीन सप्ताह स्वस्थ होने के लिए आराम दिया जाता था। मैं अक्सर मजाक में, इसको बड़ी ही दुष्ट योजना के नाम से बुलाता था जो, हर महीने मेरे को बीमार करने के लिए आ जाती थी। मुझे किमोथैरेपी के दौरान दी जाने वाली एक दवाई—5 F.U.I थी जो शायद बीस साल से भी ज्यादा पुरानी, किमोथैरेपी की सबसे ज्यादा पुरानी दवाइयों में से एक थी। यह दवा अन्य दवाओं के साथ, मेरे को अंतःशिरा—इन्ट्रावेनसली के द्वारा मेरी किमोथैरेपी चिकित्सा के दौरान दी जाती थी। मेरे को यह दवाओं का मिश्रण लेने के लिए डॉक्टर के ऑफिस में जाना पड़ता था। यह मेरी बांह की नस में दिया जाता था। ऑफिस जाते समय में इसको लेते हुए चला जाता था और मेरे को इसमें किसी भी किस्म की परेशानी नहीं होती थी।

इसके विपरीत एक दूसरी दवा, ऐडीरिया माईसिन (**Adriamycin**) जो लाल शैतान के नाम से जानी जाती थी, भी लेता था। इस दवा की खोज दस साल पहले ही हुई थी। उसके बाद दो साल तक इसका परीक्षण करने के बाद पिछले आठ साल से ही इसका उपयोग किया रहा था। यद्यपि बहुत कम लोगो ने इसके बारे में सुना था, मेरे डॉक्टर ने मुझे बताया कि, यह दवा प्रतिवर्ष **Salk Polio** साल्क पोलियो के टीके से भी ज्यादा, कैंसर पीड़ितों की जीवन रक्षक है। इसी दवा के दुष्प्रभाव से, आप बहुत ज्यादा बीमार हो जाते हैं और आपके बाल भी उड़ जाते हैं। यह वाकई बड़ा रूचिकर है कि मैंने चिकित्सा के बाद भी बाल ना उड़े, इसका भी तरीका खोज लिया गया था। इसके लिए जब आप यह दवा ऐडीरिया माईसिन ले रहे हो तब और उसके कुछ मिनट बाद तक आपको अपने सिर पर एक बर्फ की टोपी—आईस पैक रखनी होती है। फिर भी इसको इस्तेमाल करने से पहले, अपने डॉक्टर की सलाह अवश्य ले। यह तरीका हमेशा इतना कारगर भी नहीं सिद्ध होता है।

एक तीसरी दवाई सिसप्लेटिनम—**Cisplatinum** थी। यह स्पष्ट रूप से, प्लेटिनम धातू से बनाई जाती थी और बेहद मंहगी थी। कुछ ही चिकित्साओं के बाद, उस दवा बनाने वाली कम्पनी ने, इसको बनाना ही बंद कर दिया था। एक दूसरी कम्पनी ने इसको बनाना शुरू किया था। बाजार में यह एफ डी ए द्वारा अनुमोदन मिलने के बाद, कुछ महीने के बाद ही बाजार में आ पाई थी। कुछ महीनों के लिए बाजार में इसकी उपलब्धता ना होने पर मुझे बड़ा दुख हुआ था। मुझे लगता था कि, जब तक मैं इस असुविधाजनक चिकित्सा के दौर से गुजर रहा था, उस दौरान तो यह अवश्य ही मिलनी चाहिये थी।

मुझे दी जाने वाली चौथी दवा का नाम सिटोक्सिन—**Cytosin** था। अपने सकारात्मक सोच के सिद्धान्त के अनुसार, मैं हर महीने की जाने वाली, इस अग्नि परीक्षा का स्वागत ही करता था। मैं जानता था कि, ये दवाएँ यदि मेरे को इतना जबरदस्त बीमार कर देती हैं तो, मेरे शरीर में फैली हुई उन छोटी-छोटी कैंसर की कोशिकाओं का नाश, तो निश्चित तौर पर ही करती होगी।

फिर भी मैं यह कहूंगा कि, यह साल इतना बुरा नहीं रहा। जुलाई में पिछले सप्ताह, मैं और मेरी पत्नी एक सप्ताह की बिजनेस यात्रा के दौरान बरमूडा गए। मेरी नवम्बर में दी जाने चिकित्सा, एक सप्ताह पहले कर दी गई और दिसम्बर वाली एक सप्ताह के लिए टाल दी गई ताकि, मैं अकापुलको में एक महिना रह सकूँ।

कुछ कारणों से, दिसम्बर की चिकित्सा का मुझ पर बुरा प्रभाव रहा। मैं काफी कमजोर हो गया और बुखार भी आ गया था। हम क्रिसमस और नये साल के दरम्यान, अपनी तीनों बेटियों और दामाद के साथ कैरिबियन समुद्री यात्रा पर चले गए। जहाज पर मैं लगातार कमजोर होता गया। अपनी दूसरी बंदरगाह, कैमैन से, हमने हाउसटन में डॉक्टर से टेलीफोन पर बात की। उन्होंने मुझे सलाह दी मैं उन्हें तुरंत किसी अस्पताल में जाकर अपने रक्त की जाँच करवाऊँ और जाँच परिणामों के बारे में तुरन्त सूचित करूँ। उनको विश्वास नहीं हुआ कि, मेरी जाँच के परिणाम इतने खराब हो सकते थे। उन्होंने मुझे पुनः जाँच कराने के लिए कहा। हालाँकि, दुबारा जाँच के लिए रक्त के सैम्पल देने में, मुझे बड़ी चिढ़ सी हो रही थी परन्तु, मैंने अपनी जाँच करवाई। उसके परिणाम भी पहले जैसे थे। उन्होंने मुझे टेलीफोन पर बतलाया कि, जाँच परिणाम देखकर इस वक्त मेरा रक्त इस स्थिति में है कि, यदि मुझ पर कोई भी संक्रमण या जीवाणु हमला कर देंगे तो, मेरा शरीर उनका मुकाबला करने में सक्षम नहीं हो पाएगा और चौबीस घंटे के अंदर ही मेरी मृत्यु हो सकती थी।

हम आठो, अविश्वास से, केवल एक दूसरे की तरफ देखते रहे। डॉक्टर ने मुझे आदेश दिया कि, मैं वापिस जहाज में नहीं जाऊँ बल्कि तुरन्त हवाई जहाज से वापिस अमेरिका आऊँ, जहाँ मेरे इलाज के लिए सुविधाएँ मिल सकेंगी। उन्होंने, वहाँ के मुख्य डॉक्टर से बात करके, उनको सारी परिस्थिति से अवगत कराया।

हवाईजहाज की सारी बुकिंग बंद हो चुकी थी। डॉक्टर ने अपने प्रभाव का उपयोग करते हुए, इसकी व्यवस्था की कि, अगले हवाई जहाज से हममें से केवल दो व्यक्ति ही फ्लोरिडा जा सकें। बच्चे तुरन्त वापिस जहाज में जाकर हमारे कपड़े पैक करने लगे। सौभाग्य और संयोग से, उस वक्त मेरे कन्सास सिटी के कैंसर विशेषज्ञ चिकित्सक, फोर्ट लाउडर डेले में छुट्टिया मनाने आए हुए थे। वे मेरे पहुँचने पर तुरन्त ही मुझे देखने आ गए। मैं अस्पताल तो नहीं गया परन्तु, दो सप्ताह तक बिस्तर ही रहा, जहाँ हर दूसरे दिन, मेरे रक्त की जाँच के लिए नमूने लिए जाते थे। हर जाँच के बाद मैं हाउसटन, मैं अपने डॉक्टर को टेलीफोन करके, इन जाँच परिणामों के बारे में बताता था। दूसरे सप्ताह उन्होंने बताया कि, मेरी अंतिम जाँच शायद ठीक नहीं है और मुझे इसकी जाँच करवाने के लिए, अस्पताल में स्वयं, ही जाना पड़ेगा। मैं अस्पताल में गया और उन्होंने भी मेरे पुराने जाँच परिणामों को सही बताया। डॉक्टर ने मुझे तुरन्त हवाई जहाज से हाउसटन आने को कहा जहाँ मेरे शरीर में प्लेटलेट्स दिए जाने पड़ेंगे। उन्होंने मुझे सावधान किया कि, इस दौरान यदि मुझे कहीं से भी यदि रक्त स्राव शुरू हो जाएगा, तो वह रुक नहीं पाएगा। उन्होंने मुझसे पूछा कि, जब मैंने ब्रश किया तो क्या मेरे मसूड़ो से खून आया था, मेरा जबाब था नहीं। इस पर उन्होंने अगले दिन मुझे पुनः अपने रक्त की जाँच करवाने के लिए कहा। और वैसा ही हुआ जो वे सोच रहे थे। इस जाँच ने यह सिद्ध कर दिया था कि मेरी पहले कि जाँचे सही नहीं थी। हे भगवान! इस अजीबोगरीब बीमारी में भी, कैसे उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

जनवरी के अंत में हम अपनी त्रैमासिक सामान्य जाँच के लिए हम फ्लोरिडा से हाउसटन अस्पताल में गए। मैं बिल्कुल अच्छा महसूस कर रहा था और मुझे विश्वास था कि मेरी सारी जाँचों के परिणाम ठीक ही निकलने चाहिए। पहले दिन सारी जाँचे कि गई और दूसरे दिन घर वापिसी का जहाँज पकड़ने से पहले हम डॉक्टर से मिले। लेकिन डॉक्टर मेरी रिपोर्टे देखकर काफी परेशान दिखे और उन्होंने हमसे मिलने से पहले काफी देर इंतजार करवाया।

बाद में हमें डॉक्टर ने बताया कि मेरी एक एक्स-रे रिपोर्ट में मेरे कंधे के पास एक काफी बड़ा जमावड़ा सा दिखाई पड़ा था। उन्होंने आगे बताया कि इस रिपोर्ट को काफी दूसरे डॉक्टरों ने देखा है, लेकिन वे भी निश्चित तौर पर फैसला नहीं कर पाए कि, एक्स-रे में दिखने वाला निशान कोई नया फोड़ा है या केवल ऑपरेशन के दौरान किसी मॉसपेशी का निशान है। उन्होंने मुझे तुरन्त अस्पताल में भर्ती होने के लिए कहा जहाँ मेरी निडिल बायोप्सी जाँच होगी।

मेरी पत्नी और मैंने एक दूसरे की तरफ बड़े ही अविश्वास के साथ देखा। निश्चित ही ऐसा नहीं होना चाहिये था विशेषकर जबकि, सब कुछ इतना अच्छा चल रहा था। हम इससे पूर्णतया टूट से गए थे। मुझे सुझाई गई हर चिकित्सा बड़ी ईमानदारी से ली थी और हर प्रकार की सावधानी बरती थी। मैं खुद भी बहुत अच्छा व स्वस्थ महसूस कर रहा था। इतना होने पर भी हम यहाँ अस्पताल में ऑपरेशन का इंतजार कर रहे थे जबकि, कुछ ही घंटों के बाद हम अपने घर में, सुरक्षित होना चाहिये था। मैंने खुद भी, अपनी एक्स-रे रिपोर्ट में, इस जमावड़े को देखा था।

मैं लगभग रोने जैसा हो रहा था। मैंने अपनी पत्नी से कहा कि, मैं इस सारी प्रक्रियाओं से, एक बार फिर दुबारा नहीं गुजर पाउंगा। उसने अपनी ताकत को इकट्ठा करके कहा कि, करना पड़ भी सकता है और आवश्यकता पड़ेगी तो, हम करेगे भी। निडिल बायोप्सी ने उस जमावड़े में किसी किस्म का कैंसर नहीं बताया। परन्तु इसका मतलब यह बिल्कुल भी नहीं था कि वह कैंसर हो ही नहीं सकता। क्योंकि कुछ ऐसी कैंसर कोशिकाएँ भी हो सकती थी जो शायद इस टेस्ट की जाँच के लिए गये नमूने से बच गई हो।

अगले दिन हमको घर जाने की आज्ञा मिल गई लेकिन इस शर्त के साथ कि, मैं हर दो सप्ताह के बाद अपनी छाती का एक्स-रे करवाउंगा और यह देखता रहूँगा कि, इस में कोई बदलाव तो नहीं आ रहा है। इससे मुझे अंदाजा हुआ कि कैंसर कितनी तेजी से बढ़कर फैल सकता है। लेकिन मेरी एक्स-रे रिपोर्टों में किसी किस्म का बदलाव नहीं दिखाई दिया।

मार्च के अंतिम दिन, हम हाउसटन अस्पताल फिर अपने सामान्य जाँच के लिए गये। अगले दिन सुबह डॉक्टर ने बातचीत के दौरान बताया कि, मुझे अपनी किमोथैरेपी चिकित्सा शुरू किये अब एक साल पूरा हो चुका है। उन्होंने मेरा वजन देखा, उसके बाद कुछ गणना की और मुझे बताया कि, जितना भी रसायन मेरा शरीर सहन कर सकता था उतना मैं किमोथैरेपी कि दवाओं के द्वारा ले चुका था। इसका अर्थ यह था कि, मेरी किमोथैरेपी चिकित्सा समाप्त हो चुकी थी। मेरे लिए यह बहुत ही खुशी का दिन था। शायद, मेरी आज तक की जिंदगी में सुने गये, सबसे सुखद शब्द थे।

मैं हाउसटन अस्पताल में अर्द्धवार्षिक जाँच के लिए जाता रहा। 1 मई 1980 को मेरी मुलाकात के दौरान डॉक्टर ने कहा, “डिक, अब मैं तुमसे आगे एक डॉक्टर की हैसियत से नहीं मिलूँगा, मैं नहीं जानता था कि, इसका क्या मतलब निकाला जाए। तब उन्होंने मुझे बताया कि, जिस तरह का कैंसर मेरे शरीर में था, वह अगर दो साल में पुनर्जीवित नहीं होता तो किसी भी अन्य सामान्य व्यक्ति से ज्यादा, मेरे को भी कैंसर दुबारा होने की कोई संभावना नहीं होगी। वास्तव में मुझे फ़ैफ़ड़ों का कैंसर दुबारा होने की संभावना तो और भी कम थी क्योंकि, मैं इसके लिए इम्यूनोअर्जेशन थैरेपी चिकित्सा भी ले चुका था।

मेरे मामले में तो पच्चीस महिने बीत चुके थे और प्रत्येक महीना अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण था। कुछ कैंसरों के मामले में पाँच साल तक निगाह रखी जाती है, कुछ में दस साल और शायद कुछ में पन्द्रह साल भी। मेरे मामले में पहले दो साल ही सबसे नाजुक थे।

यह सारी बातचीत मेरे लिए चकित कर देने वाली थी। मैं तो सोच रहा था कि, शायद मुझे सालो-साल हाउसटन अस्पताल में चैक-अप के लिए लगातार जाते रहना पड़ेगा ताकि, यह पता रहे कि, मेरा कैंसर कहीं पुर्नजीवित तो नहीं हो रहा। मेरी जिंदगी में उस वक्त मुझे दूसरी बार ऐसा लगा था कि, जैसे डॉक्टर मेरे लिए नहीं किसी अन्य कि विषय में बात कर रहे थे। मुझे तो शायद यह आशा और विश्वास ही नहीं था कि शायद मैं कभी ऐसे शब्द सुन पाऊंगा कि, मैं पूर्णतया ठीक हो पाऊंगा। वास्तव में ही भगवान है।



## छोटी-मोटी उलझने

मैं कभी भी दर्दनिवारक गोलियां नहीं लेता था। हाउसटन में ऑपरेशन के बाद सर्जन ने मुझे जोर देकर कहा था कि, मैं हर चार घंटे के बाद एक गोली लूं। अर्थात एक दिन में पाँच गोली और हरेक गोली में एक ग्रेन कोडीन - **One Grain of Codin** था। उसने यह समझाया कि, ऑपरेशन के कारण मेरे कंधे के उत्तक में एक काफी बड़ा घाव हो गया था इसलिए इससे पहले ही कि, मुझे दर्द शुरू होकर तनाव होने लगें मुझे एक दर्द निवारक गोली नियमित रूप से लेनी थी। इससे मुझे होने वाले दर्द से मुक्त रहकर घाव को भरने की प्रक्रिया को ज्यादा सुचारु रूप से होने में बड़ी सहायता मिलेगी और मेरा घाव जल्दी भर जाएगा।

मैं फिर कहता हूँ मैंने इससे पहले कभी दर्द निवारक गोली नहीं ली थी। दो बार, एक बार जुलाई में बरमूडा जाते हुए और दूसरी बार अगस्त में घर पर, मैंने इस आदत को छोड़ने की कोशिश की परन्तु, दोनो ही बार, दूसरे ही दिन, मेरे को असहनीय दर्द होने लगा और मुझे दुबारा से कोडीन की गोली शुरू करनी पड़ी थी।

अगली बार जब मैं हाउसटन नियमित जाँच के लिए गया, तो डॉक्टर ने मुझे एम0 डी0 एन्डरसन कैंसर अस्पताल के मनोवैज्ञानिक चिकित्सक से मिलने की सलाह दी। मुझे लगा था कि, मैं तो एक समझदार आदमी था और मुझे अपनी भावनाओं और विचारों पर नियंत्रण रखने के लिए शायद किसी बाह्य मदद की आवश्यकता नहीं थी।

मनोवैज्ञानिक चिकित्सक ने बातचीत का सिलसिला शुरू करते हुए कहा क्योंकि, मैं उसी दिन दोपहर के बार वापिस लौटने वाला था, इसलिए वह मेरा इलाज तो नहीं कर पाएंगे पर वे केवल मुझे एक कहानी सुनाएंगे। अनजाने में ही, यह सुनकर, मेरा उनमें विश्वास जागृत हो गया। मुझे लगा कि इसमें उनका कोई निहित स्वार्थ नहीं था।

उन्होंने मुझसे कहा मैं कल्पना करू कि, मैं मेन बाजार की सड़क पर जा रहा हूँ, और मेरे पैर में सूजन है। मुझे एक कदम चलने में भी दर्द हो रहा है। मैं बड़ी मुश्किल से चल ही पा रहा हूँ और ऐसी हालत में छलांग लगाने या दौड़ने की तो सोच भी नहीं सकता। जब मैं सड़क के बीचो-बीच हूँ, तो मैं एक ट्रक को, अपनी तरफ 60 मील प्रति घंटा की स्पीड से आते हुए देख रहा हूँ। ऐसे में क्या होता है? मैं अपना दर्द व सूजन अचानक भूल जाता हूँ और खुद को ट्रक की टक्कर से बचाने के लिए छलांग लगाकर दौड़कर, सड़क के दूसरी तरफ चला जाता हूँ। पर जैसे ही मैं सड़क के दूसरी तरफ पहुँचता हूँ, मेरे दर्द का अहसास पूरी तेजी से अचानक शुरू हो जाता है। इससे क्या सिद्ध होता है? यही ना कि, यदि मानव मस्तिष्क चाहे तो वह दर्द के अहसास को भूल सकता है।

उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि मैं घर जाकर, किसी मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ की राय लू जो दर्द निवारण के विशेषज्ञ हो। मेरी पत्नी ने काफी खोजबीन करके, एक विशेषज्ञ का चयन किया और हम उससे मिले। उन्होंने बताया कि, दर्द वास्तव में दो बातों का मिश्रण होता है— मानसिक तनाव और शारीरिक चोट। यदि मैं अपने मानसिक तनाव से मुक्ति पाना सीख लेता हूँ तो भी मुझे अपने दर्द से काफी राहत महसूस होगी। मैं सदा अपने आप को बड़ा ही तनाव मुक्त स्थिति में रहने वाला मानता था। मुझे, उनके शब्दों के पीछे छिपे हुए, वास्तविक अर्थ समझ में नहीं आया।

अपनी दूसरी मुलाकात के दौरान, उन्होंने मुझे रिलेक्शंसन थेरेपी (जिसके बारे में पिछले अध्यायों में विस्तार से बतलाया जा चुका है।) दी और उसके बाद उन्होंने मेरे दर्द को समाप्त करने के लिए मुझ पर सम्मोहन क्रिया का भी प्रयोग किया। एक सप्ताह के बाद तीसरी मुलाकात में, उन्होंने फिर से यही पूरी प्रक्रिया दोहराई, पर मुझे जरा भी फायदा नहीं लगा।

चौथी मुलाकात के दौरान, उन्होंने मुझे रिलेक्सेशन देने के बाद कहा कि, मैं किसी ऐसे दृश्य के बारे में सोचूँ जिसे, मैं संसार का सबसे दृश्य मानता हूँ और फिर उसके बारे में विस्तार से उन्हें बताऊँ। मैंने उन्हें बताया कि, वह मेरी पत्नी का मेरे प्रति प्यार का दृश्य ही हो सकता था। उन्होंने मुझे यह सोचने के लिए कहा और कहा कि, मैं सोचूँ कि, धीरे-धीरे मेरे पूरे शरीर में मेरी पत्नी का प्यार भर रहा है और मेरा पूरा शरीर उनके प्यार से भर गया है। मैंने अपना बाया हाथ अपनी छाती के बाईं ओर रखा और धीरे-धीरे उसे अपनी छाती से रगड़ते हुए अपने दाहिने कंधे तक ले गया जैसे कि, मैं अपनी पत्नी के प्यार को अपने दिल से चोटिल व दर्द वाले स्थान अपने कंधे की ओर धकेल रहा हूँ। मुझे लगा कि, मेरा सारा दर्द समाप्त हो गया है। यह प्रयोग पूर्णतया कारगर सिद्ध हुआ था।

उस दिन के बाद, जबसे मैं डॉक्टर के ऑफिस से आया था, आज तक मैंने कोई भी दर्द निवारक गोली का प्रयोग नहीं किया है। जैसे ही मेरा दर्द मुझे तकलीफ देता, मैं अपनी पत्नी के प्यार के बारे में सोचता था और उसको दर्द वाले कंधे की ओर धकेलता। और तुरंत ही मेरा दर्द गायब हो जाता था।

जैसा कि मैंने जिक्र किया है कि, मित्र अपने आप में ही बहुत अद्भूत होते हैं। ऐसे ही एक मित्र के द्वारा जिनका नाम ऐलफोर्ड लिंगटन था, मैं एक फिजियोथैरेपिस्ट से मिला। जिन्होंने मेरी पूरी जीवन शैली को ही बदल दिया था।

ऑपरेशन के बाद, मेरा अपने दांयी हथेली और हाथ की मॉसपेशियों पर बिल्कूल भी कोई नियंत्रण नहीं था। घंटो विद्युत के झटको द्वारा चिकित्सा लेने के बाद भी, मैं अपने आप ना तो कोई उंगुली हिला सकता था और ना ही अपनी बाँह कंधे तक उठा कर ले जा सकता था। केवल, अपने दूसरे हाथ की मदद से ही अपनी अंगुलियों या कलाई में, थोड़ा सा मोड़ या हरकत कर पाता था। मैं शायद हाउसटन में सर्जन के सामने केवल शेखी ही मार रहा था जब मैं उनको यह कह रहा था कि, मैं दुबारा भी इस हाथ से, पहले की तरह ही, टेनिस खेल सकूँगा। हांलाकि, वे इस बारे में कुछ अलग ही राय रखते थे।

एम0 डी0 एन्डरसन के फिजियोथैरेपिस्ट ने मुझे सावधान किया कि, यदि मैंने तुरंत ही इस बारे में उचित कार्यवाही नहीं कि, तो यह स्थाई तौर पर लकवे जैसा रूप ले सकता था और मैं अपनी मॉस-पेशियों पर पूर्णतया, अपना नियंत्रण खो सकता था। मैं इससे डर गया और बिना समय बर्बाद किए इस विषय पर खोज-बीन में जुट गया।

कन्सास सिटी के जिस फिजियोथैरेपिस्ट का हमने चुनाव किया, वह शुरू में सप्ताह में तीन दिन सुबह एक घंटे के लिए, मेरे घर आती और मेरी चिकित्सा करती थी। उसके इलाज का तरीका भी बड़ा कमाल का था। उसने मुझे कभी छुआ तक भी नहीं। वह मुझसे अपना काम खुद ही करने को कहती थी और जब तक करवाती रहती जब तक उस चीज का नुकसान ना हो जाए। वह एक सख्त परन्तु धैर्यवान और नरम दिल महिला थी। उसके जाने के बाद, मुझे को उसकी बताई हुई प्रक्रिया को, उसके अगले दिन वापिस आने से पहले, कई बार दोहराना पड़ता था।

पहले दो सप्ताह केवल मेरे दाये हाथ की अंगुलियों को मोड़ने के प्रयास में ही बीत गए। जब भी मैं यह कहता कि, अब मैं अपनी अंगुलियों को और नहीं मोड़ सकता तो तब, वह मुझे अपने दूसरे हाथ की अंगुलियों को देखकर उनसे तुलना करने को कहती। उसके बाद मैं दर्द सहते हुए भी उनको और ज्यादा मोड़ने की कोशिश करता। वह मुझे एक शीशे के सामने खड़ा करके मेरे हाथ पर वजन लटका देती थी और फिर मुझ से अपना हाथ उपर उठवाती। एक महिने के बाद ही, हमने उसके आने की अवधि सप्ताह में एक बार ही कर दी क्योंकि, उसने कहा था

कि, अब मुझमें खुद ही इतनी इच्छा शक्ति और लगन पैदा हो चुकी थी कि, अब मैं इसका अभ्यास स्वयं, बिना किसी की सहायता के भी, कर सकता था। एक सप्ताह बाद बिना उसे बताए और उसको आश्चर्यचकित करने के लिए, मैं अपना रैकेट लेकर टेनिस कोर्ट में चला गया। मैं रैकेट पकड़ तो सकता था लेकिन उठा नहीं पाता था। मैं एक लकड़ी के तख्ते से तीन-चार फुट दूर खड़ा होकर, अपने हाथ के रैकेट को पेन्डुलम की तरह हिलाकर, टेनिस बॉल को तख्ते से मारने का अभ्यास करता रहता था। कई सप्ताह के बाद मैं धीरे-धीरे तख्ते से अपना फासला बढ़ाता गया। उसके बाद, धीरे-धीरे मैं अपना रैकेट भी उपर उठाता गया और उस पर अपनी पकड़ भी मजबूत करता गया।

एक महिने के बाद उसे मेरा इलाज बंद कर दिया। उसका कहना था कि, मेरी चिकित्सा और इसकी सफलता उसके लिए अभूतपूर्व थी। मैं अपनी बांह कलाई और अंगुलियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रित हरकत करने में सक्षम हो गया था। जहाँ तक ताकत का सवाल है वह समय के साथ-साथ खुद ही आ जाने वाली थी।

मुझे अहसास था कि शायद मैं, टेनिस खेलने के लिए, पहले जितना ताकतवर और मजबूत तो नहीं हो पाउंगा। इसलिए अब मुझे अपने टेनिस खेलने में ज्यादा सटीक और योजनाबद्ध तरीकों का इस्तेमाल करना पड़ेगा। मैंने एक बड़े साइज का रैकेट लिया और उसके साथ शॉट खेलने का अभ्यास करने लगा। अब मुझे पूरा विश्वास था कि, यदि मेरा खेल पहले से यदि अच्छा नहीं है, तो किसी भी लिहाज से जरा सा, खराब भी नहीं है।

ऑपरेशन के बात मुझे डॉक्टर ने बताया कि, उन्हे मेरे ऑपरेशन के दौरान मेरे कंधे की कुछ नाड़िया निकालनी पड़ी थी, इसलिए मेरे शरीर के दाहिने भाग में पसीना नहीं आएगा और मुझे अपनी दाहिने हाथ को हमेशा ढक कर रखना पड़ेगा क्योंकि, अगर मैं धूप में रहा तो पसीना ना आने के कारण यह धूप से जल सकता था। पसीना शरीर को ठंडा रखने में मदद रखता है। लगभग दो साल के बाद हम सब को यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि, अचानाक ही मेरी दाहिनी तरफ फिर से पसीना आने लगा था। खुश होने के लिए यह भी कितनी अजीब सी बात थी। जब तक कोई मुझसे हाथ ना मिलाये या मेरी तरफ बहुत गौर से ना देखे उसको इस बात का अहसास भी नहीं हो सकता कि, कभी मेरे दाहिने हाथ में कुछ शिकायत थी या यह कमजोर था। आज भी मेरे दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली थोड़ी सुन्न रहती है और मैं उस हाथ से टाइट बंद जार की शीशी के ढक्कन को नहीं खोल पाता हूँ। कैंसर जैसी भयानक बीमारी को परास्त कर, उस पर विजय प्राप्त करने के लिए, यह बहुत ही मामूली सी कीमत है।



## आशा की किरण

मई 1, 1980 को, हाउसटन से हवाई जहाज द्वारा घर लौटते समय मेरे कानों में तीन अप्रैल 1978 को मेरे डॉक्टर द्वारा कहे हुए शब्द गूँज रहे थे, “डिक, तुम एक बहुत ही बीमार बच्चे हो। हम तुमको और भी ज्यादा बीमार बनाने वाले हैं परन्तु, यह निश्चित है कि, हम तुमको ठीक कर देंगे। हम तुम्हारा इलाज करके ठीक करेंगे ताकि, तुम अन्य कैंसर पीड़ितों के लिए काम कर सको”।

वे उतने ही अच्छे व्यक्ति थे जितने कि, उनके द्वारा बोले गए शब्द। आज मैं, पूरी तरह से स्वस्थ होकर घर वापिस जा रहा था। उसी वक्त मैंने फैसला लिया था कि, अब मैं अपनी बची हुई जिंदगी कैंसर पीड़ितों को समर्पित कर दूंगा। उस वक्त सबसे बड़ा सवाल यह था कि इसकी शुरुआत कहाँ से और कैसे करूँ।

मैंने सभी महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार किया, जैसे कैंसर का शीघ्र निदान; कैंसर के कारणों का उन्मूलन, कैंसर चिकित्सा की नई चिकित्सा पद्धतियों की खोज, कैंसर से बचाव के लिए शरीर की रोग प्रतिरक्षण क्षमता को सक्रिय करना, कैंसर का इलाज व उसके बाद की देखभाल इत्यादि। इनमें मेरे लिए कौन सा क्षेत्र सर्वश्रेष्ठ हो सकता था?

अमेरिका सरकार द्वारा कैंसर से युद्ध के लिए, लगभग एक करोड़ अमेरिकन डॉलर प्रतिवर्ष देने का और अमेरिकन कैंसर सोसाइटी बीस करोड़ डॉलर सालाना इकट्ठा करने के फैसले को देखते हुए मैंने सोचा कि, इस क्षेत्र में अब और धन जुटाने का तो कुछ ज्यादा अर्थ नहीं था। इसके अलावा, मैं स्वयं अपना कुछ, निजी योगदान भी देना चाहता था।

मुझे एक पुरानी कहावत याद आई कि, यदि आप अपने निजी अनुभव पर आधारित कुछ लिखते हैं तो वह निश्चित ही, एक ज्यादा प्रभावशाली लेख होता है। इसलिए, मेरे कार्य क्षेत्र की विशेषता तो कैंसर का इलाज और उसके बाद की देखभाल प्रक्रिया ही होना चाहिये था। इससे पहले के चार बिन्दु, तो विशेषज्ञ वैज्ञानिकों और डॉक्टरों के लिए ही हो सकते थे। मैं स्वयं भी कैंसर के इलाज और उसके बाद की प्रक्रियाओं की प्रक्रिया से गुजर चुका था, और उस दौरान उभरने वाले विचारों, भावनाओं, सवेदनाओं उतार-चढ़ाव द्वारा मानसिक आघातों को शायद मुझसे ज्यादा कोई दूसरा नहीं समझ सकता था।

मेरा दिमाग वापिस, उस पहले दिन पर चला गया जब मेरे सर्जन ने मुझे बताया था कि, मुझे कैंसर था। मुझे याद आया कि, उस वक्त मैं और मेरी पत्नी यह सुनकर एकदम कैसे सन्न रह गए थे। उस वक्त, अविश्वास और मन में उठने वाले असंख्य प्रश्नों और आंशकाओं से घिरे हुए हम यह नहीं समझ पा रहे थे कि, इन प्रश्नों और आंशकाओं के समाधान के लिए किस के पास और कहाँ जाए? मैंने महसूस किया कि, इस तरह की परिस्थिति से दो-चार होने वाले हम अकेले ही नहीं थे बल्कि, ज्यादातर लोग इसी कठिन दौर से गुजरते होंगे। इससे एक कदम आगे, कितने ही ऐसे व्यक्ति होंगे जो कभी कैंसर पीड़ित थे और अब पूर्णतया स्वस्थ हो चुके हैं या अपने इलाज प्रक्रिया के दौर से गुजर रहे हैं, वे भी इस मामले में दूसरों की सहायता करने के इच्छुक हो सकते हैं। यह अपने आप में एक बहुत ही अद्भूत कार्य हो सकता है कि एक ऐसी स्वयंसेवी संस्था बनाई जाए जिसमें भूतपूर्व कैंसर मरीज या वर्तमान दौर के कैंसर मरीज, एक दूसरे की या नए कैंसर मरीजों की, आपस में अपने अनुभव व जानकारी का आदान प्रदान करके, सहायता करें और एक-दूसरे का मनोबल बढ़ाएँ।

यदि, मैं किसी फेफड़ों के कैंसर ग्रस्त मरीज से मिलता तो, मैं उसके लिए बहुत कुछ कर सकता था। यदि वह मुझसे एक शब्द भी नहीं कहता या कुछ सहायता मांगता तो भी, मैं उसके



लिए बिना उसके कुछ मांगे सब कुछ करने की कोशिश करता। इसी तरह की भावनाएँ और विचार कैंसर हॉटलाइन के स्थापन का मूलभूत आधार थे।

मैं ह्यूमन रेस्क्यू इंक, जो एक लाभरहित आपदा हस्तक्षेप टेलीफोन सेवा केन्द्र हैं, के एक्सीक्यूटिव डायरेक्टर से मिला। इस मीटिंग के पीछे मेरा विचार था कि, उनके पास उन सब लोगों के टेलीफोन नम्बर मिल जाएंगे जो इस कार्य में, वॉलंटियर्स के रूप में, मदद कर सकते हैं। और उनके पास टेलीफोन लाइनें भी उपलब्ध होगी। यदि हम इस संस्था की टेलीफोन लाइनों व टेलीफोन सेवा का उपयोग कर पाएँ तो, हमारी हॉटलाइन संस्था का सम्पर्क उन सभी संभावित वॉलंटियर्स से हो जाएगा। उन्होंने मेरी इस हॉट लाइन की रूपरेखा को बड़े ध्यान से सुना। उन्हें यह परियोजना बहुत पसंद आई और उन्होंने अपनी सेवाएँ उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया।

अब, जबकि हमारे पास टेलीफोन कालो का जवाब देने के लिए ह्यूमन रेस्क्यू इंक की सेवाएँ उपलब्ध थीं हमको केवल यही करना था कि वॉलंटियर्स का चुनाव और उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था करना। मैं एक मनोचिकित्सक से मिला और वे एक समाज सेवक की सहायता से, इस प्रशिक्षण कार्य की योजना बनाने और उसको कार्यान्वित करने के लिए तैयार हो गए।

कन्सास के एक भूतपूर्व मानवप्रेमी उद्योगपति, जेरी स्मिथ, को कैंसर हॉटलाइन का अध्यक्ष बनाया गया और उन्होंने सैन्ट्रल मेथोदिस्ट चर्च का उपयोग, प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में करने की व्यवस्था करवा दी। अब कैंसर हॉटलाइन की सफलता के लिए आवश्यकता थी, एक व्यापक स्तर पर प्रचार की, जब किसी में कैंसर का निदान हो, और जब उसका मस्तिष्क पूरी तरह से विचलित व परेशान हो, उस जटिल परिस्थिति में भी, उसको कैंसर हॉटलाइन व उससे बात करने की याद रहे। यह केवल एक विस्तृत व लगातार प्रचार से ही संभव हो सकता था। इस प्रचार का एक और उद्देश्य, उन लोगों के दिलो-दिमाग में भी कैंसर और उसके मरीजों के प्रति रुचि पैदा करना भी था, जिनको इसमें रती भर भी रुचि नहीं थी। यह उन स्वस्थ लोगों का एक विशेष समूह था, जो यह मानकर और जानकर चलते थे कि उनको तो भविष्य में कभी भी कैंसर होने वाला नहीं है, इसलिए वे इसके बारे में कुछ भी कहना या सुनना पसंद नहीं करते थे।

मुझे विश्वास था कि एक बार प्रचार के बाद तो हमारे पास भूतपूर्व कैंसर मरीजों की लाइन लग जाएगी जो इस कार्य में, वॉलंटियर्स के रूप में, अपना सहयोग देने के लिए तैयार हो जाएंगे। फिर भी हमें कुछ ऐसे दक्ष व प्रशिक्षित वॉलंटियर्स की आवश्यकता थी जो, शुरुआती प्रचार के बाद आने वाली टेलीफोन कॉल्स का, सुचारू रूप से संतोषजनक उत्तर दे सकें। अगस्त के शुरुआत में, मेरे व दूसरे मित्रों के जानकार सूत्रों के जरिये, हम कुछ वॉलंटियर्स चुनने और उनको प्रशिक्षण देने में सफल हुए।

प्रशिक्षण कितने समय का होना चाहिए और इसका सिलेबस-पाठ्यक्रम क्या होना चाहिए, इसका निर्धारण काफी लम्बी बहस के बाद हो पाया था। कुछ लोग चाहते थे कि, प्रत्येक वॉलंटियर्स को चार सेशन उपस्थित होना चाहिए, उनको सभी प्रकार के कैंसरों से संबंधित सारी सामान्य जानकारी दी जाने चाहिए इत्यादि। मैंने सबके सुझाव सुने और अंत में यह फैसला किया गया कि, वॉलंटियर्स को क्या सिखाया जाएगा, इसका निर्धारण किसी भी औपचारिक सीमा में नहीं बांधा जाएगा। जो कुछ भी बताया या सिखाया जाएगा, इसका फैसला उनके अपने निजी अनुभवों पर ही आधारित होगा। यह फैसला तब से आज तक एक सही फैसला सिद्ध हुआ है।

आज ब्लॉच कैंसर हॉटलाइन एक वास्तविकता है। यह एक, पाँच सौ से भी ज्यादा उन वॉलंटियर्स की एक संस्था है, जिनको आज भी कैंसर है या पहले कैंसर था और उस पर विजय प्राप्त करके उससे मुक्त हो चुके हैं ये टेलीफोन पर बात करने के लिए उपलब्ध होते हैं

और आवश्यकता पड़ने पर, किसी भी भी नए कैंसर मरीज के घर जाकर उससे मिलने को भी तैयार रहते हैं। कैंसर मरीज, कैंसर हॉटलाइन के, टोल फ्री नम्बर 800-433-0464 (816-932-8453-Cancas City) पर सम्पर्क करके, अपने बारे में कुछ जानकारियां नोट करा दे। जैसे अपना नाम, उम्र, लिंग, पता, टेलीफोन नम्बर, अपना कैंसर और उसकी किस्म इत्यादि। संभवतया 15 मिनट के बाद ही अपना कोई ना कोई ऐसा वालंटियर उस मरीज से सम्पर्क करेगा जिसको पहले कभी लगभग उसी तरह का कैंसर हुआ हो और लगभग उसी की उम्र, सैक्स और उसी इलाके का हो।

इस मुलाकात के कई उद्देश्य हो सकते हैं। सबसे पहले तो इससे तुरन्त यह पता लग जाता है कि, मरीज को जिस प्रकार का कैंसर है, वह शायद इतना प्राणघातक नहीं है और इसका इलाज हो सकता है। इससे उस मरीज को एक ऐसा मित्र भी मिल जाता है जो, इस नाजुक परिस्थिति में उसको दिलासा देकर आश्वस्त कर सकता है। यह उस मरीज को अपने मन में उठ रहे प्रश्नों व आशंकाओं का समाधान करने का भी अवसर देता है। प्रश्नों व आशंकाओं के उत्तर बहुत ही सामान्य भाषा में होते हैं, जो किसी पुस्तक की जानकारी पर नहीं बल्कि, वालंटियर के स्वयं के निजी अनुभवों पर, आधारित होते हैं और इस बातचीत के दौरान मरीज के दिमाग में, किसी प्रकार की कोई झिझक या डर नहीं होता जो, शायद किसी पेशेवर विशेषज्ञ से बात करने के दौरान हो सकता है।

वालंटियरो को इस बात का विशेष प्रशिक्षण व सलाह दी जाती है कि, वे कभी भी किसी मरीज के बारे में किसी प्रकार की कोई भविष्यवाणी या डॉक्टरी सलाह ना दें। उसका कार्य तो केवल एक चेतावनी निर्देश या संकेत देना ही होता है। अपने निजी अनुभवों पर आधारित, मरीज के दिलो दिमाग में एक नई आशा की किरण जागृति करना होता है और दो बातें सुनिश्चित करनी होती है— पहली तो यह कि, मरीज फौरन एक अच्छी और गहन डॉक्टरी चिकित्सा शुरू करवाए और यदि किसी डॉक्टर द्वारा उस मरीज के बारे में की गई भविष्यवाणी में जरा सी भी कोई आशंका या शक हो तो तुरन्त उसको, एक बहु विशेषज्ञता प्राप्त अस्पताल से, दूसरे परामर्श लेने की सलाह देना। दूसरे परामर्श देने वाली संस्थाओं की लिस्ट कैंसर हॉटलाइन 800-433-0464 (816-932-8453-Cancas City) या हमारी बेबसाइट [www.blochcancer.org](http://www.blochcancer.org) पर उपलब्ध है। इस मुलाकात का दूसरा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना भी होता है कि मरीज कैंसर-देयर इज होप (कैंसर-उम्मीद अभी है) व फाईटिंग कैंसर (कैंसर से जंग) को अवश्य पढ़ें।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि, कैंसर मरीज अपने लिए सर्वोत्तम प्रयास कर रहा है यदि, उस वालंटियर को ऐसा लगता है कि, उस मरीज से दुबारा या बार-बार मिलने की आवश्यकता है तो वह आगे भी, उससे सम्पर्क बनाए रख सकता है।

जब, मैंने यह हॉट लाइन कि कार्य प्रणाली के बारे में अपने एक मित्र को बताया तो, उनका सुझाव था कि इसकी आवश्यकता ना केवल मरीजों को बल्कि, उनके मित्र या परिजनों को भी उतनी ही है। उन्होंने बताया कि उनका एक बहुत अच्छे मित्र को, जो उनका कानूनी भागीदार भी था, कैंसर था। उनके भागीदार ने एक बार उनको, डॉक्टर के यहाँ से फोन करके, इस बारे में बताया और उसके बाद फिर कभी ऑफिस आया ही नहीं। मेरे वे मित्र अपने उस मित्र को कभी किसी डॉक्टर के पास दिखाने भी नहीं ले जा सके क्योंकि, वे स्वयं भी नहीं जानते थे कि ऐसी परिस्थिति में, उन्हें क्या कहना और करना चाहिए। वे अपने मित्र से केवल उसकी अंतिम संस्कार के समय ही मिले थे। इसलिए ब्लॉच कैंसर हॉट लाइन की सेवाए, ना केवल कैंसर मरीजो बल्कि, उनके परिजनों व मित्रों तक के लिए भी उपलब्ध कराई जाने लगी।

मेरे पास कोई कानूनी जानकारी या योग्यता नहीं है, कैंसर के बारे में मैं जितना भी जानता हूँ वह केवल, अपने निजी अनुभवों या जो कुछ भी मैंने पढ़ा या सुना है उस पर ही आधारित है। हॉटलाइन पर सुने गये कुछ प्रश्नों से तो स्वयं मेरे दिलो-दिमाग को भी एक झटका सा लगता

है। उनसे पता चलता है कि, हर समाज में इस तरह की सेवा की, कितनी आवश्यकता होती है।

क्या, नीचे दी हुई टिप्पणीयों में से कोई, आप पर या आपके किसी मित्र या परिजन पर लागू होती है?—

“मेरे डॉक्टर का कहना है कि मुझे कैंसर है और आगे इलाज की योजना बनाने से पहले, तुम मेरे पास छ महिने बाद आकर दिखाना कि, कैंसर पहले से बढ़ा है या नहीं” (उसके बाद वह एक कैंसर विशेषज्ञ के पास गया। जहाँ उसका इलाज चल रहा है और उसके ठीक होने की बहुत अच्छी संभावनाएँ हैं)

“मेरे प्लास्टिक सर्जरी करने वाले सर्जन जो मुझे मेरे फैंफड़ों के कैंसर के लिए किमोथैरेपी दे रहे हैं उनका कहना है कि, मेरा कैंसर लाइलाज है और मैं मर जाऊंगा”। (वो एक बहु विशेषज्ञता प्राप्त अस्पताल दूसरे परामर्श के लिए गए। डॉक्टरों ने उनको विभिन्न चिकित्सा पद्धतियाँ सुझाईं। अब उनके भी ठीक होने की बहुत अच्छी संभावनाएँ हैं।)

यह भी एक संयोग ही है कि, एक मरीज ने मुझे बताया था कि, “जो डॉक्टर मुझे किमोथैरेपी दे रहे हैं उनका यह कहना है कि, मैं बच नहीं पाऊंगा”—यह वही डॉक्टर थे जिन्होंने मुझे साठ दिन पहले, खुद ही बताया था कि, वह एक हेमाटोलोजिस्ट—रक्त रोग विशेषज्ञ था। वह डॉक्टर तो हमारे विशेषज्ञ चिकित्सक पैनल में भी आना चाहता था, और वह भी केवल रक्त सम्बंधित कैंसरों के मामले में ही क्योंकि, उनके मुताबिक दूसरे कैंसरों के बारे में उनको विशेष दक्षता हासिल नहीं थी (यह मरीज भी किसी कैंसर विशेषज्ञ को दिखाने के लिए तैयार हो गया।)

फ्लोरिडा की एक महिला अपने पति को एक कैंसर हॉस्पिटल में दिखाने के लिए ले जाना चाहती थी परन्तु उनके एक सामान्य रोग चिकित्सक ने कहा था कि, यदि वह कहीं और गया तो फिर भविष्य में वे उनका इलाज कभी भी नहीं करेंगे। (वह आदमी भी एक कैंसर हॉस्पिटल में गया और पूर्णतया ठीक हो चुका है। उसे कोई परवाह नहीं थी कि, वह डॉक्टर भविष्य में उसका इलाज नहीं करेंगे।)

एक 82 साल के बूढ़े व्यक्ति को उसके सर्जन ने, उसे तुरन्त अपने फैंफड़ों के ऑपरेशन करवाने की सलाह दी थी क्योंकि उन्हें उसके एक्स—रे में एक निशान दिखा था। उस मरीज के पास इससे पहले की ना तो कोई एक्स—रे रिपोर्ट ही थी जिससे वह दोनो रिपोर्टों का मिलान कर लेता और ना ही वह इससे पहले किसी कैंसर रोग विशेषज्ञ या किसी सामान्य रोग विशेषज्ञ डॉक्टर से मिला था। (वह एक कैंसर हॉस्पिटल गया जहाँ उसे बताया गया कि उसे कैंसर नहीं है और ऑपरेशन की कोई आवश्यकता नहीं है। एक्स—रे में दिखने वाला छाती का निशान केवल उसके बचपन में हुई तपेदिक की बीमारी के कारण था।)

“एक सज्जन जिनके सर्जन ने उनको भी बताया था कि, उन्हें तुरन्त ऑपरेशन की जरूरत है। उनकी एक्स—रे रिपोर्ट में भी कोई निशान आया था। उन्होंने कोई भी दूसरी सलाह नहीं ली। उनका ऑपरेशन किया गया और बाद में पता चला कि, इसकी कतई कोई आवश्यकता नहीं थी। उस मरीज को ठीक होने में महिनों लग गए और जो खर्चा हुआ वह अलग है। एक जानी मानी हस्ती जिनका फैंफड़ा निकाला जा चुका था, उनके सर्जन ने उनको बताया कि उनको किमोथैरेपी करवाने की आवश्यकता है लेकिन उनके पारिवारिक डॉक्टर ने कहा कि उसे पूरा विश्वास था कि कैंसर पूरी तरह से ठीक हो चुका है और किमोथैरेपी जैसी दुःखदाई चिकित्सा लेनी की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। (मैं उनसे आठ महिने के बाद मिला तो पता लगा कि, उन्होंने भी अपने डॉक्टर की सलाह मानकर, किमोथैरेपी कराने के स्थान पर, आसान चिकित्सा को ही चुना था। इसके परिणाम स्वरूप उनका कैंसर दूसरे फैंफड़े में भी फैल गया जिसका कोई इलाज संभव नहीं था। दो साल के बाद उनकी मृत्यु हो गई।)

इस तरह की हमारे पास हजारों फोन कॉलें आती हैं। मेरे ख्याल से तो ये सब इस बात को सिद्ध करती हैं कि इस तरह के प्रोग्रामों की हमारे देश के हर शहर में भी सख्त आवश्यकता है। इसका ना केवल, कैंसर मरीजों और उनके मित्रों और परिजनों को, अपने आप में एक बहुत ही महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक लाभ है। बल्कि यह बहुत सी जिन्दगियां बचाने में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

जैसे कि, सबसे ज्यादा खतरनाक कैंसरों में से एक कैंसर पैक्रियाज— **Pancreas** है। हमारे पास कई ऐसे वालंटियर्स हैं जो इस कैंसर से भी पूर्णतया ठीक हो चुके हैं।

मैं एक कैंसर विशेषज्ञ से बात कर रहा था। उसने मुझे तीन बहुत खतरनाक किस्म के कैंसरों के नाम बताए उसमें पैक्रियाज का नाम नहीं था। जब मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने पैक्रियाज कैंसर का नाम क्यों छोड़ दिया है? उनका उत्तर था कि आज की तारीख में इस कैंसर को खतरनाक किस्म का कैंसर नहीं मानते क्योंकि, उनके विचार से वे उसको ठीक कर सकते थे। किसी भी उस मरीज के लिए जिसको हाल में ही पैक्रियाज कैंसर का निदान हुआ है उनके लिए यह सूचना उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर। यह उसकी जीवन शैली में, नाटकीय रूप से, सुधार ला सकती है।

**कैंसर हॉटलाइन की सेवाएँ पूर्णतया निशुल्क हैं।** इसमें दी जाने वाली किसी भी प्रकार की सेवा या वस्तु, केवल दान के रूप में ही, स्वीकार की जाती है। इसमें हर काम केवल वालंटियर्स के द्वारा ही किया जाता है। हम किसी तरह का कोई चन्दा स्वीकार नहीं करते और यदि कोई हमको देने का प्रस्ताव भी करता है तो हम उनको यह सुझाव देते हैं कि, वे इसको किसी चर्च या अस्पताल में दे दें।

1980 में इसके स्थापन के बाद से, हॉटलाइन में 1,50,000 से भी ज्यादा कैंसर मरीजों या उनके परिजनों की फोन कॉलें आ चुकी हैं। इनमें वे कॉलें शामिल नहीं हैं जो रिकार्ड नहीं कि गई हैं। हमारे पास पाँच सौ भी ज्यादा, पूर्णरूप से समर्पित अद्भूत वालंटियर्स हैं जो, अपनी सेवाएँ और समय निशुल्क और निस्वार्थ भाव से, केवल इस भावना से देने को हमेशा तैयार रहते हैं कि, उन्हें दूसरे मानवीय जीवों की सहायता करने में बड़ा आत्म संतोष मिलता है।



## चिकित्सा पैनल का गठन

पूर्णतया रोग मुक्त होने के बाद, हाउसटन से घर वापिस आते हुए मैंने इस बारे में सोचने की कोशिश की थी कि, कैंसर हॉटलाइन सेवा के अतिरिक्त भी इस दिशा में और क्या कर सकता हूँ। अपने निजी अनुभवों को, पीछे मुड़कर देखने पर मैंने महसूस किया कि आज मैं जिन्दा हूँ तो केवल इसलिए कि मैं अपने इलाज के लिए हाउसटन अस्पताल में चला गया था। यदि मैं, अपने पहले डॉक्टर की सलाह मानकर, वही कन्सास सिटी में बैठा रहता तो आज शायद जीवित ही नहीं होता।

बहुत से लोग, शायद समय की कमी से या धन की कमी से या सही सलाह ना मिलने के कारण, किसी अच्छे और बड़े कैंसर सेंटर में नहीं जा पाते। ये लोग अपनी जिंदगी के साथ एक जुआ सा खेलते हैं। कैंसर चिकित्सा और उससे सम्बंधित सारी सुविधाएँ हर बड़े शहर में उपलब्ध है। आवश्यकता थी केवल इस बात कि, इन सुविधाओं व जानकारियों का सही व योजनाबद्ध तरीके से, एकत्रित करना। इस दिशा में सोचते-सोचते आखिरकार, मेरे दिमाग में, मेरी योजना के दूसरे भाग के रूप में, कैंसर चिकित्सा पैनल- “कैंसर-ट्रिटमेंट पैनल” का विचार आया।

मैंने शुरूआती स्तर पर ही, इस विचार के बारे में, अपने एक परिचित से चर्चा की। उसे कैंसर था और उसने छः साल तक अपनी किमोथैरेपी करवाई थी। उसने एक बहुत ही जाने-माने कैंसर विशेषज्ञ सर्जन से, मेरी मुलाकात करवाई।

उन्होंने मेरे इस विचार को सुना कि, कन्सास जैसे मध्यम दर्जे के शहर में, किसी के लिए यह संभव नहीं था कि, वह अपने कैंसर की चिकित्सा के बारे में सर्वश्रेष्ठ राय ले सके जब तक कि, वह बाहर किसी बड़े शहर में नहीं जाए। उनसे मेरा यह सुझाव कि कैंसर विशेषज्ञ चिकित्सकों का एक पैनल बनाया जाए जो किसी के कैंसर चिकित्सा के बारे में सामूहिक राय दे सके। वे हॉस्पिटल के पास में ही, अपने स्वयं के कैंसर अस्पताल के लिए, एक नई बिल्डिंग का निर्माण करवा रहे थे। वो चाहते थे कि मैं इस पैनल का संचालन अपनी नई बिल्डिंग में करूँ। उन्होंने बताया कि, कैंसर विशेषज्ञ इस तरह के जनहित कार्य के लिए बड़ी खुशी से अपना समय निशुल्क तौर पर देने को तैयार हो जाएंगे। यदि मैं, इस चिकित्सक पैनल को उनके अस्पताल में ही कार्य करने के लिए तैयार हो जाता हूँ, तो वे इस कार्य के लिए उपयुक्त डॉक्टरों की भी व्यवस्था कर सकते हैं।

यह सुनकर मुझे कई कारणों से आश्चर्य हुआ। पहला तो यह कि मुझे नहीं लगता था कि जिस व्यक्ति से मैं बात कर रहा हूँ वह मेरे विचार से इतना ज्यादा उत्साहित होगा। दूसरे मुझे इसका भी कुछ अंदाजा नहीं था कि, कैंसर विशेषज्ञ डॉक्टर अपनी सेवाएँ निशुल्क भी प्रदान कर सकते हैं। अपने आप में ही इसका यह मतलब निकलता था कि, कोशिश करने से बहुत कुछ संभव हो सकता है।

मैंने उन सर्जन को यह समझाया कि इस चिकित्सा पैनल की सफलता के लिए सबसे मूलभूत आवश्यकता यह थी कि, यह किसी भी तटस्थ स्थान पर होना चाहिए ना कि, किसी विशेष चिकित्सा केन्द्र में। यह इसलिए जरूरी था ताकि, बिना इस डर के कि, यदि वह डॉक्टर उस मरीज को किसी अन्य स्थान या डॉक्टर का सुझाव देंगे तो अपने मरीज को खो सकता था। ना केवल इतना किसी मरीज के लिए भी, किसी कैंसर विशेषज्ञ के ऑफिस के आगे से होकर गुजरकर, उसी अस्पताल में स्थित, कैंसर परामर्श पैनल के पास जाने में बड़ी झिझक होगी बल्कि, वह डॉक्टर भी उस मरीज को उस परामर्श पैनल के पास भेजने में हिचकिचाएंगे। यद्यपि यह मीटिंग बिना किसी विशेष निष्कर्ष पर पहुँचे ही, समाप्त हो गई थी फिर भी, मैं भविष्य की संभावनाओं के बारे में काफी उत्साहित व आशावान था। मैंने फैसला किया कि, अब मैं रोज

किसी ना किसी डॉक्टर से मीटिंग करके, उसकी सहायता लेने के लिए, इस कैंसर प्रोगाम के बारे में चर्चा करूंगा।

एक बहुत बड़े मैडिकल कॉलेज अस्पताल के एक कैंसर विशेषज्ञ से अपनी मीटिंग के दौरान, मैंने अपनी बात उनके सामने रखी। उनका जवाब था, “जब तुम्हारे डॉक्टर ने तुम्हें यह बताया था कि तुम्हें कैंसर है, तो उसने निश्चित तौर पर तुमको हमारे ही कैंसर बोर्ड के पास भेजने की और मुलाकात करने की व्यवस्था की थी”। मैंने पूछा कि कौनसा कैंसर बोर्ड ? उन्होंने जवाब दिया कि, सरकार द्वारा अस्पताल को अनुदान राशि बंद किए जाने से पहले तक, उनको अस्पताल में मिड वेस्ट का सबसे शानदार ट्यूमर बोर्ड था। उन्होंने आगे बताया कि, जब मेरे मामले को उन्होंने एक मैडिकल सोसाइटी के अध्यक्ष के सामने रखा तो उनकी भी यह प्रतिक्रिया थी कि मेरी बायोप्सी की जाँच एक बहुत ही उपयुक्त अस्पताल में हुई थी जहाँ के डॉक्टर ने तुरन्त कि, मेरे मामले को कैंसर बोर्ड के सामने, विचार विमर्श के लिए रख दिया था। मैंने फिर वही अपना सवाल दोहराया कि,—कैंसर बोर्ड क्या होता है?

इन सब मुलाकातों के बाद मुझे कम से कम दो मूलभूत बातों का तो अहसास हो ही गया था, पहली तो यह कि, बहुत से डॉक्टर अपने मरीज को स्वेच्छा से किसी अन्य विशेषज्ञ के पास दूसरी सलाह के लिए शायद नहीं भेजने वाले थे और दूसरी यह कि कैंसर हॉटलाइन की सफलता की चाबी, अगर कहीं है तो वह है, लोगों में इसके बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए प्रचार करना।

कैंसर के ज्यादातर मामलों का प्रथम निदान विशेषज्ञों के बजाय, सामान्य डॉक्टरों द्वारा—जैसे पारिवारिक डॉक्टर, स्त्री रोग विशेषज्ञ, कान, नाक और गले के डाक्टर वगैरा—वगैरा द्वारा किया जात है। इनमें से कुछ तो इस डर से कि, यदि वे अपने मरीज को किसी अन्य विशेषज्ञ के पास दूसरी सलाह के लिए जाने का सुझाव देंगे तो उसके मन में यह बात आ सकती है कि, उसके डॉक्टर को स्वयं पर पूरा विश्वास नहीं है और वह किसी दूसरे डॉक्टर को स्वयं से ज्यादा जानकार और अनुभवी मानकर उसे उसके पास भेज रहा है। इससे उसके मरीजों की संख्या कम हो सकती है और उसकी व्यवसायिक आमदनी पर बुरा प्रभाव पड़ सकता था। इसी कारण से वह उसको अपने पास ही इलाज करते रह कर, जब तक संभव होता है, उसे बेवकूफ बनाते रहते हैं। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि, उन्हें शायद अपने बारे में यह गलतफहमी रहती है कि, वे स्वयं ही कैंसर और उसके इलाज के बारे में, किसी भी अन्य कैंसर विशेषज्ञ जितनी जानकारी रखते हैं। शायद ऐसे ही डॉक्टर के मरीजों को, किसी कैंसर विशेषज्ञ की, दूसरी सलाह की सख्त आवश्यकता होती है। इसलिए हमको, केवल मरीजों को ही इतना जागरूक और जानकार बनाना पड़ेगा कि, वे केवल अपने डॉक्टर की इच्छा पर ही निर्भर ना रहकर, स्वयं ही उससे मांग करे कि वे उनको किसी अन्य विशेषज्ञ के पास जाने का सुझाव दें। यह केवल और केवल विस्तृत प्रचार से ही संभव हो सकता था।

एक अन्य कैंसर विशेषज्ञ से मुलाकात के दौरान जब मैंने उनसे पूछा कि, आमतौर से कितने मामलों में वे, बिना किसी दूसरी सलाह के, अपने मरीज के कैंसर का इलाज शुरू कर देते हैं। लगभग 60 साल की उम्र वाले उस डॉक्टर ने जवाब दिया कि, उसने अपने आज तक के सारे कार्यकाल के दौरान एक भी कैंसर मरीज का इलाज, बिना किसी दूसरी सलाह के, शुरू नहीं किया था। इतना ही नहीं, वे तो हमेशा इस बात पर भी जोर देते रहे थे कि, दूसरी सलाह भी, उस डॉक्टर की होनी चाहिए, जो किसी भी रूप में उनसे संबंधित ना हो। इसके लिए उन्होंने चार कारण बताए—

- कैंसर एक बहुत ही खतरनाक बीमारी है, जो गुणात्मक तरीके से बढ़ती है। यदि इसका इलाज पहली बार में ही ठीक प्रकार से नहीं किया जाए अक्सर दूसरा मौका मिलता ही नहीं है।

- वह भी एक मनुष्य है, और गलती कर सकता है।
- कोई दूसरा कुछ ऐसा भी देख सकता है, जो शायद वह ना देख पाया हो।
- कोई दूसरा, कुछ ऐसी भी जानकारी रख सकता है, जो शायद उसे नहीं हो।

मेरे विचार में यह अपने आप में ही बहुत महान वक्तव्य है। मैं उम्मीद करता हूँ कि, कैंसर का इलाज करने वाले हर डॉक्टर इसको पढ़े और सुनें। इस वक्तव्य से मैंने यह भी निष्कर्ष निकाला कि, यदि कोई डॉक्टर बिना दूसरी राय के अपने कैंसर मरीज का इलाज करता है, तो वह स्वयं को एक डॉक्टर नहीं बल्कि भगवान मानता है क्योंकि वह केवल भगवान ही हो सकता है, जो हर तरह से परिपूर्ण है, सब कुछ जानते हैं और कभी कोई गलती नहीं कर सकता।

एक दूसरे डॉक्टर ने मुझे बताया कि एक छोटे शहर मिससुरी के अच्छे खासे अस्पताल में, जिसमें काफी बड़े क्षेत्र के लोगों का इलाज किया जाता था, वहाँ कोई स्कैनिंग मशीन ही नहीं थी, जिससे हड्डियों, मस्तिष्क या लीवर का स्कैनिंग टेस्ट भी कर सकें, जो बहुत से कैंसरों के मामलों में उसकी सही स्थिति की जानकारी प्राप्त करने के लिए बहुत ही आवश्यक थी। फिर भी उस अस्पताल में कैंसर मरीजों की जाँच की जाती है, उनका इलाज किया जाता है और कितने ही कैंसर के मामलों को दबा दिया जाता होगा।

इस सूचना और इससे पहले हुई विभिन्न डॉक्टरों से हुई मुलाकातें और उनसे प्राप्त विस्तृत जानकारियों के आधार पर कैंसर चिकित्सा पैनल बनाने की औपचारिक तौर पर, योजना बनाई गई। मैंने इस पैनल की पहली बैठक 2 सितम्बर 1980 को बुलाने का फैसला किया। मेरी पत्नी और मैंने 44 शीर्षस्थ कैंसर विशेषज्ञों को अपने घर पर एक पार्टी में आने का न्यौता दिया। उनमें से 35 डॉक्टरों ने अपनी पत्नियों के साथ आने का हमारा निमंत्रण स्वीकार कर लिया। मेरे ख्याल से अपने आप में यह खासी अच्छी संख्या थी।

मैंने कैंसर चिकित्सा पैनल के बारे में अपनी परिकल्पना, मेरी उम्मीदें और सपनों के बारे में उन सबको विस्तार से बताया। इसके बाद उनकी प्रतिक्रियाएँ आनी शुरू हुईं। एक सर्जन का विचार था कि, मेरी यह सोच कि, यह सब पूर्णतया निशुल्क होगा, अपने आप में बेतुका था क्योंकि, डॉक्टरों को फीस तो देनी ही पड़ेगी। एक दूसरे डॉक्टर ने इसका इसलिए विरोध किया क्योंकि, उनके पास इसके लिए पूर्णरूप से संलग्न होने के लिए समय नहीं था और वे किसी भी उस चीज के विरुद्ध थे, जिसमें वे निजी तौर पर पूर्णरूप से संलग्न ना हो। एक तीसरे डॉक्टर की सोच यह थी कि, हमको यह कार्य क्लोज-सर्किट टीवी के माध्यम से ही करना चाहिए।

लेकिन महत्वपूर्ण बात यह थी कि, पैतीस में से बत्तीस डॉक्टर इसके पक्ष में थे। हमारा सपना बहुत तेजी से वास्तविकता की ओर बढ़ रहा था। मैं और मेरी पत्नी रात को घंटों बैठकर इस मीटिंग व उसके बहुत ही उत्सावर्धक प्रतिक्रियाओं के बारे में चर्चा करते रहते थे। हमारा कैंसर चिकित्सा पैनल अब एक वास्तविकता बन चुका था। इस पैनल में पाँच डॉक्टर—एक कैंसर विशेषज्ञ, एक सर्जन, एक रेडियोलोजिस्ट, एक सामान्य रोग विशेषज्ञ और एक मनोरोग विशेषज्ञ शामिल थे। इस पैनल के सदस्य, कन्सास शहर के एक तटस्थ स्थान पर प्रत्येक मंगलवार को सांय पाँच बजे मिलते थे। मिलने का स्थान हर बार कोई अलग-अलग, पर शहर के बीच में स्थित, कोई अस्पताल होता था। समय-समय पर दूसरे क्षेत्रों के विशेषज्ञ डॉक्टरों को भी इसमें आमंत्रित किया जाता था। प्रति सप्ताह चार मरीजों के कैंसर के मामले पर, इस पैनल में विस्तार से गहन चर्चा की जाती थी। इन मरीजों को अपने साथ अपनी सारी रिपोर्टें—एक्स-रे रिपोर्ट, स्लाइड्स और मैडिकल रिपोर्ट इत्यादि लानी होती थी। तकनीकी तौर पर तो, उन मरीजों को अपने सभी रिपोर्टों के साथ अपने डॉक्टरों द्वारा ही यहाँ आने के लिए सुझाया जाता था। इस पैनल का उद्देश्य उस डॉक्टर के सुझाए हुए चिकित्सा का अध्ययन करना और या तो उसका अनुमोदन या आवश्यकता पड़ने पर इसमें कुछ बदलाव करना था। इस पैनल के सारे सुझावों की पहले मरीज के सामने ही विस्तृत चर्चा की जाती थी और उसके बाद लिखित

तौर पर, इन्हे उनके डॉक्टर के पास भेजा जाता था, जिसकी एक प्रतिलिपि उस मरीज को भी दी जाती थी।

मरीज और उसके परिजनों के सामने ही, उसके रोग और इलाज से संबंधित हर प्रकार की गहन चर्चा करना, चिकित्सा जगत में अपने आप में एक अनूठी घटना थी। मनोरोग चिकित्सक या मनोवैज्ञानिक इस चिकित्सा पैनल का एक महत्वपूर्ण अंग थे। इस पैनल से मिलने के बाद निकलने वाले ज्यादातर मरीजों को यह लगता था कि, उन्हें अपने कैंसर के इलाज के लिए, ना केवल एक और ज्यादा अच्छा डॉक्टर सुझाव मिला है बल्कि वह मानसिक तौर पर भी ज्यादा अच्छी मनोदशा महसूस करते थे। वे सब अपने भविष्य के बारे में पहले से ज्यादा बेहतर मनोदशा व आश्वस्त महसूस करते थे।

मानसिक स्वास्थ्य ऐसोसिएशन के दो वालंटियर मरीज और उसके परिजनों के साथ, उनका नम्बर आने से पहले, प्रतीक्षा कक्ष में बैठते थे। अक्सर ये वालंटियर, मरीजों और उनके परिजनों के साथ, चिकित्सा पैनल से उनकी मीटिंग के बाद भी मिलते थे कि कहीं उनको कोई और आवश्यकता या उनके मन में कोई और शंका तो नहीं बची थी, जिसका समाधान किया जाना बाकी हो।

मरीज के साथ उनके मित्रों या परिजनों का होना इसलिए आवश्यक था क्योंकि मरीज अक्सर दिलो-दिमाग से इतना ज्यादा परेशानी की हालत में होता है कि वह, जो उसको कहा या सुझाया जाए शायद ठीक से नहीं समझ और सुन पाता। इसलिए उसके साथ आए व्यक्ति बाद में उसको सही तरीके से समझा सकते थे। हम यह भी जानते थे कि, कैंसर के इलाज के लिए मरीज को अपने मित्रों और परिजनों की, बहुत ही ज्यादा आवश्यकता थी।

चिकित्सा पैनल की पहली मीटिंग के बाद ही मैंने भविष्य की मीटिंगों के बारे में एक निम्नलिखित दिशा निर्देशक सिद्धान्त लिखे। शुरू-शुरू में तो पैनल के डॉक्टरों के मन में कुछ हिचकिचाहट सी थी परन्तु बाद में सभी ने, इसको बड़े आदर और प्रशंसा के साथ अपना लिया।

- चिकित्सा पैनल से निकलने वाले हर मरीज के मन में इस बात की खुशी और संतोष होना चाहिए कि, उसकी बात बड़े धैर्य और ध्यान से सुनी गई है।
- पैनल के सामने आने वाले हर मरीज के साथ उसके, उसकी पति/पत्नी, मित्र और परिजन भी होने चाहिए।
- रोग और चिकित्सा सम्बन्धित सारी परिचर्चा खुलकर, मरीज और उसके परिजनों के सामने, होनी चाहिए। पैनल द्वारा दिए जाने वाले सभी सुझाव मरीज के डॉक्टर के पास, लिखित रूप में, भेजे जाएंगे और इसकी एक प्रतिलिपि मरीज को भी दी जाएगी।
- क्योंकि, प्रेयर्स या मनोवैज्ञानिकता में उम्मीद हमेशा रहती है इसलिए, पैनल से निकलने वाला कोई भी मरीज, ना उम्मीद होकर नहीं निकले।

मेरे विचार में, पहली दो मीटिंगों में ही, हम दो मरीजों के जीवन बचाने में सफल हो गए थे। दोनों का इलाज चल रहा था और उनके इलाज करने वाले डॉक्टरों ने उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं बताई थी। उनके मामले में पैनल ने, एक लम्बी और गहन परिचर्चा के बाद, उनको कई और चिकित्सा पद्धतियों का सुझाव दिया और उनको पूरी उम्मीद थी कि, इलाज के बाद, मरीज के बचने की बहुत अच्छी संभावनाएँ थी। पैनल एक सुयोग्य और अनुभवी डॉक्टर द्वारा दूसरी सलाह के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक सहायता के महत्व पर विशेष जोर देता था। पैनल ने क्रिसमिस की छुट्टियों से पहले वाले दिन केवल एक ही मरीज को मिलने की योजना बनाई थी। मैंने पैनल के अध्यक्ष डॉक्टर को फोन करके पूछा कि क्या वे इस मरीज से मुलाकात का दिन एक सप्ताह आगे का करना चाहेंगे। उनका जवाब था कि अगर इस आदमी को यह



लगता है कि उसका पैनल के सामने क्रिसमस की छुट्टियों से पहले ही आना आवश्यक है तो पैनल बैठेगा और पैनल बैठा। मैं समझता हूँ कि पैनल की यह बैठक उस व्यक्ति विशेष के लिए काफी लाभदायक रही। इससे पैनल के डॉक्टरों के अद्भूत सर्म्पण की भावना का भी पता चलता है।

मेरे एक बहुत निकट के डॉक्टर मित्र ने मुझे कहा था, “एक सामान्य रोग चिकित्सक के तौर पर मैं कई कैंसरों के मामलो का निदान करता हूँ। हॉलाकि मुझे कई तरह के कैंसरों के इलाज के आधुनिकतम और सर्वोत्तम इलाजों के बारे में जानकारी नहीं है, तो भी मुझे उन मरीजों के लिए कुछ ना कुछ चिकित्सा तो सुझानी ही पड़ती हैं। मैं सोचता हूँ कि, यदि मैं उस मरीज को किसी कैंसर विशेषज्ञ के पास भेजूंगा तो वे शायद इसे किमोथैरेपी देगा, यदि मैं किसी सर्जन के पास भेजता हूँ तो वह इसका ऑपरेशन कर देगा। और यदि किसी रेडियोथैरेपिस्ट के पास भेज दूंगा तो वह इसको रेडिएशन थैरेपी दे देगा। इसलिए, हॉलाकि, मैं कोई कैंसर विशेषज्ञ चिकित्सक नहीं हूँ तो भी मैं उसकी चिकित्सा का स्वयं ही निर्धारण कर लेता हूँ। अब मैं उसको, निःसकोच तुम्हारे पैनल के पास भेज सकता हूँ जहाँ, उसको पहली बार मैं ही सही चिकित्सा सुझाई जा सकती है।”

### मेरे लक्ष्य—

- मैं हर डॉक्टर से अनुरोध करना चाहूँगा कि अपने आपको भगवान समझ कर कार्य ना करे। और इसका ध्यान रखें कि, हरेक मरीज को एक सुयोग्य अनुभवी और स्वतंत्र दूसरी सलाह का अवसर मिले।
- हर कैंसर मरीज को प्रेरित करूँ जिससे वह अपने लिए एक ऐसा सुयोग्य और अनुभवी डॉक्टर और चिकित्सा दूढ़ने में सफल हो, जिसमें उसको पूरा भरोसा और विश्वास हो। और जिसके निर्देशों और सुझाओं का वह पूरी ईमानदारी के साथ पालन करे।
- हर कैंसर मरीज को इस बात के लिए प्रेरित करूँ कि, वह अपने इलाज प्रक्रिया के दौरान, बहुत ही सुरक्षात्मक और संकीर्ण रूढ़िवादी मानसिकता रखे। आमतौर से इसमें दूसरा मौका नहीं होता।
- हर कैंसर मरीज को इस बात के लिए प्रेरित करूँ कि, एक सकारात्मक मनोदशा के साथ यह सोचे कि, उसका कैंसर दिन ब दिन ठीक हो रहा है। याद रखें, यदि कोई यह नहीं सिद्ध कर सकता कि, इससे कुछ फायदा होगा, तो कुछ नुकसान भी नहीं हो सकता। कम से कम यह आपके दिमाग से, इस चिंता से मुक्त तो रखेगी कि ठीक नहीं हुआ तो क्या होगा। यह भी अपने आप में बहुत बड़ी बात होगी।
- हर कैंसर मरीज को, अपने इलाज के संबंध में स्वार्थी होने के लिए प्रेरित करूँ। वह सबसे पहले अपने बारे में सोचे और केवल वहीं करे जो आपको करना चाहिए। अगर आप चाहे तो इसके बारे में, खुलकर बात करिए। अपने विचारों व संवेदनाओं को अपने प्रियजनों व मित्रों के साथ बांटना आपके लिए बहुत सहायक होगा। उस डॉक्टर की बिल्कुल भी परवाह ना करें और उसकी बात को अनसुना कर दें, जो आपसे यह कहता है कि आप ठीक नहीं हो सकते। उस डॉक्टर को तुरन्त बदल कर किसी ऐसे डॉक्टर को ढूँढिए, जो यह कहता हो कि, वह ना केवल आपको ठीक करने की कोशिश ही करेगा बल्कि, ठीक कर देगा।
- हर कैंसर मरीज को प्रेरित करूँ कि, अपने परिजनों और मित्रों से दूर ना भागे। आपको कोई छूत की बीमारी नहीं है। आपको कोई साथी चाहिए और बहुत संभव है कि उनकी मदद और प्रार्थनाओं से, आप आने वाले कई सालों तक उनके साथ रह पाएँगे।



## कैंसर प्रबन्धन सेंटर का गठन

स्थापना से 1 ½ साल के अन्दर ही कैंसर चिकित्सा पैनल ने लगभग ढाई सौ कैंसर मरीजों के मामलों को देखा। इस प्रक्रिया के दौरान हमें बहुत सी अहम जानकारिया प्राप्त हुई। अन्य बातों के अलावा, अब पैनल के डॉक्टरों को यह महसूस होने लगा था कि, यदि उन्हें मरीज से मुलाकात से पहले ही, उसके रोग और बाकी जॉच रिपोर्टें यदि पहले से मिल जाएं, तो बहुत अच्छा रहेगा। इससे वे उसके कैंसर से सम्बंधित सभी जानकारियाँ प्राप्त करने के लिए पहले से ही खोजबीन कर पाएंगे। वे सभी चाहते थे कि, मरीज और उसके परिजनों के सामने चर्चा करने से पहले, वे स्वयं अपने बीच में ही, उस पर विस्तृत बहस कर सकें। सबकी एकमत राय थी कि, ऐसा ना होने के कारण, वे मरीजों को, सर्वोत्तम व सर्वश्रेष्ठ सलाह देने के अपने उद्देश्य में, पूरी तरह सफल नहीं हो पा रहे थे।

ऐनेटी और मेरा तो उद्देश्य ही यही था कि, पैनल के समक्ष आने वाले हर मरीज को अपने कैंसर को हराकर उस पर विजय प्राप्त करने का सर्वोत्तम अवसर मिलना चाहिए। हम इससे, एक कदम पर भी, समझौता करने को भी तैयार नहीं थे। यदि डॉक्टरों की यही एकमत राय थी कि सर्वोत्तम सलाह के लिए यह आवश्यक था, तो हमें निश्चित तौर पर इसके लिए कुछ ना कुछ तो करना ही था।

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि, हो सकता है कई कैंसर मरीज समय या धन के अभाव में कन्सास शहर से बाहर ना जा पाएँ। फिर भी, उनको भी अपने इलाज की सर्वश्रेष्ठ सुविधा तो मिलनी ही चाहिए, हमने वहीं कन्सास में ही एक कैंसर चिकित्सा सेंटर खोलने का प्रयास करने की ठानी। हम उस सेंटर में हर प्रकार के कैंसर के इलाज के लिए, अमरीका की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा सुविधाएँ वहाँ उपलब्ध करवाना चाहते थे। परन्तु इन सबके लिए, केवल प्रारम्भिक ढांचा तैयार करने के लिए लगभग 100 मिलीयन (दस करोड़) डॉलर की आवश्यकता होती। यह हमारे लिए एक व्यवहारिक योजना नहीं हो सकती थी।

कन्सास शहर में वैसे तो, सभी प्रकार के कैंसर के इलाज के लिए जरूरी सभी प्रकार के संसाधन उपलब्ध थे। परन्तु समस्या यह थी कि, वे सब अलग-अलग स्थानों या सेंटरों में बिखरे हुए थे। सच्चाई तो यह है कि, एक सर्वेक्षण के अनुसार कन्सास में इतने उपकरण मौजूद थे, जो आवश्यकता से भी ज्यादा थे। यहाँ काफी संख्या में कैंसर विशेषज्ञ, सामान्य रोग विशेषज्ञ, रेडिएशन विशेषज्ञ, रक्त रोग विशेषज्ञ, सर्जन और अन्य दूसरे क्षेत्रों के विशेषज्ञ भी थे। हमें विश्वास था कि, वे सब विशेषज्ञ, योग्यता और अनुभव में, देश के किसी भी विशेषज्ञ से, किसी भी प्रकार से कम नहीं थे। यह निश्चित तौर पर अस्पतालों में पलंग और इलाज से संबन्धित हर प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध थी। हम कई घंटों तक इस समस्या पर विचार विमर्श करने और कोई व्यवहारिक हल ढूँढने के प्रयास में लगे रहे। परन्तु समस्या यह थी कि हमारे लिए जो कि, इस चिकित्सा क्षेत्र के लिए बिल्कुल अन्जान थे, कैसे इन संसाधनों की एक ही स्थान पर इस प्रकार व्यवस्था करें कि दूसरे शहरों के लोग वही रहकर भी इसका पूरा लाभ उठा सकें।

कैंसर को सफलता पूर्वक हराने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, शीघ्र अतिशीघ्र इसकी इलाज प्रक्रिया शुरू की जाए। दूसरे शब्दों में यह केवल डॉक्टर, उनका ज्ञान व अनुभव ही होता है, जिससे कैंसर को सफलता पूर्वक परास्त किया जा सकता है, ना कि ईंट और चूने से बनी कोई इमारत। हम यह भी जानते थे कि, कैंसर की सौ से भी ज्यादा विभिन्न जातियाँ और प्रजातियाँ होती हैं। स्तन कैंसर और मस्तिष्क कैंसर में, सिवाय इसके कि दोनों के पीछे कैंसर शब्द जुड़ा होता है और दोनों की ही कोशिका बहुत तेजी से विघटित होकर बढ़ती हैं, और किसी प्रकार की कोई समानता नहीं होती है। यह असम्भव सा है कि, किसी भी एक डॉक्टर को, इन सबके बारे में और इनकी इलाज की ताजातरीन

जानकारी हो सके। यह भी असम्भव सा है कि किसी भी सर्जन, रेडिएशन विशेषज्ञ या कैंसर विशेषज्ञ को अपनी विशेषज्ञता प्राप्त क्षेत्र की भी, इन सभी कैंसरों के इलाज के बारे में ताजातरीन व सर्वश्रेष्ठ जानकारी हो।

हमारे ये सब शुरुआती विचार, 1985–2000 के कैंसर कन्ट्रोल ऑब्जेक्टिव फोर द नैशन द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में, विस्तार से छापे गये। इस रिपोर्ट में कहा गया था कि, “अति आधुनिकतम कैंसर के उपकरणों और इनसे जुड़ी हुई विभिन्न प्रक्रियाओं का विषय अपने आप में ही बड़ा जटिल है। यह विषय, प्रारम्भिक दौर के चिकित्सको, जो सबसे पहले किसी भी मरीज के सम्पर्क में आते हैं, से शुरु होकर उन सभी विशेषज्ञों जो कैंसर के इलाज प्रक्रिया के निर्देशन संचालन और इलाज के बाद मरीज के पूर्णरूप से स्वस्थ होने तक जाती है। डॉक्टरी ज्ञान इस विषय में शायद अभी तक भी अपने शीर्षतम स्तर पर नहीं पहुँच पाया है। इस ज्ञान में, आधुनिकतम कैंसर चिकित्सा प्रणाली से संबंधित हर प्रकार की जानकारी और शीघ्र बहुविशेषज्ञीय दूसरी राय, भी शामिल है। लगभग 70 प्रतिशत कैंसरों के मामलों में सर्वोत्तम व सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा का निर्धारण, केवल बहुविशेषज्ञीय गहन परिचर्चा के बाद ही होता है। तुलनात्मक दृष्टि से अत्यंत दुर्लभ, कुछ प्रकार के कैंसर होने का अर्थ है कि, इनके उपयुक्त या सर्वश्रेष्ठ इलाज की सुविधा केवल कुछ ही चुने हुये कैंसर चिकित्सा केन्द्रों पर ही उपलब्ध हो सकती है। कुछ डॉक्टर, अनैतिक दृष्टिकोण को अपनाते हुये, शायद बहुत ही सुरक्षित चिकित्सा प्रणाली को अपना सकते हैं, जिसमें ना तो मरीज को तुरन्त कोई बहुत ज्यादा खतरा होता है और ना ही उसके ठीक होने की सम्भावनाएँ। किसी भी नए कैंसर मरीज के सफल इलाज में सबसे महत्वपूर्ण बात इसके आस-पास घूमती है कि, उसको, बहुत शीघ्र ही बहुविशेषज्ञीय चिकित्सा योजना का निर्धारण, उपयुक्त दूसरी राय और विशेषज्ञ चिकित्सा व जरूरी संसाधन उपलब्ध हो जाएँ”।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुये हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि, हमको कैंसर चिकित्सा पैनल की तरह ही, कोई दूसरा पैनल बनाना होगा। और इतना ही नहीं, इस तरह के पैनल, एक बिल्कुल ही निष्पक्ष व तटस्थ स्थान पर होने चाहिए। हमने निश्चय किया कि इस पैनल के लिए आदर्श स्थान कोई शैक्षिक केन्द्र हो सकता था, जिनके पास स्वयं की कोई चिकित्सीय सुविधाएँ ना हो। और हमारे लिए वह स्थान, मिसोउरी यूनिवर्सिटी ही हो सकता था।

अब समस्या थी इस योजना के लिए, उपयुक्त डॉक्टरों और अस्पतालों से सम्पर्क करना। उनको इस बात के लिए राजी करना कि, वे एक दूसरे से सहयोग करके संयुक्त रूप से काम करें। हमको इसको एक लाभ रहित संस्थान बनाना चाहते थे, जिसका संचालन, महानगरीय शहरों में स्थित, प्रत्येक बड़े अस्पतालों के एक-एक प्रतिनिधियों से चुना हुआ बोर्ड ऑफ डायरेक्टर करेगा। जहाँ तक हमें जानकारी थी यही एक ऐसी योजना थी, जिसमें सभी बड़े अस्पतालों ने एकजुट होकर पूर्णरूप से सहयोग दिया था।

नवम्बर 1981 से अप्रैल 1982 तक हमारे घर पर ही, चार विभिन्न क्षेत्रों के जाने-माने विशेषज्ञों ने इस योजना पर विस्तृत विचार विमर्श किया। ये सारी योजना इसी सिद्धान्त और एक मूल कथन को, सामने रखकर ही बनाई गई थी कि, “सब कुछ केवल मरीज के सर्वोत्तम हित में ही किया जाएगा और ऐसा कुछ भी नहीं किया जाएगा, जिससे मरीज का सर्वोत्तम हित ना होता हो”।

क्योंकि, कैंसर के इलाज और उसके बाद मरीज के स्वस्थ होने की प्रक्रिया में, मनोवैज्ञानिक पहलू की एक बहुत बड़ी भूमिका थी, इसलिए यह आवश्यक था कि यह सैंटर बाहर से देखने में भी शानदान एवं बहुत ही सम्मानीय और गौरवपूर्ण स्तर का होना चाहिए। यूनिवर्सिटी ऑफ मिसोउरी-कन्सास सिटी हमारी जरूरत के अनुसार हर दृष्टिकोण से,

आदर्श थी, और हमारा यह सेंटर भी इस यूनिवर्सिटी के लिए एक अमूल्य निधि के रूप में सिद्ध हो सकता था। इसका मूल उद्देश्य भी, अनुसंधान, शोधकार्य एवं ज्ञान को बांटना ही था। हमारा सेंटर, कन्सास और इसके आस-पास के क्षेत्रों का भी, एक महत्वपूर्ण केन्द्र बिन्दु होने वाला था और अंततः दूसरी यूनिवर्सिटीयों के नेटवर्क के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में, कैंसर चिकित्सा व संबन्धित सभी जानकारीयों और इसमें होने वाले निरंतर सुधारों के बारे में, सब लोगों को जानकार बनाना था।

इस तथ्य को सर्व सहमति से स्वीकार किया गया कि, हमारा उद्देश्य केवल और केवल कैंसर मरीजों की मदद करना था ना कि कोई बहुत बड़ा संस्थान बनाना। हमें पूरी उम्मीद थी कि, भविष्य में यह सेंटर, एक आदर्श के रूप में स्थापित होगा। आस-पास के देशों के सेंटर भी प्रेरणा लेकर नकल करेंगे। इस सेंटर में तीन निरीक्षण कक्ष व परिचर्चा कक्ष बनाए जाने थे।

यूनिवर्सिटी ने, हमारे सेंटर के लिए अपनी शानदार बिल्डिंग के, पूरे भूतल को ही उपलब्ध करा दिया। यह वास्तव में ही एक शानदार बिल्डिंग थी और जिसके बाहर एक सुंदर सा प्रतीक चिन्ह था। हमारे केन्द्र के लिए इसमें, अलग से एक प्रवेश द्वारा भी था। जैम्स गोहल, जिन्होंने हमारे केन्द्र की सजावट के लिए अपनी निशुल्क सेवाएँ प्रदान की थी, ने वास्तव में ही एक बहुत शानदार काम किया था।

केन्द्र का क्या नाम रखा जाएँ इस विषय में काफी रोचक बहस हुई। इससे यह भी पता चलता है कि इस बीमारी जिसका नाम कैंसर है, अपने आप में दूसरी किसी भी बीमारी से, कितनी अलग और विलक्षण है। यह सेंटर कोई कैंसर निदान केन्द्र नहीं था क्योंकि, यहाँ जो मरीज आने वाले थे उनमें तो कैंसर का निदान पहले ही हो चुका था। यह कोई चिकित्सा केन्द्र भी नहीं था, क्योंकि इसमें ना कोई दवाई ना कोई एक्स-रे मशीन या चिकित्सा के लिए आवश्यक अन्य कोई उपकरण थे। कोई भी सामान्य चिकित्सक अपने मरीज को, बिना इस झिझक या डर के कि, कहीं वह उसको खो ना दे, इस केन्द्र में भेज सकता था। यह सेंटर तो पूर्णरूप से, केवल और केवल, एक प्रबन्धन संस्था मात्र था। यहाँ कैंसर के सर्वश्रेष्ठ इलाज के लिए केवल सुझाव ही दिए जाने वाले थे। जरा इसके बारे में सोचिएँ, क्या आपने पहले कभी, किसी ऐसी बीमारी के बारे में सुना या पढ़ा है, जिसके लिए प्रबन्धन की भी आवश्यकता पड़ती हो।

यह विश्वास दिलाने के लिए कि, इस अद्भूत सेंटर को निजी तौर पर हमारी निरंतर सेवाएँ और सहायता मिलती रहेगी, हमने इसे अपने निजी नामों रिचर्ड और ऐनेटी ब्लॉच पर ही रखने का फैसला किया। इस प्रकार इस सेंटर का नाम आर. ए. ब्लॉच कैंसर मैनेजमेंट सेंटर रखा गया।

1 मई 1982 को आर. ए. ब्लॉच कैंसर मैनेजमेंट सेंटर एक वास्तविकता बन चुका था। यह तारीख भी, हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। आज से ठीक दो साल पहले इसी तारीख को मुझे बताया गया था कि अब मैं पूर्णतया कैंसर मुक्त हो चुका था। यह सेंटर, मेरे द्वारा, स्वयं से किये हुए उस वायदे की दिशा में कि, मैं अपना जीवन कैंसर पीड़ितों को समर्पित कर दूंगा, एक और महत्वपूर्ण कदम था। यह अपने आप में एक ही योजना थी जो ना केवल बिना किसी भी सरकारी अनुदान के बल्कि बहुत ही मामूली सी निजी धन राशि से ही, सफलता पूर्वक पूरी हुई थी।

किसी के लिए भी, हमारे सेंटर के पैनल में आना बिल्कुल निशुल्क था। इसका कोई बैंक अकाउंट भी नहीं था। किसी भी प्रकार का, किसी भी रूप में, दान भी स्वीकार नहीं किया जाता था। पैनल के डॉक्टर आमतौर से, इस पैनल के आने वाले मरीजों का इलाज भी

नहीं करते थे। वे इसको सचमुच में ही एक पूर्णतया निष्पक्ष और स्वतंत्र, दूसरी राय का सेंटर बनाना चाहते थे। वे तो अपना बहुमूल्य समय इस सेंटर को केवल इसी उद्देश्य से दे रहे थे कि, आने वाले हर मरीज को जितनी आसानी से संभव हो सके, अपने कैंसर को हराने के लिए सर्वोत्तम मौके मिल सके।

बाहर से आने वाले मरीजों की सहायता के लिए, सेंटर के वालंटियरों ने एक योजना बना रखी थी। ये वालंटियरों मरीजों के रहने, खाने-पीने और बाहर से आने-जाने की व्यवस्था करने में हमेशा उपलब्ध रहते थे। हम खुद भी जानते थे कि, अपने घर से सैंकड़ों मील दूर चिकित्सा के लिए आना-जाना कितना कष्टदायक अनुभव होता था। हम इस प्रक्रिया को, जितना संभव हो सके, उतना आसान और सुविधाजनक बनाना चाहते थे।

कौन-कौन से से क्षेत्रों के मरीजों यहाँ देखे जाएँ, इस विषय में भी काफी लम्बी बहस हुई थी। इस सेंटर का प्रारम्भिक मुख्य उद्देश्य तो कन्सास शहर के लोगो की मदद करना था, परन्तु यदि किसी कन्सास से दूर रहने वाले व्यक्ति को भी, अपनी चिकित्सा संबंधित उचित दूसरी राय की सुविधा नहीं मिलती है तो हम कहीं भी जाने को तैयार थे।

शुरू में ही एसोसिएटेड प्रेस, यूनाईटेड प्रेस इंटरनेशनल कई रेडियो स्टेशनों और टीवी चैनलों द्वारा, इस सेंटर के बारे में व्यापक तौर पर प्रचार किया गया था। जिस दिन यह सेंटर खुला उस दिन सुबह के समय, मैं स्वयं भी, केन्द्र के कार्यकारी निर्देशक और प्रवेश निर्देशक के साथ मौजूद था। हम तीनों ने पहले ही दिन 300 से भी ज्यादा पूरे देश के विभिन्न क्षेत्र के लोगों की, टेलीफोन कॉल का उत्तर दिया। वे सब इस सेंटर में आना चाहते थे। हम, इस प्रोहत्साहित करने वाली प्रतिक्रिया से, बहुत प्रसन्न और उत्साहित थे। परन्तु साथ-साथ पहले ही दिन, हमारे सामने तीन समस्याएँ आईं। पहली यह कि, जो मरीज पहले से ही अपने क्षेत्र में योग्य डॉक्टरों से अपना इलाज करवा रहे थे वे भी इस सेंटर में आना चाह रहे थे। दूसरी, यह सोच थी कि, उनकी नजर में यह केन्द्र कोई जादू की छड़ी जैसा था और तीसरे हाल-फिलहाल तो, हम इतने सारे लोगों को संभालने में सक्षम नहीं थे।

हमारे बोर्ड के निर्देशको ने पहले ही दिन दो पाबंदीयां लगाईं। पहली यह कि तुरन्त प्रभाव से इतने बड़े स्तर पर प्रचार बंद कर दिया जाए और दूसरी यह कि केन्द्र में प्रवेश, केवल कन्सास और मिसोउसी के मरीजों तक ही सीमित रखा जाए। जब किसी स्थान पर पहले से ही कोई बड़ा कैंसर अस्पताल है तो, फिर वहाँ के मरीजों को सैंकड़ों मील दूर यात्रा करके इतनी दूर यहाँ तक आने की क्या आवश्यकता थी। लेकिन उन मरीजों को भी, जो मिसोउरी और कन्सास से बाहर रहते हैं, उनको भी विशेष अनुमति प्राप्त करने पर, इस सेंटर के द्वारा बहुविशेषज्ञीय दूसरी सलाह भी दी जाएगी, जैसा कि इस संस्थान का वायदा था परन्तु इसके लिए उनको केवल उन मरीजों या उनके मित्रों और परिजनों के साथ आना पड़ेगा, जिनके नाम हमारी वैबसाइट [www.blohcance.org](http://www.blohcance.org) पर दर्ज होंगे। यदि आपके पास कम्प्यूटर की सुविधा नहीं है, तो आप इस कैंसर की हॉटलाइन सेवाओं-800-433-0464 पर सम्पर्क करके, वैबसाइट पर दर्ज लोगों के नामों की सूची मंगवा सकते हैं।

इस विषय में भी क्या, दूसरी सलाह के लिए आने वाले, किसी मरीज का नाम दर्ज करने से पहले, उस मरीज के डॉक्टर से भी इस विषय पर अनुरोध को भी आवश्यक बनाया जाए या नहीं। पैनल के ज्यादातर डॉक्टर मरीज के पहले से चिकित्सा करने वाले डॉक्टर के अनुरोध को चाहते थे अतः, हमने इसको भी प्रवेश के लिए आवश्यक कर दिया।

एक बार किसी ने मुझे फोन करके कहा कि, उसके डॉक्टर ने उसके लिए सैंटर में प्रवेश के अनुरोध के लिए मना कर दिया है। इसके पीछे डॉक्टर की यह धारणा थी कि जब उस मरीज को दो साल में, मर ही जाना है तो फिर, मरीज और हमारे सैंटर का वक्त बर्बाद करने का क्या फायदा। जब हमारे डॉक्टरों ने यह सुना तो उस मरीज को तुरन्त ही प्रवेश दे दिया गया। मेरी समझ में, जब मरीज हमारे सैंटर से बाहर निकला तो उसका नजरिया बहुत ही उम्मीदों भरा था। उस दिन के बाद से, इस सैंटर की यह नीति बना दी गई कि, यदि किसी मरीज का डॉक्टर, मरीज को दूसरी सलाह के लिए मना करता है, तो सैंटर के डॉक्टर उस विशेष डॉक्टर से, इसका कारण जानने की कोशिश करेंगे।

हमारा सैंटर कभी नहीं चाहता था कि, मरीज को बिना किसी उपयुक्त कारण के, एक से दूसरे स्थान पर भागना पड़े। यदि कोई मरीज अपने डॉक्टर की, अपने लिए की गई, भविष्यवाणी से संतुष्ट नहीं था और यदि उसके मन में, अपने डॉक्टर के बारे में, रती भर भी शंका थी और उसको आस-पास कोई अन्य योग्य और अनुभवी डॉक्टर की सहायता नहीं मिल पा रही थी तो उसके लिए यह सैंटर या इससे भी ज्यादा सुविधाजनक सैंटर उपलब्ध होने चाहिए। याद रखें, आपको अपनी बीमारी के मामले में, बहुत ही स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण अपनाना पड़ेगा।

सैंटर में आने वाले मरीजों के पहले दल में, केवल एक को छोड़कर, बाकी सबको ही अपने डॉक्टर से दूसरी सलाह के अनुरोध के लिए कहना पड़ा था। उस एक मरीज के मामले में, जिसका डॉक्टर उसे सैंटर में भेजने का अनुरोध करने को तैयार नहीं था, यह पाया गया कि, उस मरीज को कैंसर था ही नहीं, जबकी वह डॉक्टर उसका कैंसर के लिए इलाज कर रहा था।

इस आखिरी पैराग्राफ से यह स्पष्ट संकेत मिलता था कि, आखिर क्यों, कुछ डॉक्टर अपने मरीजों को, इस कैंसर मैनेजमेंट सैंटर के लिए अनुरोध करने के विरुद्ध थे। वे सभी डॉक्टर, जो अच्छे डॉक्टर, योग्य और वास्तव में विशेषज्ञ थे वे तो अपने मरीजों को इस सैंटर में भेजने के लिए, हमेशा तैयार थे। ये ऐसे डॉक्टर थे जो आमतौर से खुद ही इस बात पर जोर देते थे कि उनके मरीज को चिकित्सा शुरू करवाने से पहले एक निष्पक्ष, स्वतंत्र और योग्य दूसरी सलाह लेनी ही चाहिए। हमारे क्षेत्र में, विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ, सौ भी ज्यादा डॉक्टर थे जो विभिन्न अस्पतालों से जुड़े हुए थे। वे सब इस धारणा के पूर्णतया पक्ष में थे और वे स्वयं भी हमारे सैंटर के पैनल पर अपनी निशुल्क सेवाएं देने को तैयार थे, इसका एक बहुत ही गहन जॉच कमेटी द्वारा अनुमोदन किए जाने के बाद ही इस पैनल के लिए चुनाव होता था।

सैंटर के पैनल की, कभी भी इस बात की कोशिश नहीं होती थी कि मरीज का अपने स्वयं के डॉक्टर पर से विश्वास डगमगा जाए। पैनल के अद्भुत डॉक्टर, आमतौर से केवल मरीज का विश्वास जीत कर, उसको पहले से सुझाए गए चिकित्सा या चिकित्सा प्रणालियों का अध्ययन करके या तो उन्ही का अनुमोदन करते थे और बहुत आवश्यक लगने पर ही उसमें कुछ बदलाव करते थे। इससे मरीज का अपने पहले के डॉक्टर में ही भरोसा कायम रहता था और वह उसके द्वारा दी जाने वाली चिकित्सा को, पूरे मन से स्वीकार करके करवाता था। बहुत कम ही मौकों पर पैनल के डॉक्टर सुझाई गई चिकित्सा पद्धतियों में, कोई भारी फेरबदल का सुझाव देते थे। यह केवल तभी किया जाता था, जब इससे मरीज के सफल रूप से ठीक होने के, ज्यादा अच्छे मौके मिलते हों।

पैनल से निकलने वाले हर मरीज को यह निश्चय तौर पर महसूस होता था कि, उसने यहाँ आकर एक बहुत ही अच्छा काम किया है।

आर. ए. ब्लॉच कैंसर मैनेजमेंट सेंटर के मुख्य द्वार पर, पैनल के सभी डॉक्टर और वहाँ आने वाले मरीजों के लिए, यह संदेश लिखा था कि—

सर्वश्रेष्ठ – सर्वोत्तम परिणाम के लिए

सर्वश्रेष्ठ – सर्वोत्तम प्रयास

इससे कम – कुछ भी नहीं





## भविष्य दर्शन

हम अब तक मेरे के स्वयं के कैंसर के इलाज और आज के समय पर उपलब्ध इलाज की विभिन्न पद्धतियों के बारे में बहुत कुछ लिख चुके हैं। आइये थोड़ा और आगे जाएं और भविष्य में भी झांक कर देखें कि, और क्या-क्या संभव हो सकता है। आप यह ना सोचें कि जब यह पुस्तक पढ़ने वाले या उनके मित्र और परिजन आज कैंसर के मरीज हैं फिर भविष्य के बारे में क्या सोचना। वह इसलिए कि, भविष्य को अर्थ केवल आज से पाँच या दस साल आगे का ही नहीं है। आज की शाम या आने वाला कल या परसों भी भविष्य ही है। जब तक यह किताब छपकर आपके पास आएगी और आप इसको पढ़ेंगे, तब तक भी, भविष्य में बहुत कुछ हो चुका होगा।

नैशनल कैंसर इंस्टीट्यूट, कैंसर पैदा करने वाले कारणों को समाप्त करने और उसका उपयुक्त इलाज ढूँढने की दिशा में, हर साल 4.6 करोड़ डॉलर से भी ज्यादा खर्च करता है। इसकी स्थापना 1930 में हुई थी। इस दौरान कैंसर के इलाज व इलाज की पद्धतियों की दिशा में, अत्याधिक प्रगति करके इससे जुड़ी हुई बहुत सी समस्याओं को सुलझाया जा सका है। फिर भी, हॉल के आंकड़े बताते हैं कि, कैंसर के सारे खतरनाक मामलों में से केवल 62 प्रतिशत ही, इलाज के बाद, पाँच साल या उससे ज्यादा जी पाते हैं। अर्थात् तकनीकी तौर पर, कैंसर से पूर्णरूप से मुक्ति पाने में सफल होते हैं।

एम0 डी0 एन्डरसन एक ऐसा अस्पताल है, जहाँ पर बहुत से डॉक्टर अपने मरीज को जाने का सुझाव तभी देते हैं, जब उनको यह विश्वास हो जाता है कि, अब उसके बचने की ओर ज्यादा उम्मीद नहीं है। इसका यह अर्थ हुआ कि, यहाँ आने का सुझाव देने से पहले, उनके कैंसर के इलाज के लिए, उनका डॉक्टर पहले से ही तमाम तरह के इलाजों का प्रयोग कर चुका होता था। 1982 में एम0 डी0 एन्डरसन अस्पताल के एक अधिकारी ने बताया था कि, इस अस्पताल में ठीक होने वाले मरीजों की दर 52 प्रतिशत थी जबकि, पूरे देश में ठीक होने वालों की संख्या 42 प्रतिशत थी। मैंने उनसे पूछा कि, उनके विचार में, यदि कैंसर निदान होने के तुरन्त बाद ही मरीज उनके पास आने लगे तो उनके ठीक होने की दर कितनी होगी। उनका उत्तर था, कम से कम 62 प्रतिशत।

इसका क्या मतलब था? इसका मतलब यह था कि यदि कैंसर के निदान होने के फौरन बाद ही सभी मरीजों का इलाज सही तरीके से और पक्के तौर पर किया जाए तो, खतरनाक किस्म के कैंसर ग्रसित, औसतन तीन में से एक ऐसे मरीज की जीवन की रक्षा हो सकती है जिसकी, आज की तारीख में कैंसर से मृत्यु होती है।

परन्तु सवाल यह है कि, आज के इस ज्ञान और योग्यता को, जो हजारों लाखों कैंसर मरीजों की जिंदगीया बचा सकता है, कैसे उन जरूरत-मंदों तक पहुँचाया जाए, जिनको इनकी सख्त आवश्यकता है। इन जीवन रक्षक कैंसर की दवाओं, इलाज की पद्धतियां उनमें लगातार सुधार करके उनकी सत्यता व प्रभावशीलता को सिद्ध करना इत्यादि इन सब को करने में करोड़ों डॉलर का निवेश किया जा चुका था। इस कार्य को करने में, न जाने कितने ही डॉक्टरों वैज्ञानिकों व शोध कर्ताओं ने अपना पूरा का पूरा जीवन समर्पित करके इसमें लाखों घंटे लगाए थे। और यह सब कुछ व्यर्थ था। यदि किसी भी क्षेत्र के कैंसर का इलाज करने वाले किसी भी डॉक्टर के पास इसकी जानकारी नहीं थी। ओहियो नामक एक बहुत बड़ी कम्पनी थी। इसमें अमेरिका के ज्यादातर शहरों में निजी टेलीफोन सेवा का विस्तृत तंत्र था। एच. एण्ड. आर. ब्लॉक कम्पनी ने इसका अधिग्रहण कर लिया था। कई मुख्य समाचार पत्र छपाई के लिए, इसके कम्प्यूटरों का इस्तेमाल करते थे। इन कम्प्यूटरों के आँकड़े, हमारे विशाल कम्प्यूटर में, सीधे आ सकते थे। मेरे कमरे में एक 299 डॉलर

कीमत का एक रैडियो टर्मिनल था। जिसको यदि मैं, अपने टेलीफोन और टेलीविजन सेट से जोड़ लेता था, तो मैं चाहूँ जिस अखबार को पढ़ सकता था। मैंने कई दिन रात मैंने यह सोचने में लगा दिए, कि कैसे मैं इस अद्भुत तकनीक का इस्तेमाल, अपने मन में सोची हुई कल्पना को पूरा करने के लिए इस्तेमाल कर सकता था। मैं और ऐनेटी घंटो इस बारे में जानने के लिए माथापच्ची करके सोचते थे कि, कहीं ना कहीं कुछ तो रास्ता अवश्य ही होगा। हमें पूरा विश्वास था कि आर. ए. ब्लॉक कैंसर मैनेजमेंट सेंटर कन्सास शहर के लिए सर्वोत्तम और सर्वश्रेष्ठ कैंसर चिकित्सा उपलब्ध कराएगा और अन्य और दूसरे बड़े शहर इसकी नकल करके, इसका पूरा लाभ उठावेंगे। परन्तु उन लोगों का क्या होगा जो छोटे-छोटे शहरों और कस्बों में रहते हैं और जहाँ योग्य और अनुभवी कैंसर विशेषज्ञों की भारी कमी है।

सोचते-सोचते, आखिरकार हम अपनी मनौवाछिंत मंजिल पर पहुँच गए, जो हमारे विचार से अपने आप में बड़ा ही उत्सावर्धक और विलक्षण विचार था। और वह था कि, कैंसर की प्रत्येक जाति और प्रजाति के सभी कैंसरों के बारे में चाहे वह किसी भी स्थिति का हो या शरीर के किसी भी भाग में कहीं भी स्थित हो, उसके इलाज के लिए हर प्रकार की जानी मानी चिकित्सा पद्धति को एक ही कम्प्यूटर में डालना। पूरे अमेरिका का कोई भी डॉक्टर, अपनी मेज पर रखे कम्प्यूटर से ही, हमारा लोकल नम्बर डायल करके कोलम्बस, ओहियो में स्थित, हमारे मुख्य कम्प्यूटर से जुड़ सकता था। उसको केवल कैंसर की किस्म, कैंसर की सही स्थिति व शरीर के किस भाग में स्थित है, मरीज की उम्र, लिंग, शारीरिक अवस्था और वर्तमान कि समस्याओं के बारे में सूचना देनी थी। इसके बाद तुरन्त ही उसको अपने कम्प्यूटर पर, उस कैंसर विशेष के इलाज के लिए, देश के विभिन्न कैंसर सेंटरों में उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा सुविधाएँ और मरीज की उम्र, कैंसर व मरीज की शारीरिक स्थिति को देखते हुए इलाज के दौरान क्या-क्या समस्याएँ आ सकती हैं और उनके लिए क्या-क्या सावधानीयों लेनी पड़ेगी इत्यादि, सभी सूचनाएँ उसके कम्प्यूटर पर आ जाएंगी। केवल लगभग 12 प्रतिशत मामलों में, जिनके कैंसरों के इलाज के लिए फिलहाल यदि कोई ऐसी चिकित्सा ही संभव है जो अभी केवल प्रयोग के स्तर पर ही है तो, हमारा कम्प्यूटर उनको कोई चिकित्सा नहीं सुझाएगा बल्कि, केवल यह बताएगा कि, इसके इलाज सम्बंधित प्रयोग, कहाँ-कहाँ और कौनसे कैंसर सेंटरों में हो रहे हैं। इतना ही नहीं, अगले एक साल तक, पूछे गए कैंसर के मामले में यदि कोई भी नई खोज या चिकित्सा प्रणाली में कोई विशेष बदलाव होता है तो हमारा कम्प्यूटर स्वयं ही, फोन करके उस डॉक्टर को इसकी सूचना देगा।

इन सारी सूचनाओं को इकट्ठा करना और उनको कम्प्यूटर में डालना अपने आप में एक बहुत ही बड़ा कार्य था। हमको इस मंजिल तक पहुँचने के लिए केवल एक ही रास्ता दिखाई देता था और वह था नैशनल कैंसर इन्स्टीट्यूट का। यदि हमारी यह धारणा ठीक थी कि, यदि प्रत्येक कैंसर मरीज को निदान के तुरन्त बाद ही, एक उपयुक्त और व्यापक चिकित्सा सुविधा मिल जाए तो, कैंसर रोग से ठीक होकर बचने वालों की संख्या 42 प्रतिशत से बढ़कर 62 प्रतिशत हो जाएगी। उस दशा में 800,000 अमेरिका वासियों में से, जिनको प्रतिवर्ष कैंसर होता है, इस प्रोग्राम की सहायता से, कम से कम 160,000 लोगों के जीवन की रक्षा प्रतिवर्ष संभव हो पाएगी। ये परिणाम किसी भी प्रयास या खर्च की तुलना में अपने आप में बहुत ही बड़े थे।

इस सेवा के लिए, जिसमें एस0टी0डी0 कॉल का खर्चा, कम्प्यूटर उसके रख-रखाव का खर्चा और वापिस उत्तर देना का खर्चा सब मिलाकर केवल 10 डॉलर होगा। हमने इस योजना का प्रचार इस संदेश के द्वारा करने की सोची- “जिस किसी को भी यह विश्वास है कि उसके जीवन का मूल्य 10 डॉलर या उससे ज्यादा है तो वह अवश्य ही अपने डॉक्टर से जोर देकर यह कहेगा की उसके लिए, इस सेवा का उपयोग करे। मिलने वाली सूचना

को वह स्वयं भी पढ़कर अपने डॉक्टर से भी अपने कैंसर और उसके इलाज के बारे में खुलकर चर्चा करेगा। इस प्रकार उसका अपने कैंसर के सफल इलाज के लिए सभी उपलब्ध विकल्पों के बारे में पूरी जानकारी मिल जाएगी। यह आपके कैंसर से मुक्ति पाकर ठीक होने के लिए परम् आवश्यक है।”

यदि कोई डॉक्टर इस सेवा का उपयोग करने में झिझकता है, तो इसका केवल एक ही मतलब निकलता है कि, वह स्वयं को अपने मरीज के कैंसर के इलाज के बारे में, पूरे देश के डॉक्टरों और वैज्ञानिकों से भी, ज्यादा जानकार समझता है।

नवम्बर 1981 में मैं और ऐनेटी, नैशनल कैंसर इस्टीमेट्स के निर्देशक डॉक्टर डी विटा से अपनी इस परिकल्पित योजना पर, चर्चा करने के लिए मिले। हमारी पूरी बात सुनने के बाद हमारी परिकल्पना के प्रति, उनकी प्रतिक्रिया बहुत ही उत्साहवर्धक व सकारात्मक थी। उन्होंने कहा कि, उनके पूरे चिकित्सय जीवन काल के दौरान भी, कैंसर द्वारा होने वाली मौतों के दर में इतनी बड़ी कमी करने का, इससे अच्छा सुझाव या योजना उनके पास इससे पहले कभी भी नहीं था या उन्होंने हमें, अपनी पूरी सहायता का आश्वासन देते हुए, आश्वस्तित किया कि यह कार्य हो जाएगा।

क्योंकि, इस प्रोग्राम की एक बहुत बड़ी और व्यापक व्यवसायिक संभावनाएं भी हो सकती थी, अतः हमारे मन में यह भी डर था कि, कुछ लोग इस प्रकार की भ्रांति फैलाने की भी कोशिश कर सकते थे कि, यह सब हम केवल, कम्प्यू सर्व का, जोएच. एण्ड आर. ब्लॉक इंक की ही एक सहायक संस्था थी, व्यापार बढ़ाने के लिए ही कर रहे थे। इसलिए ऐनेटी और मैंने नवम्बर 1982 में एच. एण्ड आर. ब्लॉक इंक में अपना हिस्सा बेचना का निर्णय लिया और फिर, मैंने इस कम्पनी के निर्देशक बोर्ड से भी त्यागपत्र दे दिया। यह सब मैंने, इस योजना के प्रति, ऐनेटी और अपनी पूर्णनिष्ठा व समर्पणता की भावना, दर्शाने के लिए किया था।

पी डी क्यू सेवा 1984 से उपलब्ध है। मेरा सुझाव है कि कैंसर मरीज 1-800-4-Cancer पर संपर्क करके, अपने कैंसर विशेष की सही, परिस्थिति बताते हुए उसके बारे में आधुनिकतम व सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा प्रणाली के बारे में आवेदन करें या हमारी वेबसाइट [www.blochcancer.org](http://www.blochcancer.org) से भी पूरा विवरण ले सकते हैं। वे अमेरिका के किसी भी स्थान से इस सेवा का उपयोग कर सकते हैं। इससे आपके दिलो दिमाग को यह जानकर बहुत ही तसल्ली और शांति मिलेगी कि, आपके डॉक्टर द्वारा आपको दी जाने वाली चिकित्सा सर्वोत्तम है। यदि आपको इस विषय में कोई सवाल पूछने हों तो अपने डॉक्टर से पूछ सकते हैं।

इस धारणा और मान्यता को ध्यान में रखते हुए कि, शीघ्र, उचित और व्यापक इलाज और वह भी एक स्वस्थ सकारात्मक मनोदशा के साथ, अब हम आपसे मनोदशा के बारे में चर्चा करेंगे। अभी हॉल में ही, मेरे साथ जो कुछ घटित हुआ है, इससे मेरी मान्यता को और भी बल और विश्वास मिला है कि मानसिक मनोदशा का कैंसर के इलाज व ठीक होने की प्रक्रिया में, कितनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

आपको कोई गलतफहमी ना हो इसलिए, मैं जोर देकर कहना चाहूंगा कि, कैंसर को हराकर उस पर विजय प्राप्त करने के लिए छः मुख्य बिन्दुओं की आवश्यकता होती है और वे हैं— पहला सर्वोत्तम इलाज, दूसरा सर्वोत्तम इलाज, तीसरा चौथा और पाँचवा सर्वोत्तम इलाज और छटा एक स्वस्थ व सकारात्मक मनोदशा। बिना इन छ के छ बिन्दुओं के कोई भी कैंसर मरीज अपने कैंसर को कभी भी नहीं हरा सकता।

कैंसर हॉटलाइन सेवा शुरू करने के शुरुआती दौर में, हमारे सेंटर के दो वालिंटिरो को, जो अपने कैंसर से स्वस्थ होकर, सेंटर में आने वाली फोन कॉलो का जवाब देते थे, अपना यह कार्य बंद करना पड़ा था क्योंकि, वे रोज-रोज कैंसर से संबंधित बातों के जिक्र को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे थे। मैंने उसी वक्त एनेटी से कहा था कि, हॉलांकि उनके डॉक्टर इन वालिंटिरो को यह बता चुके कि ये अपने कैंसर से मुक्त हो चुके हैं परन्तु मेरे विचार से ये अभी भी पूर्णतया मुक्त होकर मानसिक तौर पर, उस पर विजय प्राप्त नहीं कर पाए हैं।

तब से अब तक उनमें से एक की तो कैंसर से मृत्यु हो चुकी है और दूसरे के कैंसर की भी पुनरावृत्ति हो गई है और उसका इलाज चल रहा है। मैं तभी भाँप गया था कि, वे दोनों अर्ध चेतन अवस्था में यह महसूस करने लगे थे कि शायद अपने कैंसर से मरना उनके भाग्य में ही लिखा था। यदि कोई किसी बात के बारे में बड़े विश्वास के साथ सोचता रहता है तो वह बात निश्चित तौर पर होकर ही रहती है।

मैंने, एक न्यूयार्क के चिकित्सक के साथ, जो कि हमारे सेंटर की नकल कर उसके जैसा ही, दूसरा सेंटर बनाने का इच्छुक था, एक महिला कैंसर मरीज से मिला। वह अपने कैंसर के बारे में किसी को कुछ भी नहीं बताना चाहती थी। वे चिकित्सक भी मेरी इस रॉय से सहमत थे कि यदि यह मरीज महिला शीघ्र ही अपनी मनोदशा को पूरी तरह नहीं बदल पाएगी तो, निश्चित तौर पर अपने कैंसर से मर जाएगी।

मैं, एक बहुत ही खुशदिल महिला कैंसर मरीज से मिला जो, अपने कैंसर से तीन बार लड़ चुकी थी। उसका कहना था कि उसकी मनोदशा और सोच बहुत ही सकारात्मक थी और उसे विश्वास था कि, वह इस बार भी अपने कैंसर को हराने में सफल हो जाएगी। एक बहुत ही अद्भुत और योग्य डॉक्टर उसका इलाज कर रहे थे। जब मैंने उनसे पूछा कि, क्या उसके डॉक्टर ने उसके बारे में एक आशाजनक भविष्यवाणी की है तब उसका उत्तर था कि, उसने इसके बारे में कभी पूछा ही नहीं, क्योंकि उसको डर था कि, पता नहीं वह क्या कहेगा? इसका अर्थ जो मैंने महसूस किया वो यह था कि आज भी इस महिला को अपने दिल की गहराईयों से यह विश्वास नहीं है कि वह अपने कैंसर को हरा पाएगी, अन्यथा। वह उस डॉक्टर, की बात अवश्य ही सुनना चाहती, जिसमें उसको पूर्ण विश्वास था। उसको कुछ मनोवैज्ञानिक सहायता की आवश्यकता थी।

स्वस्थ व सकारात्मक मानसिक मनोदशा व सोच के महत्व को महसूस करते हुए हमने अपने सेंटर के डॉक्टरों के पैनल में, दो मनोवैज्ञानिक एक मनोरोग चिकित्सक और एक समाजसेवक को रख लिया। उनका उद्देश्य था कि एक साधारण शब्दों में छोटा सा प्रश्नोत्तर तालिका बनाना था, जिसका मूल्यांकन भी किया जा सके। इसमें प्राप्त किये हुए अंक यह यह दर्शायेगें कि उस विशेष कैंसर मरीज को, कितनी मनोवैज्ञानिक सहायता की आवश्यकता है जो सफलता पूर्वक उसको अपने इलाज को, मानसिक तौर पर, ग्रहण करने के लिए प्रेरित करेगी।

नैशनल कैंसर इंस्टीट्यूट के, एक दल और ममौरिएल सोलन-कैटरिंग अस्पताल के दूसरे चिकित्सक दल की सहायता से, इस “पहेली” को बनाया गया है। यह पहेली, हमारी पुस्तक फाइटिंग कैंसर (कैंसर से जंग) में उपलब्ध है।

नैशनल कैंसर एडवाइजरी बोर्ड कि हर मीटिंग में कैंसर के इलाज और अन्य जानकारियों में, नाटकीय तौर पर होने वाली उपलब्धियों व सुधारों के बारे में बताया जाता है। यह सब कुछ इतनी तेजी से हो रहा है कि दिमाग चकरा जाए।

इस दिशा में होने वाली सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि, मोनोक्लोनल एंटीबॉडिज चिकित्सा पद्धति का उपयोग, ना केवल कैंसर के अतिशीघ्र निदान के लिए किया जाने लगेगा बल्कि, इसके द्वारा मानव शरीर के रोग प्रतिरक्षण क्षमता को ज्यादा सक्रिय करके, इम्यूनो थेरेपी पद्धति का उपयोग कैंसर की चिकित्सा में भी किया जाने लगेगा। इसमें इन्टरल्यूकेन-Interluken, इन्टरफ्यूरोन— Interfuron, ट्यूमर नैकरोसिस फैक्टर Tumer Necrosis Factors का प्रयोग करते हुए, शरीर के रोग प्रतिरक्षण तंत्र को मजबूत किया जाएगा और कैंसर का इलाज, बिना किसी विषैले दुष्प्रभाव के ही किया जाएगा।

हमें यह बताया गया कि, इस क्षेत्र में इतनी तेजी से बदलाव हो रहे हैं कि, जो योजनाएं आज से छः महीने पहले ही शुरू कि गई थी, वे भी आज पुरानी होकर लुप्तप्राय सी लगती हैं। निश्चित ही हमें सबसे बड़ी उम्मीद यही है कि, शरीर में केवल एक इंजेक्शन लगाने से ही, मनुष्य का रोग प्रतिरक्षण तंत्र ही इतना मजबूत और सक्रिय हो जाएगा कि वह स्वयं ही कैंसर का नाश कर सके।

मैं, इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि, यह जानते हुए भी आज उसके कैंसर विशेष के इलाज की कोई कारगर और सफल चिकित्सा पद्धति नहीं है तो भी हर मरीज को अपनी बीमारी के आगे हथियार नहीं डालकर उससे लड़ना चाहिए क्योंकि, आज नहीं तो कल, उसके कैंसर के लिए भी, सफल चिकित्सा की खोज हो ही जाएगी।

एनेटी और मुझे प्रतिदिन बहुत से लोगों के काफी पत्र मिलते हैं, जिनमें वे, हमें इस बात के लिए धन्यवाद देते हैं ओर आभार व्यक्त करते हैं कि, हमने उनका उनके कैंसर से जंग में विजय प्राप्त करने के लिए उनको प्रोत्साहित किया और सही दिशा का मार्गदर्शन दिया। हम उन सभी पत्रों का बहुत सम्मान करते हैं। ये हमारे लिए एक अमूल्य निधि के समान हैं। हमको मिलने वाला प्रत्येक पत्र, हमारे द्वारा किये जाने वाले प्रयासों का, सर्वश्रेष्ठ इनाम होते हैं।

सामान्यता, हम इन पत्रों के बारे में कोई बात करते नहीं हैं। लेकिन, उन पत्रों में से हम निम्नलिखित पत्र का अवश्य जिक्र करना चाहेंगे क्योंकि यह दो विशेष बातों को बहुत ही उज्ज्वलित ढंग से दर्शाता है। पहला कि, हम जिस व्यक्तियों की मदद करने के लिए सबसे ज्यादा संघर्ष करते हैं, वो वह व्यक्ति होता है, जो स्वयं ही पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ अपनी मदद करना चाहता है और जो सारी बाधाओं को नजर अंदाज करके अपने संघर्ष को जारी रखता है, चाहे वे बाधाएँ कोई भी और कौसी भी हो।

दूसरे, हम अपने आलोचकों के पत्रों का उत्तर अवश्य देते हैं, जो हम पर यह आरोप लगाते हैं कि, हम लोगों को झूठी उम्मीदों के सपने दिखाते हैं। मुझे भी बताया गया था कि मैं मरने वाला था और मेरे बचने की कोई उम्मीद नहीं थी पर आज मैं हूँ। आप ही फैसला किजिए कि, इस औरत को (सब नाम बदले हुए हैं) हमने उम्मीदें देकर क्या बुरा किया है।

इस पत्र के शुरू में छपा था, “जीवन एक चमत्कार है, और जीवित रहने का अधिकार एक सपनों के रिबन में लिपटा हुआ, भगवान का उपहार है”। चाहें आप जवान हो या बूढ़े, जीवन हमेशा चमत्कारों और आश्चर्यों से भरा होता है।

19 जुलाई, 1985

प्रिय डिक,

मुझे इस बात का बेहद अफसोस हुआ था कि, मेरे साथ क्या-क्या घटित हुआ यह तुम्हें बताने में, मैंने इतना समय लगा दिया। आप मेरे लिए बहुत ही दयालु, धैर्यवान और

मददगार रहे हो। ऐसा लगता है कि मैं तुमसे पहले भी कई बार बात कर चुकी हूँ। सरासोटा, जो वैसे तो एक बहुत प्यारी जगह है, परन्तु यह उस वास्तविक संसार से बिल्कुल कटा हुआ है, जिसमें अनुसंधान और शोध कार्य हो रहे हैं। यहाँ जैसा कल था, वैसा ही आज है। यदि आज जहाँ मुझे लाया गया है, अगर वहाँ नहीं आती तो शायद वही सरासोटा में, मैं अपने **Melanoma**-मैलानोमा-काले तिल के कैंसर से मरने के लिए छोड़ दी गई होती। परन्तु ऐसा नहीं हुआ, तो केवल हॉटलाइन, कैंसर इन्फोरमेशन सर्विस, बेसडा और एक लड़की के कारण। (क्योंकि मेरे कैंसर का इलाज करने वाले डॉक्टर ने, आपकी पीडीव्यू सेवा का उपयोग करने के लिए, स्पष्ट तौर से मना कर दिया था।)

नोट— कैंसर इन्फोरमेशन सर्विस ने इस महिला मरीज को टेलीफोन पर बताया था कि उनके कैंसर विशेष का इलाज करने के लिए उनके पास इतने सारे विकल्प मौजूद हैं जिनसे शायद पूरी टेलीफोन डायरेक्टरी भर जाएगी। लेकिन उसका इलाज करने वाले डॉक्टर ने कहा कि उसके पास इन सबको पढ़ने का समय नहीं था और इनमें से कोई भी किसी भी प्रकार से उसकी मदद नहीं कर सकता। उसको तो मरना ही है। परन्तु उस लड़की ने, जिससे कैंसर इन्फोरमेशन सेंटर में टेलीफोन पर बात की थी, मेरे को इस्टकोस्ट और दक्षिण में कई ऐसे सेंटरों के बारे में जानकारी दी, जहाँ पर मेरे कैंसर के इलाज के लिए अनुसंधान कार्य हो रहा था।

उस लड़की ने मुझे यूनिवर्सिटी ऑफ मियामी के डॉक्टर व्हाइट के बारे में बताया जिन्होंने हमको मियामी बीच-माउण्ट सेनी में, डॉक्टर ब्लैक के पास भेजा। डॉक्टर ब्लैक सामान्य सर्जरी और कैंसर विभाग के अध्यक्ष हैं। वे दो साल पहले तक सेंट लुईस के बारनेस कैंसर सेंटर के चीफ ऑफ स्टाफ रह चुके थे। वे पिछले तेरह साल से (उनकी उम्र अभी केवल 40 साल की है) तिल के कैंसर पर अनुसंधान कर रहे थे। वह इन्फ्यूनाइजेशन थेरेपी पर भी, ड्यूक और इमोरे के साथ काम कर रहे हैं।

मेरे पति, जैक, मेरे कैंसर चिकित्सक के ऑफिस में तीन घंटे तक बैठने के बाद ही, मेरे डॉक्टर ब्लैक को टेलीफोन करने के लिए मना पाए थे। अब देखिए, डॉक्टर ब्लैक ने मेरे पति जैक से तभी बात की थी, जब डॉक्टर व्हाइट ने उनको ऐसा करने को कहा था परन्तु, फिर भी वे मुझको उस वक्त तक मिलने को तैयार नहीं थे जब तक मेरा इलाज करने वाला कैंसर विशेषज्ञ डॉक्टर स्वयं उनसे इस विषय पर बात नहीं कर लेता।

हमारा डॉक्टर ब्लैक से अगले सप्ताह मिलने का समय तय हुआ। उन्होंने मेरा परीक्षण करके हम लोगों से एक लम्बी बातचीत की। उन्होंने मुझे बताया कि उनके पास 40 मैलेनोमा कैंसर मरीजों के इलाज पर प्रयोग करने के लिए एक योजना है, जिसको नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट अनुदान दे रहा है। मेरा नम्बर 37 वाँ होगा। मेरे ऑपरेशन से पहले एक सप्ताह तक उन्होंने मेरे विभिन्न चैक अप, एक्स-रे इत्यादि किए।

देश के शीर्षस्थ सर्जनों में से एक ने मेरा ऑपरेशन किया और डॉक्टर ब्लैक ने उनकी सहायता की। ऑपरेशन के बाद मेरी रिपोर्ट थी कि, स्केनिंग रिपोर्ट में जितनी भी कैंसर प्रभावित भाग देखे गए थे, उनको निकाल दिया गया था। और अब वह साफ है। मुझे ऐसा लगा था जैसे मेरे सिर का ही प्रत्यारोपण सफलता पूर्वक किया गया हो। कल हम वापिस मियामी जा रहे हैं, जहाँ मेरे टांके खोले जाएंगे और फिर अगले गुरुवार को वापिस आकर मैं अपना सामान्य चिकित्सा शुरू कर दूंगी। भगवान का लाख-लाख शुक्र है, इस सामान्य चिकित्सा के दौरान मुझे पहले तेरह सप्ताह तक प्रति सप्ताह एक खुराक दी जाएगी, और उसके बाद एक साल तक हर पंद्रह दिन के बाद। क्योंकि मैं वहाँ से काफी दूर रहती हूँ, इसलिए डॉक्टर ब्लैक ने यही के एक स्थानीय डॉक्टर से ही वह दवा की खुराक लेने की

अनुमति दे दी है। अब मुझे मियामी केवल हर तीन महिने के बाद जाना पड़ेगा। क्या यह वास्तव में ही बहुत प्यारी बात नहीं है!

सबसे अच्छा भाग? क्योंकि जब मैंने उनको अपनी आर्थिक समस्याओं के बारे में यह बताया कि इस वक्त मेरा कोई बीमा नहीं है तब उन्होंने मुझे एक मरीजों के शिक्षक के रूप में रख लिया। मुझे किसी भी बात का कुछ भी खर्चा नहीं देना पड़ा। क्या वास्तव में ही भगवान अद्भुत नहीं है। इतने लम्बे समय तक हमने दुर्भाग्य को देखा है। जिस डॉक्टर ने मेरा ऑपरेशन किया था, उसने कहा था, “स्यू, आंकड़ों को मत देखो, तुम कोई आंकड़ा नहीं बल्कि एक मानवीय जीव हो और तुम्हारी मनोदशा वाकई महान है”।

मैंने, रेबी गोल्ड को इस बात के लिए धन्यवाद देते हुए फोन किया कि, उन्होंने ही जैक और मुझको, हमारी शादी से एक रात पहले ही, तुमसे बात करने के लिए प्रेरित किया था। यदि मैंने आपकी बात नहीं सुनी होती और आपका सैंटर की पैम्पलेट पुस्तिका नहीं पढ़कर बीस महिने के बाद भी, तुमसे बात नहीं की होती तो, मुझे अब तक मृत्यु दंड मिल गया होता।

मैं आपके और ऐनेटी के प्रति, दिल से आभार व्यक्त करती हूँ, कि आप, मेरे जैसे कितने ही व्यक्तियों के लिए, जिनके लिए उम्मीदों के लिए हर रास्ते बंद हो चुके होते हैं, इतना कुछ कर रहे हैं। जब मैं घर गई तो आपकी किताब मेरा इंतजार कर रही थी। देखिए कितना सही संयोग था। इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं सी बी एस में पंद्रह साल तक रही हूँ। यहाँ मैंने तरह-तरह के कार्यक्रम जैसे इन्टरव्यू शो, समाचार, सिडिंकैटीय शो किये हैं। यदि आपको अपने किसी प्रोगाम को संचालन करने का, कभी भी मेरी किसी प्रकार की, सहायता महसूस हो तो मुझे बिना किसी लालच के, सेवा करने का अवसर अवश्य दें। मैं अपना शेष जीवन हॉटलाइन की सेवाओं को लोगों तक पहुँचाने में समर्पित करना चाहती हूँ और लोगो को यह संदेश देना चाहती हूँ कि, क्यों, किसी भी व्यक्ति को, किसी दूसरे की राय लेना भी, आवश्यक होता है।

आपको और आपकी पूरी टीम को मेरा प्यार और दिल से आभार! शायद तुमने भगवान के साथ मिलकर मुझको इस दुनिया में कुछ और समय रहने का मौका दिया है ताकि, लोग मुझसे और मैं दूसरों को प्यार कर सकूँ।

भगवान आपका भला करे।

आपकी  
स्यू



## सारांश एवं निष्कर्ष

हर बुरी चीज में कुछ ना कुछ अच्छाई छिपी होती है। इसका कोई गलत अर्थ मत लगा लेना। मैं। कभी भी नहीं चाहता था कि मुझे कैंसर हो जाए परन्तु, अब यह अतीत की बात है। मैं तो केवल इतना ही कह सकता हूँ कि इसके कारण आज मेरी जिन्दगी, पहले से बेहतर स्तर की हो गई है।

जब मैंने कैंसर का निदान हुआ था उस वक्त, मैंने और मेरी पत्नी ने अपनी पिछली 31 साल की शादी शुदा, खुशनुमा और अद्भुत जिन्दगी के बारे में, काफी कुछ सोचा था। अब मैं कह सकता हूँ कि यह मेरी पिछली जिन्दगी से कहीं ज्यादा बेहतर और खुशनुमा है। इस दौरान हमारे जो भी अच्छे-बुरे अनुभव थे, हम दोनो ने साथ मिलजुल कर बाँटे। उस वक्त हम लोग यही सोचते थे कि, हमारे पास इस शादी शुदा जिन्दगी के दिन, शायद बहुत ज्यादा नहीं है और शायद हमारा शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक सम्बंध भी, हमें मालूम नहीं था कि, कितने दिन तक रहेगा। इसी एक विचार ने, हम दोनों को एक दूसरे के, बेहद नजदीक लाकर, हमको इस बात के लिए प्रेरित किया कि, अब हम आगे का जीवन हर कैंसर मरीज को समर्पित कर देंगे।

मेरी तीनों बेटियों और मेरे दामादों के साथ मेरा सम्बंध, आज पहले से कहीं ज्यादा अर्थपूर्ण है। शायद यह इसलिए है कि, मेरी कैंसर की बीमारी ने उनको मेरे प्रति अपना प्यार और समर्पण की भावना दर्शाने और सिद्ध करने का भरपूर अवसर दिया था। शायद इसलिए भी कि, हम सबके लिए, उन साथ गुजारे हुए एक-एक पल की यादें एक अमूल्य निधि की तरह थी। हमारा रविवार के दिन होने वाला पारिवारिक रात्रि भोज पहले भी एक सामान्य और बहुत ही आनंददायक कार्यक्रम होता था परन्तु, आज इस अवसर पर जब हम साथ होते हैं, वह समय पहले से कहीं ज्यादा सार्थक होता है और हम एक-दूसरे के प्रति आभार की भावना के साथ होते हैं। आज मेरे दामादों के साथ, मेरा साप्ताहिक खेलने का प्रोगाम, शायद कोई बहुत ही विशेष कारणों से टलता है।

मेरी जिन्दगी का हर दिन, आज पहले से कहीं ज्यादा, परिपूर्ण और सार्थक है। आज मैं हर चीज का आनंद लेता हूँ और किसी भी चीज के बारे में यह नहीं मानता कि, यह मुझे हमेशा मिलती ही रहेगी। हो सकता है, जिन्दगी के प्रति, मेरा दृष्टिकोण पहले से कहीं ज्यादा संकुचित हो गया हो। जीवन के छोटे-छोटे कार्य जैसे- पेड़ों के पत्तों को रंग बदलते हुए और उनको गिरते हुए देखना, अपने पोते-पोतियों, नाते-नातियों के साथ हाथ पकड़कर टहलना और खेलना, किसी नई कार खरीदने के लिए आर्डर देना या टी0वी0 पर कोई अच्छा कार्यक्रम देखना इत्यादि, ये छोटी-छोटी सी घटनाएँ ही, पहले से कहीं ज्यादा आनंददायक बन गई है।

इन सबसे मैं क्या निष्कर्ष निकाल सकता हूँ, जो, आप पर भी लागू होकर, आप के लिए भी सहायक हो सके। सबसे पहले तो यह मत सोचना कि क्योंकि, कैंसर की बीमारी काफी आम होती जा रही है, यह आपको भी अपना शिकार बनाने वाली है। हाँलाकि, आंकड़ों के अनुसार, कोई भी अमेरिका वासी, अपने पूरे जीवनकाल में, दो मे से एक पुरुष और तीन में से एक महिला इसका शिकार हो सकते हैं। परन्तु आप कोई आंकड़े नहीं बल्कि, एक मनुष्य हैं। यदि आपके मन में कैंसर के बारे में कोई विचार आता भी है तो, याद रखें कि, कैंसर जितने व्यक्तियों को होता है, उससे ज्यादा को नहीं होता है। और यदि आपका नाम, उन तुलनात्मक कम लोगों में, आ भी जाता है तो भी, आपके पास अपने कैंसर को हराकर, उस पर विजय प्राप्त करने के, बहुत अच्छे अवसर हैं। कैंसर चिकित्सा और इसकी दवाइयों के क्षेत्र में निरन्तर होने वाले सुधारों के कारण, आपके ठीक होने के अवसर, मुझसे कहीं ज्यादा होंगे, जब मुझे कैंसर हुआ था।



डॉक्टर विन्सेंट टी० डी विटा, नैशनल कैंसर इस्टीमेट्स के भूतपूर्व निर्देशक के अनुसार, 1970 में पूरे अमरीका में सौ से भी कम कैंसर विशेषज्ञ थे। आज इनकी संख्या 8000 से भी ज्यादा है। इससे एक अंदाजा लगता है कि, कैंसर चिकित्सा क्षेत्र में कितनी तेजी से निरन्तर सुधार हो रहा है।

कुछ लोगों का ऐसा भी मानना है कि, कैंसर दिमागी सोच के कारण होता है। हम भी, शोध किये हुए आंकड़ों के अनुसार, इस बात को मानते हैं कि, किसी भी दुखदाई घटना जैसे कि, अपने किसी प्रिय को खोना, नौकरी से रिटायरमेंट, व्यापार में घाटा इत्यादि के बाद, कैंसर होने के मामलों में बहुत ही नाटकीय ढंग से वृद्धि हो जाती है।

तर्क की दृष्टि से तो इस बात को मानना सुरक्षित ही रहेगा कि, कैंसर के बारे में चिंता करना भी, कैंसर होने का एक कारण हो सकता है। इसका यह कहने का अर्थ कदापि नहीं है कि, हो ही जाएगा।

मेरा विश्वास है कि कैंसर होना किसी भी एक कारण या कार्य नहीं होता है। मेरे पिताजी ने 95 साल की उम्र में मरने तक धूम्रपान किया, परन्तु उनको कैंसर नहीं हुआ। दूसरी तरफ मैंने किया और मुझे फेफड़ों का कैंसर हो गया। इसलिए मेरी निजी तौर पर विश्वास है कि, कैंसर होने के दो या ज्यादा भी कारण हो सकते हैं। उदाहरण के लिए सिगरेट में कार्सिनोजिन जो कि एक कैंसर का कारण होता है और कोई सदमा या आघात वगैरा। इसलिए, सौभाग्य से यदि, आपको अभी तक कैंसर नहीं हुआ है तो, अपने विचारों पर नियंत्रण रखकर संभवतया, आप इसके होने की संभावनाओं को अवश्य कम करेंगे।

पिछले कई सालों में मिलने वाली फोन कॉलों से मैंने पाया है कि, हमारे पैनल पर आने वाले ज्यादातर कैंसर मरीजों के कैंसर का प्रथम निदान किसी बाहरी जरिऐ से नहीं बल्कि, केवल उनके सामान्य चिकित्सय परीक्षण या उनके स्वयं के द्वारा ही परीक्षण के दौरान ही किया गया था। इससे, मैं तो केवल यही बात पर जोर देकर कहूंगा कि, इससे आपकी चिकित्सक द्वारा नियमित जाँच कराने और उनके सुझाव अनुसार स्वयं ही अपनी जाँच करने के महत्व का पता चलता है।

यदि, आपको अपने शरीर के किसी विशेष भाग में किसी किस्म का खिचाव या दर्द महसूस होता है या कोई गॉठ जैसी लगती है, तो यह मत सोचिए कि, आपको कैंसर हो गया है। तुरन्त अपने डॉक्टर को दिखाएँ, अपने डर और चिंता के बारे में उनको बताएँ और यदि वे कहते हैं कि, यह कैंसर नहीं है तो उनकी बात पर विश्वास करिए। ध्यान से उनकी बात सुनें कि यह क्या है, इसका क्या इलाज है और यह कितने दिन में ठीक हो जाएगा। अगर सब कुछ वैसा ही होता है, जैसा आपके डॉक्टर ने बताया है, तो फिर आपके दिलो-दिमाग में किसी किस्म की चिन्ता नहीं रहनी चाहिए। मेरे कैंसर के मामले में, जो दो डॉक्टरों द्वारा गलत निदान हुआ था, उसको कोई नियम मत बनाईये, यह केवल एक अपवाद ही था। अपने डॉक्टरों के बारे में अपने दिलो दिमाग में किसी किस्म की कोई गलत धारणा ना रखें।

अपने लक्षणों की तुलना किसी अन्य के लक्षणों से कभी भी ना करें। आपकी अपनी ही एक पहचान है, और केवल आपके डॉक्टर ही बता सकते हैं कि, आपके शरीर के इन लक्षणों का आपके लिए क्या अर्थ है। मुझे कई लोगों ने फोन करके पूछा था कि, उनके कंधे और हाथ में भी बिल्कुल वैसा ही दर्द था जैसा उस वक्त मेरे को था। उनके डॉक्टर के आश्वस्त करने के बाद भी उनको विश्वास था, कि उनको भी, मेरे जैसा ही कैंसर था। जैसा कि मैं पहले भी बता चुका हूँ कि, कैंसर का हर मामला, अंगुलियों के निशानों की तरह अपने

आपमें केवल एक ही होता है। एक बार यदि आपका डॉक्टर ने यह कह दिया है कि यह कैंसर है या कैंसर हो सकता है तो तभी और उसी वक्त दृढ़ निश्चय के साथ फैसला कर लें कि, आप अपनी तरफ से इस पर विजय प्राप्त करने के लिए अपना यथा शक्ति सर्वोत्तम प्रयास करेंगे। इसमें सबसे पहली बात तो यह है कि, कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखेंगे। कभी भी ऐसा मत सोचिए या पूछिए कि, “डॉक्टर ने इसका निदान पहले क्यों नहीं किया? या, पिछले महिने जब मैंने पहली बार इसको देखा तभी मैंने कुछ क्यों नहीं किया? या मेरी पत्नी ने मुझे सिगरेट पीने से रोका क्यों नहीं? या—या—या—??”

हर आदमी के पास एक सीमित ही उर्जा होती है। इस बहुमूल्य उर्जा को पीछे मुड़कर देखने और इन फिजूल के प्रश्नों में ना गवाएँ। बल्कि, इसको सहेजकर इसका उपयोग सकारात्मक कार्य जैसे कि— तुरन्त सही और व्यापक चिकित्सा इत्यादी में ही करें। अभी इसी क्षण से ही अपना हर सम्भव यथा शक्ति सर्वोत्तम प्रयास शुरू कर दें। क्योंकि, फिर शायद आपको पीछे मुड़कर देखने और यह कहने का भी शायद मौका ना मिले कि, “काश! मैंने यह.....!” कोई भी बिन्दु अगर सबसे नाजुक और महत्वपूर्ण है तो वह है, केवल और केवल तुरन्त कार्यवाही। जैसा की कहा जा चुका है कि, आमतौर से लोगों को अपने कैंसर का पता उनकी सामान्य जाँच प्रक्रिया के दौरान ही चलता है। तब तक वे शायद अपने आपको काफी हद तक स्वस्थ ही महसूस कर रहे थे। जब सब कुछ सामान्य चल रहा हो और किसी भी किस्म की कोई समस्या नहीं आ रही हो तो, किसी भी चीज को टालने में, किसी को भी विशेष चिन्ता नहीं होती। आप भी अपने डॉक्टर के पास आने से एक घंटा पहले तक शायद यही कर रहे थे। इन तीन छोटे-छोटे शब्दों— “आपको कैंसर है” का इस वाक्य में अनुवाद इस रूप में करना कि, “आपको एक ऐसी बिमारी है, जो प्राणघातक हो सकती है”, अपने आप में एक बहुत ही कठिन कार्य है।

आपका कैंसर जितना आज के दिन इलाज के काबिल है, उतना भविष्य में कदापि नहीं होगा और भविष्य में एक स्थिति के बाद तो शायद यह इलाज के काबिल भी नहीं रहेगा। अब वह सीमा आज से एक साल के बाद आएगी या एक महिने के बाद आएगी या कल ही आ जाएगी, यह कोई नहीं जानता। किसी भी हालत में इलाज को टालना केवल हो गये नुकसान को बढ़ाना ही है। आज ही अपने लिए उपयुक्त डॉक्टर की तलाश करके अपनी चिकित्सा शुरू कर दें। यदि वे कुछ और जाँच कराना चाहते हैं तो जितना जल्दी हो सके उनको करवा लें। यदि, वह किसी विशेष चिकित्सा को शुरू करने के लिए कहते हैं, तो उसी दिन से शुरू कर दें। कैंसर के मामले में एक दिन इधर या उधर का मतलब कैंसर के इलाज में सफलता या असफलता भी हो सकता है।

इस बात पर, मैं डॉक्टरों को भी उनके मरीज के प्रति जिम्मेवारियों का अहसास दिलाना चाहूँगा कि, वे मरीज को उसकी बिमारी के बारे में, कि उसे कैंसर है, पूरी ईमानदारी के साथ स्पष्ट तौर पर बता दे। यदि कोई डॉक्टर अपने मरीज के साथ इस मामले में पूरी तरह ईमानदार है तो, मैं कभी भी उस डॉक्टर को दोषी नहीं ठहराऊँगा। मैं उन नगण्य डॉक्टरों से बिल्कुल भी सहमत नहीं हूँ जो, ईमानदारी और स्वयं को भगवान समझने की इच्छा के फर्क में अप्रत्यक्ष रूप से भ्रम पैदा करने की कोशिश करते हैं। यदि कोई डॉक्टर यह कहता है कि, उसके मरीज का कैंसर लाइलाज है, तो वास्तविकता में तो वह यही कह रहा होता है कि, उसे स्वयं को इस कैंसर का इलाज मालूम नहीं है। ऐसा संभव ही नहीं हो सकता कि, उसे निश्चित तौर पर इसके बारे में पूरी जानकारी हो कि, अमेरिका या संसार के अन्य देशों के कैंसर सैंटरों में, आज के दिन इस तरह के कैंसर के मामलों में क्या किया जा रहा है। मुझे उस डॉक्टर के बारे में कही किसी तरह की कोई आपत्ति नहीं होगी जो, अपने मरीज को यह कहता है कि, उसको निजी तौर पर इस वक्त इस तरह के कैंसर के बारे में नहीं मालूम या यह कहता है कि, उसने आज से पहले किसी को भी इस तरह के कैंसर को हराकर उस पर विजय प्राप्त करते हुए नहीं देखा है। फिर भी वह अपने

मरीज को, किसी और ज्यादा योग्य व जानकार डॉक्टर या कैंसर सैंटर जाने का सुझाव देते हुए, इस संदर्भ में टेलीफोन वगैरा भी करता है।

यदि, कोई डॉक्टर अपने मरीज को कहता है कि, उसके पास केवल तीन से छः महिने का समय है या इसी तरह की कोई समय सीमा तय करता है, तो वास्तव में वह भगवान का काम करने की कोशिश कर रहा है। यदि वह मरीज को अपने आंकड़ों के ज्ञान से किसी को प्रभावित करना चाहता है तो, उनको अपनी बात, आंकड़ों के साथ कहनी चाहिए। इतना ही नहीं, इन आंकड़ों के साथ, उनको मरीज को यह भी ईमानदारी से बताना चाहिए कि, कोई मरीज केवल एक आंकड़ा नहीं होता। आंकड़े, एक काफी सारे लोगो पर आधारित एक लम्बी अवधि के दौरान किसी सर्वेक्षण के द्वारा इकट्ठे किये गये होते हैं। यह सम्भव है कि, जिस दौरान ये आंकड़े इकट्ठे किये गये थे तब, बहुत से ऐसे चिकित्सा विकल्प उपलब्ध नहीं हो सकते होंगे जो शायद, आज भी की तारीख में उपलब्ध है, और यह भी कि, इन आंकड़ों में वे मरीज भी शामिल हो सकते हैं, जिन्होंने अपना इलाज, अपने निदान के फौरन बाद, सही तरीके से, व्यापक तौर पर नहीं करवाया होगा या अपने स्वयं के यथा शक्ति सर्वोत्तम प्रयास नहीं किये होंगे। सर्वेक्षण द्वारा संग्रहित इन आंकड़ों को केवल एक मार्गदर्शन के रूप में ही देखा जाना चाहिए। ये किसी भी व्यक्ति विशेष पर लागू नहीं हो सकते क्योंकि ये केवल औसत पर आधारित होते हैं। इसलिए किसी भी मरीज के बारे में भविष्यवाणी उसकी जीने के प्रति और स्वस्थ होने के प्रति निष्ठा, दृढ़ निश्चय और सर्म्पण पर आधारित होगी।

मैं डॉक्टरों से यह भी निवेदन करना चाहूँगा कि, मरीजों को उनके कैंसर के बारे में उनको सूचना देते समय थोड़ा उनकी मानसिक मनोदशा के बारे में ध्यान रखें। यह बहुत आवश्यक है कि, उनको पूरी ईमानदारी के साथ सब कुछ सत्य ही बताना चाहिए पर थोड़ी विनम्रता के साथ, यह ध्यान अवश्य रखे कि, वह पूर्णरूप से निराश ना हो जाए।

शायद इन छोटे से शब्दों का अप्रत्यक्ष रूप में बहुत गहरे अर्थ है। मैं पूरे पाँच दिन पूर्णतया नाउम्मीद होकर जीया था और मैं यह बात पूरे विश्वास के साथ कहना चाहूँगा कि, ये पाँच दिन, मेरी पूरी चिकित्सा या सभी जाँच प्रक्रियाओं और दवाईयों के भंयकर दुष्प्रभावों से भी कहीं ज्यादा वेदनापूर्ण थे।

जब हम उम्मीदों के विषय पर हैं तो, आईए इन उम्मीदों का, कैंसर के सफल इलाज में योगदान के बारे में भी चर्चा करें। उम्मीदों से दो संभावनाएँ हो सकती है। एक तो यह कि, उम्मीदें मरीज के जीवन काल की अवधि बढ़ा सकती है या नहीं बढ़ा सकती। बहस के लिए, हम यह मान लेते हैं कि उम्मीदों से जीवन की अवधि और बेहतर जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इस पर तो किसी के दिमाग में कोई प्रश्न नहीं उठना चाहिए कि उम्मीदों से जीवन शैली तो बेहतर होती ही है। यदि किसी व्यक्ति के लिए यह पूर्व निर्धारित भी है कि, वह इस दुनिया में एक निश्चित अवधि के लिए ही जीएगा, तो भी कोई व्यक्ति, कम से कम उस अवधि के दौरान तो एक बदतर जीवन शैली के स्थान पर बेहतर जीवन शैली से ही जीना चाहेगा। और आगे भी, कम से कम एक बेहतर जीवन शैली, किसी के भी जीवन की अवधि को कम तो नहीं कर सकती ना। इसके विपरीत यह केवल केवल सम्भव ही नहीं बल्कि सम्भावित है कि एक बेहतर जीवन शैली निश्चित ही किसी भी मनुष्य के लिए शारीरिक व मानसिक दृष्टि से अच्छी होती है।

इसलिए, यदि कोई डॉक्टर किसी भी मरीज से उसकी उम्मीदे छीन रहा है तो, वह उस मरीज को विनाश के कगार पर ही ले जा रहा होता है। जब कोई डॉक्टर, पूरी ईमानदारी के साथ किसी मरीज को झूठी तसल्ली नहीं, पर व्यवहारिकता पूर्ण उम्मीदे देता है, तो वह निश्चित तौर पर उस मरीज के मन में अपने जीवन के लिए संघर्ष करने की इच्छा शक्ति

जागृत करने में सहायता करता है, और इस प्रकार उसकी जीवन की अवधि के बढ़ने की संभावनाओं को बढ़ाता है।

जहाँ तक पूर्णतया ईमानदारी के विषय का सम्बंध है, मेरे को कई डॉक्टरों से यह शिकायत है कि, आमतौर से वे अपने मरीज को वही कहते हैं, जो शायद वह अपने डॉक्टर से सुनना पंसद करता है ना कि पूरा सच। उदाहरण के लिए, यदि कोई सर्जन कहता है कि, “मैंने इसको पूर्णतया निकाल दिया”, तो ईमानदारी से उसका अर्थ यही निकलता है कि, ऑपरेशन के दौरान जो कुछ भी कैंसर ग्रसित भाग उसको दिखाई पड़ा, उसने निकाल दिया। जरा सोचिए कि, दस लाख कैंसर कोशिकाओं का सामूहिक आकार एक आलपिन के सिर से भी कम होता है, और यह बड़ी आसानी से रक्त प्रवाह के साथ पूरी शरीर के नाड़ी तंत्र में घूमती रहती है। ये शरीर के किसी भी कोने या दरार में छिपी रहकर सर्जन की निगाहों से बच सकती है।

और, यह भी सत्य है कि, कोई भी डॉक्टर जब तक कि, वह आज की तारीख में इस वक्त तक, जितने भी चिकित्सा पद्धतियां व जाँच के टैस्ट उपलब्ध हैं, उन सबका पूरी गहनता से अध्ययन ना कर ले, वह मरीज के बारे में कोई भी पूर्णरूप से ईमानदार हो ही नहीं सकता। 23 अक्टूबर 1981 को, नैशनल कैंसर इंस्टीट्यूट द्वारा जारी एक विज्ञप्ति— कम्प्यूनिटी क्लिनिक ऑनक्लोजी प्रोगाम, में कहा गया है कि, “प्रयोगात्मक प्रोगामों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जितने दस्तावेजों की आवश्यकता होती है वे दस्तावेज 12 प्रतिशत से भी कम कैंसर मरीजों के पास नहीं होते”। इससे एक अंदाजा लगता है कि, किसी भी नई कैंसर चिकित्सा पद्धति के प्रयोग के लिए आवश्यक उन मरीजों की, जिनके कैंसर के इलाज की अभी तक कोई भी सफल चिकित्सा पद्धति उपलब्ध नहीं है, अपने आप में कितनी जटिल होती है, और इतनी जटिल प्रक्रिया से प्राप्त परिणाम कितने चिकित्सकों को मालूम होंगे, यह भी अपने आप में एक बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह है।

किसी भी कैंसर मरीज के लिए, यह बहुत आवश्यक है कि, वह अपनी चिकित्सा प्रक्रिया में दिल से संलग्न हो। यदि आपकी टांग टूट जाती है, तो वह कुछ दिनों में शायद खुद ही जुड़ जाती है। यदि आपको सर्दी, जुकाम हो गया है तो, चाहे कितनी भी दवा ले लें, यह सात दिन तक तो रहेगी ही। परन्तु कैंसर के मामले में, यह बिमारी इतनी जटिल होती है कि, बहुत सारी दवाईयों और चिकित्सा पद्धतियों को एक साथ लेने के बाद भी, आप चुपचाप बैठकर यह उम्मीद नहीं कर सकते कि यह अपने आप ही चली जाएगी। हॉलाकी, काफी सारे ऐसे काफी सारे ऐसे मामलों के दस्तावेज हैं जिसमें कैंसर अपने आप ही कम हो जाता है, और बिना किसी विशेष चिकित्सा के ही, कैंसर का फोड़ा स्वतः गायब हो जाता है। परन्तु इस तरह की घटना बहुत ही दुर्लभ होती है और अपनी सारी उम्मीदे केवल इसी पर आधारित करके, चुपचाप बैठना अपने आप में ही मूर्खता होगी। अपने इलाज में पूर्णतया लिप्त हो जाएं। जो कुछ भी जानकारी आपके कैंसर में मिलती है, उसे ध्यान से पढ़ें। बार—बार प्रश्न पूछें। डॉक्टर जो भी आपको इलाज करने के बारे में कर रहा है, उसके बारे में बार—बार प्रश्न पूछें कि, ये क्यों और कैसे होगी इत्यादि? इसी तरह के सवाल, अपने मनश्चिकित्सक, खुराक, प्रार्थनाएं, विटामिन्स लेना या कोई भी ऐसी चीज जिनके बारे में डॉक्टर आपको आश्वस्त करता है कि, इससे आपको कोई नुकसान नहीं होने वाला है, के बारे में पूछते रहिए। किसी ऐसे डॉक्टर को ढूंढिए जिसने आपके जैसे ही कैंसर का इलाज सफलता पूर्वक किया हो। जो वो कहते हैं, वो ध्यान से सुनें।

याद रखें, आपका एक मात्र लक्ष्य केवल अपने कैंसर को मार कर हराना है। इसके सिवाय किसी भी चीज या किसी के बारे में भी चिन्ता मत करिए। पूर्णतया स्वार्थी बन जाईये। अपने मन के अंदरूनी डर और आशंकाओं को अपने अन्दर ही अन्दर रखकर, घोटने का प्रयास ना करें। अपने विचारों, अपनी भावनाओं और आशंकाओं के बारे में खुलकर अपने

मित्रों और परिजनों के साथ चर्चा करें। इससे ना केवल आपको सहायता मिलेगी, बल्कि उनको भी आपके स्वस्थ होने की प्रक्रिया का एक आवश्यक और प्रभावशाली अंग बनकर, बहुत खुशी महसूस होगी। यह सब आपको बस खुलकर और ईमानदारी से करना है ना कि बार-बार हर समय इसकी रट ही लगाते रहना है। अपनी दिल की भडास निकालकर अपने आपको हल्का महसूस करना एक बात है, और हर वक्त हरेक के सामने अपनी परेशानियों व दुःखों का रोना रो के उनको परेशान करना, एक अलग ही बात है।

हमारे कैंसर चिकित्सा पैनल में हमने पाया है कि, कैंसर के इलाज में शायद यदि, कोई एक सबसे बड़ी रुकावट है तो वह है, डॉक्टर और चिकित्सा के बीच में सूचना के आदान-प्रदान या प्रश्नोत्तरों की प्रक्रिया की विफलता। यह कोई इकहरी धार वाली छुरी नहीं बल्कि, एक दुधारी तलवार की तरह होती है। किसी भी मरीज के लिए यह बहुत आसान होता है कि डॉक्टर ने उसे ऐसा कहा ही नहीं या डॉक्टर ने उसे क्यों नहीं बताया। इस विशेष परिस्थिति में डॉक्टर की परेशानी समझ सकता हूँ। वे मरीज को अनावश्यक जानकारीयां देकर उसके दिमाग पर बोझ नहीं बढ़ाना चाहते; वे बहुत सारी संभावनाओं या जानकारीयों के बारे में शायद यह भी सोच सकते हैं कि, मरीज को इसके बारे में पहले से ही जानकारी होगी। दूसरी तरफ, मैं तो इस चीज पर विश्वास करने लगा हूँ कि, अनावश्यक या बुरे प्रश्न जैसी कोई चीज होती ही नहीं है। केवल उत्तर ही बुरा हो सकता है। यदि आप अपनी बिमारी या इलाज के सम्बंध में कुछ भी जानना चाहते हैं तो, कोई भी कारण नहीं है कि, आप इसके बारे में डॉक्टर से प्रश्न ना पूछ सकें। आमतौर से तो, किसी भी डॉक्टर को आपके हर एक प्रश्न का विस्तार से उत्तर देने में बड़ी प्रसन्नता होती है।

अपने डॉक्टर से मिलने से पहले, एक कागज-पैन से लेकर, उन सभी प्रश्नों को लिख लें। जिनका उत्तर आप अपने डॉक्टर से चाहेगे या जो कुछ भी आपको परेशान या चिंतित कर रहा है, उन सबको लिख ले। जब तक डॉक्टर द्वारा दिया जाने वाला उत्तर आपको पूरी तरह से समझ नहीं आ जाए, आप बार-बार उसको पूछते रहिए, जब तक आपकी संतुष्टी ना हो जाए। मुझे आज तक एक भी डॉक्टर नहीं मिला जिसको यह तरीका पंसद ना हो। मैं उस डॉक्टर से कभी भी अपना इलाज नहीं करवाना चाहूंगा, जिसको मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं देना चाहता या नहीं देता।

एक प्रसिद्ध कहावत है कि, “यदि कोई सबसे बुरी चीज, जिससे हमें डरना चाहिए, वह केवल डर ही होता है”। कैंसर के मामले में, मैं इसमें थोड़ा बदलाव करना चाहूंगा कि, “सबसे बुरी चीज जिससे हमें डरना चाहिए, वह है अज्ञात-अन्जाना”। जब मैंने रैडियोथेरेपी विभाग में उन लोगों को देखा जिनके शरीर पर लाल रंग की लाइनें खिंची हुई थी या जब मैंने रैडिएशन देने वाली मशीन को देखा तो मैं मृत्यु के डर से कॉप उठा था। परन्तु अपनी पहली रैडिएशन चिकित्सा के बाद, जब मैंने देखा कि, इससे मुझे एक फोटो खींचवाने से ज्यादा परेशानी नहीं आई तो, मैं आगे की चिकित्सा बड़ें विश्वास से लेने लगा। यदि कोई चीज आपको चिंतित कर रही है तो, किसी ऐसे आदमी से बात करिए जो पहले इसका अनुभव कर चुका हो अथवा अपने डॉक्टर से पूछिए। ऐसा करने से आप बहुत सी अनावश्यक चिंताओं और आंशकाओं से बच जाएंगे। चिन्ता एक झूलती हुई कुर्सी कि तरह होती है, जो आपको हमेशा व्यस्त तो रखती है पर कहीं लेकर नहीं जा सकती।

जिसके बारे में हम सबसे ज्यादा चिंतित रहते हैं, वह चिकित्सा के दौरान दी जाने वाली बहुत सी दवाईयों के विषैले दुष्प्रभावों के बारे में रहती है। इसको कई भागों में बांटा जा सकता है। पहले तो उस प्रकार के व्यक्ति जो यह कहते हैं कि, वे रैडिएशन थेरेपी से इलाज नहीं कराएंगे, क्योंकि उसके दादाजी इस चिकित्सा के दौरान बुरी तरह से झुलस गए थे। इसका जवाब यह है कि, तब से अब तक हम बहुत आगे आ चुके हैं और आज वैज्ञानिकों और डॉक्टरों ने इस चिकित्सा को केवल अनुमानों पर आधारित ना छोड़कर पूरी

तरह से वैज्ञानिक बना दिया है। जो लोग किमोथैरेपी को इस डर से नहीं लेना चाहते क्योंकि, उनको डर है कि, इसके दौरान दी जाने वाली दवाइयों के दुष्प्रभाव से, उन्हें भविष्य में दिल से सम्बंधित समस्याएँ आ सकती है या दूसरी अन्य तरह की कठिन व कष्टदायक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है वे शायद इस बात को नहीं महसूस कर रहे कि, आज के वैज्ञानिकों और डॉक्टरों को यह निश्चित तौर पर मालूम है कि, कोई भी मनुष्य बिना किसी विषैले दुष्प्रभाव के कितनी दवा की मात्रा सहन कर सकता है।

दूसरा यह कि, हमारे अखबार भी अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए उसमें कैंसर की चिकित्सा के दौरान किसी ना किसी बुरे प्रभाव के बारे में कहानियां छापते रहते हैं। याद रखे कि, अमरीका में रहने वाले पचास लाख निवासी ऐसे हैं, जिनको कभी कैंसर हुआ करता था और वे आज उससे मुक्ति पाकर स्वस्थ होकर घूम रहे हैं। हो सकता है, अखबारों के ये लेख किसी एक विशेष डॉक्टर के बारे में हो जिसने शायद गलती से या किसी अन्य कारण से या पैसो के लालच में कोई ऐसी दवाई का प्रयोग किया, जो मरीज के लिए हानिकारक थी। इन फिजूल की डरावनी कहानियों के कारण, कैंसर को हराकर अपने जीने के अवसरों को अस्वीकार मत करिए। सुनिश्चित करिए कि आप किसी ऐसे डॉक्टर से इलाज कराएँ, जो वास्तव में योग्य हो और आपके सफल इलाज के लिए पूरी तरह समर्पित हो।

एक मध्यम उम्र की महिला, कैंसर ट्रिटमेंट पैनल के पास आई, उसे पेट से सम्बंधित कैंसर था। उसके मामले में गहनता से अध्ययन करने के बाद पैनल के डॉक्टरों ने उसको बताया कि, उसको केवल एक दवा की गोली रोज खानी ही काफी रहेगी क्योंकि, उसके कैंसर के स्वतः कम होकर लुप्त हो जाने के काफी अच्छी सम्भावना थी। उन्होंने उसको आश्वासन दिया, कि यह दवा केवल इतनी ही साधारण है, जैसे की उसने कोई ऐस्प्रिन की गोली खाई हो। महिला ने पूछा, “क्या इस चिकित्सा का नाम किमोथैरेपी है।” और जब डॉक्टरों ने इसका जवाब हाँ में दिया, तो उसने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में कहा की वह किसी भी हालत में किमोथैरेपी नहीं कराएगी। उसने अखबारों या अन्य पत्रिकाओं में इसके विरुद्ध बहुत कुछ पढ़ा था और वह अपने शरीर पर इन दवाओं का अत्याचार नहीं होने देगी। उस महिला को ऐस्प्रिन या कोई दूसरी दवा लेने में कोई आपत्ति नहीं थी, परन्तु किमोथैरेपी कदापि नहीं।

डॉक्टरों ने उसे बड़ी धैर्यता पूर्वक समझाया कि, बहुत हद तक इस दवा के लेने से उस पर किसी किस्म का कोई भी असुविधाजनक प्रभाव नहीं पड़ेगा, और इसको नहीं लेने का मतलब होगा कि, उसका कैंसर बढ़ते-बढ़ते प्राणघातक स्थिति तक पहुँच जाएगा। झुझलाहट भरी हैरान करने वाली बात यह थी कि, डॉक्टरों ने उसे स्वतः कैंसर मुक्त होने की लगभग गारंटी भी दे दी थी। बहुत समझाने के बाद आखिर में, वह औरत दवा की गोली खाकर जीने के लिए तैयार हो पाई थी। यह सोचते हुए भी बड़ी शर्म आती है कि इस प्रकार के बचकाने और मूर्खतापूर्ण लेखों से किसी मनुष्य की जान भी जा सकती है। मैं आशा करता हूँ, कि भविष्य में, समाचार पत्र कुछ भी छापने से पहले उस लेख की विश्वसनीयता पर, उससे सम्बंधित लोगों के स्वार्थ और उस लेख से मिलने वाले मुख्य अर्थ के बारे में गहराई से छानबीन करेंगे।

जबकि हम इस विषय पर हैं, इस बात को निश्चित करें कि जो डॉक्टर आपकी चिकित्सा का निर्धारण कर रहे हैं, वे कैंसर विशेषज्ञ ही हो। यदि आप अपना इलाज अपने पारिवारिक डॉक्टर या किसी अन्य से कराना चाहे, तो यह आपकी मर्जी परन्तु, वह डॉक्टर किसी कैंसर विशेषज्ञ डॉक्टर द्वारा अनुमोदित होना चाहिए, उसने कैंसर रोग की चिकित्सा का प्रशिक्षण लिया हुआ हो और कैंसर बोर्ड द्वारा भी कैंसर चिकित्सा के लिए मान्यता प्राप्त होने चाहिए। आपका इलाज केवल एक कैंसर विशेषज्ञ के द्वारा ही किया जाना चाहिए, यह इसलिए भी आवश्यक है कि आपको अपनी चिकित्सा के लिए एक ऐसा डॉक्टर चाहिए जो केवल रोग

का ही नहीं, एक मनुष्य का भी, इलाज करे। कैंसर का इलाज करना और मरीज को मारने का कोई मतलब नहीं होता। किसी भी कैंसर के इलाज के लिए बहुत ज्यादा आक्रमकता दिखाकर, ज्यादा तीव्र दवाईया देकर, मरीज का अनावश्यक रूप से शारीरिक व मानसिक नुकसान करने का क्या लाभ?

यदि आपका डॉक्टर इस बात का केवल संकेत भी देता है कि, उसको आपके इलाज से पहले किसी भी दूसरी राय की आवश्यकता नहीं है तो, मैं आपको जोर देकर सलाह दूंगा की आपको उस डॉक्टर से कुछ भी लेना-देना नहीं है। कोई भी अपने पेशे के प्रति समर्पित और ईमानदार कैंसर विशेषज्ञ दूसरी राय लेने के लिए आपसे पूर्णतया सहमत होगा। डॉक्टरों द्वारा ली जाने वाली शपथ साफ तौर से यह कहती है कि, वे ऐसा कुछ भी नहीं करेंगे जो मरीज के सर्वश्रेष्ठ हित में ना हो। आप तो यह मान लीजिए कि, आपके लिए तो, प्रत्येक डॉक्टर को इस ली हुई शपथ का पालन करना ही होगा।

आप जिस डॉक्टर का अपनी चिकित्सा के लिए अंतिम चुनाव करते हैं, उसमें और उसके द्वारा दी जाने वाली चिकित्सा में, आपका पूरा विश्वास होना चाहिए। यह आपकी जिन्दगी है। किसी की नैतिकता को इसमें दखल मत करने दीजिएं। आपकी नैतिकता तो केवल यह है कि, चाहे जो हो जाए, आपको तो अपने कैंसर को हराना है और इस उद्देश्य के प्राप्त करने के लिए आपके लिए तो यही सर्वश्रेष्ठ है कि, अपने डॉक्टर के साथ अच्छी तालमेल बैठाकर, उसके साथ स्पष्ट व ईमानदारी से बातचीत कर सकें और सबसे जरूरी यह कि, आपका उसमें पूरा भरोसा हो। यदि इनमें से किसी भी किसी बात की कमी है तो, ऐसा डॉक्टर ढूँढ़िए जो आपकी इन तीनों आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

इसके बाद, जो भी यह डॉक्टर आपको सुझाव देता है, उसके निर्देशों व सुझावों का, यह जानते हुए और विश्वास करते हुए कि, यह कुछ भी करके आपका सफल इलाज कर देगा, पूरी ईमानदारी से पालन करिए। वह इन चिकित्साओं को केवल, आपको चिकित्सा देने के लिए ही नहीं कर रहा है, परन्तु आपको अपने कैंसर से मुक्ति दिलाने के लिए कर रहा है।

बेकार में, अपने कैंसर के इलाज के लिए किसी चमत्कारिक इलाज को ढूँढ़ने की कोशिश मत करिएं। हमारे सीमित जानकारी या ज्ञान के अनुसार, सम्भव है कि, आज किसी विशेष कैंसर का इलाज का पता नहीं हो। कुछ कैंसर पूरी तरह स्वतः तौर पर समाप्त प्रायः हो सकते हैं, कुछ आशिक रूप में और कुछ केवल नियंत्रित अवस्था में ही रह सकते हैं। मैंने एक साठ साल के बुजुर्ग व्यक्ति से कहा था कि, यदि कोई डॉक्टर उसके कैंसर को अगले साठ साल के लिए नियंत्रित रख सकते हैं, तो उसे तुरन्त मान जाना चाहिए। इस बात को मत भूलें कि, यदि कैंसर पर नियंत्रण अस्थायी रूप में भी है, तो भी कोई बुरा नहीं है, क्योंकि नई-नई खोज तो रोज हो ही रही है। निकट भविष्य में आपको इसका लाभ मिल सकता है।

प्रत्येक कैंसर की एक अच्छा पहलू भी हैं। मेरी समझ के अनुसार तो कोई कैंसर जितनी तेजी से बढ़ता है, उसका इलाज उतना ही आसान होता है। ज्यादातर किमोथैरेपी की दवाएं, कैंसर की कोशिकाओं को उनकी इसी आदत के कारण पहचान पाती हैं कि, वे बहुत तेजी से बढ़ती है।

केवल यह कि, कैंसर एक जगह से दूसरी जगह फैल गया हैं, अपने आप में कोई अशुभ भविष्यवाणी ही हो जरूरी नहीं है। अक्सर, कुछ तरह के कैंसर तब तक नहीं पहचाने जा सकते जब तक कि, उनका विस्तार ना हो जाए। यदि आपके मूल स्थान पर स्थापित कैंसर के फोड़े का सफल इलाज सम्भव है, तो साधारणया या आमतौर से फैले हुए कैंसर का सफल इलाज भी उतना ही होता हैं। मैं फिर कहता हूँ कि, अपनी स्थिति को किसी अन्य

की स्थिति से तुलना मत करिए और किसी के भी चिकित्सा से सम्बंधित किसी भी तरह की डरावनी कहानियों को अनसुना कर दें।

कुछ लोग चिकित्सा के दौरान होने वाले दर्द या कमजोरी का गलत अर्थ निकालते हैं। उनको इससे यह गलतफहमी होती है कि, उनके कैंसर की परिस्थिति खराब हो रही है। कुछ चिकित्साओं जैसे कि—सर्जरी, रेडिएशन और किमोथैरेपी के बाद इस तरह की स्थिति, चिकित्सा के प्रभावों की एक सामान्य प्रक्रिया होती है। आखिरकार ये चिकित्साएं आपके शरीर की छोटी और कमजोर कैंसर की कोशिकाओं का नाश करती है। आप में रहने वाली शारीरिक थकावट, आपके मुँह का स्वाद बिगड़ना या कुछ विशेष तरह की गंधों का विपरीत प्रभाव पड़ना, ज्यादातर यह दर्शाता है कि, आपको दी गई चिकित्सा और दवाएँ आशानुसार अपना कार्य सुचारु रूप से कर रही हैं।

चिकित्सा के दौरान अपने आपको, जिस सीमा तक आपके डॉक्टर इजाजत दें, व्यस्त और चुस्त रखिए। हमारे पैनल में एक महिला आई थी जिसने पूछा था कि क्या उसके लिए यह उचित होगा कि, चिकित्सा के दौरान भी, वह चर्च में प्रार्थना गीत गाना जारी रखे। एक सज्जन यह जानना चाहते थे कि, क्या वे, चिकित्सा के दौरान भी काम पर जा सकते हैं, दोनो ही मामलों में डॉक्टरों ने उनको सुझाव दिया कि, शारीरिक तौर पर वे जितना कर सकते हैं, अपना कार्य सुचारु रूप से करते रहे। किमोथैरेपी के पहले एक—दो दिन आपको थोड़ी कमजोरी अवश्य महसूस होगी। उस दौरान अपने आप से जबरदस्ती मत करिए। और फिर, थोड़े अवकाश के बाद, यह आवश्यक है कि, अपनी सामान्य दिनचर्या फिर से शुरू कर दें।

धीरज रखिए और चिन्ता ना करें, जो हो गया सो हो गया। अपने डॉक्टर के साथ बातचीत करके एक ऐसी रूपरेखा तैयार करें जिसमें, आपकी चिकित्सा के दौरान सम्भावित सभी तरह की परिस्थितियों की एक समयबद्ध तरीके से सूची बनाएं और इसकी योजना बनाएं कि आप इनसे कैसे निपटेंगे। अब निश्चित होकर आपको दी गई चिकित्सा को अपना कार्य करने दिजिए। यदि आपको किसी इलाज का फायदा तीन महीने के बाद दिखने की सम्भावना बताई गई है तो, तीस दिन के बाद भी यदि कोई फायदा नहीं दिखाई दे रहा है, तो भी निराश मत होइएँ।

याद रखें कि इसके के बाद भी आपके पास दूसरे विकल्प खुले हुए हैं, परन्तु जब तक आपको बताई गई समय सीमा समाप्त नहीं होती आगे की चिन्ता मत करिए। पहले काम को पहले होने दें। आपके डॉक्टर ने आपको वह चिकित्सा व दवाई दी है, जो उसकी मान्यता के अनुसार आपके लिए सर्वश्रेष्ठ है। इस दौरान अपनी सकारात्मक सोच और स्वस्थ मनोदशा को बनाए रखें और दी गई चिकित्सा को अपना काम करने का मौका दें।

आसान और आरामदायक विकल्पों के बारे में ना सोचें ना देखें और दूसरों की नकारात्मक बातों पर भी ध्यान ना दें। मैं प्रार्थनाओं में बहुत विश्वास रखता हूँ और अपनी बीमारी के इलाज के दौरान इसको निरन्तर करता रहा हूँ। मेरा विश्वास है कि, प्रार्थनाओं को अपनी उचित चिकित्सा के साथ—साथ ही करें। अपने किसी भी विचार या विकल्प को नजर अंदाज मत करिए, सभी पर काम करिए। हम कितने भाग्यशाली है कि हम उस समय में जी रहे हैं, जब ये सारे विकल्प हमारे लिए उपलब्ध है।

मैंने यह सीखा है कि, यदि कोई व्यक्ति यही सोचता है कि, वह मरने वाला ही है, तो आमतौर से वह सही होता है। ठीक होने के लिए सावधानी पूर्वक तीन निर्णय लें।



पहला, आप यह निश्चित करिए कि, आप जीना चाहते हैं। कुछ लोग मरना चाहते हैं, और उनके लिए कैंसर केवल एक रास्ता होता है। इसलिए अपने पूर्ण होशो-हवास के साथ फैसला करिए कि, आप जीना चाहते हैं।

दूसरा, अपने पूरे होशो-हवास के साथ यह फैसला करिए कि, आपका अपने डॉक्टर और उसके द्वारा किये जाने वाले इलाज पर पूरा विश्वास और भरोसा है और, यह एक सच्चाई है कि वह आपको ठीक कर देगा।

तीसरा, होशो-हवास के साथ यह फैसला करिए कि, आपके डॉक्टर ने आपके लिए जो चिकित्साएं चुनी हैं वे आपके लिए सर्वोत्तम और सर्वश्रेष्ठ हैं और इनसे आप ठीक हो जाएंगे। तभी, और केवल तभी, आपके पास अपने कैंसर को समाप्त कर उस पर विजय प्राप्त करने का एक मौका है।

ऐनेटी और मैं जब भी फ्लोरिडा जाते थे तो, न्यूरीवर के बीच में स्थित एक छोटे से टापू पर हम अवश्य जाते थे जहाँ पर, हमने लिखा था, “हम वापिस आएंगे और आते रहेगे”।



## नैशनल कैंसर इस्टीट्यूट द्वारा अधिकृत विशिष्ट कैंसर केन्द्र

ऐसा विश्वास किया जाता है कि, विशिष्ट कैंसर केन्द्रों में, सामान्य तरह के कैंसरों के इलाज के लिए, किसी एक डॉक्टर से कहीं ज्यादा अनुभव और दक्षता होती है। यदि आपको इस सेवा की आवश्यकता है तो हम आपसे इस नम्बर पर सम्पर्क करने की सलाह देंगे।

1-800-4-CANCER

अथवा [www.cancer.gov](http://www.cancer.gov) पर जाकर आप इन कैंसर सैंटरों की सूची में से अपने लिए, अपने नजदीकी उपयुक्त किसी कैंसर सैंटर का चुनाव कर सकते हैं।



## लेखकों के बारे में

रिचर्ड ए (डिक) ब्लॉच का जन्म फरवरी 15, 1926 को कन्सास शहर में हुआ था। वे अपने तीनों भाईयों में सबसे छोटे हैं। डिक शुरू से ही एक उद्योगपति मनोप्रवृत्ति के थे। उन्होंने 9 साल की उम्र में ही हाथ से छपाई की मशीनें खरीदी और अपना व्यवसाय शुरू कर दिया। वे इसमें इतने सफल हुए की 25 साल की उम्र में ही उन्होंने तीन स्वचालित मशीनें कर लीं। और कन्सास शहर के ज्यादातर स्कूलों की पुस्तकें छापने लगे। हाई स्कूल के बाद उन्होंने अपना व्यापारिक हक, लोवा के एक कॉलेज को, एक आदर्श दुकान के रूप में बेच दिया।

डिक ने 19 साल की उम्र में पेनेस्यलवानिया यूनिवर्सिटी के वार्टन स्कूल ऑफ फाईनेंस से बीएससी इकॉनोमिक्स की डिग्री प्राप्त की। अपने कॉलेज के दौरान ही उन्होंने कारें खरीदी और अपने कॉलेज के खर्च पूरे करने के लिए उन्हें बेच भी दिया। ग्रेजुएशन के बाद उन्होंने अपने बड़े भाई हेनगरी के साथ मिलकर एक बुक किपिंग और कर निर्धारण की कम्पनी शुरू की। 1955 में उन्होंने एक नई कम्पनी एच एण्ड आर ब्लॉक इंक के नाम से बनाई। यह कम्पनी केवल कर निर्धारण में वरीयता प्राप्त थी। आज भी इस कम्पनी के पूरे विश्व में नौ हजार से भी ज्यादा ऑफिस हैं और सालाना लगभग एक करोड़ से भी ज्यादा इन्कम टैक्स रिटर्न भरते हैं।

सन् 1978 में डिक में खतरनाक किस्म के फैंफडो के कैंसर का निदान किया गया और उन्हें बताया गया कि, उनके पास केवल तीन महीने की ही जिंदगी है। उन्होंने इस भविष्यवाणी को पूर्णतया नकार दिया और एक जाने माने व बड़े कैंसर अस्पताल में दो साल तक गहन चिकित्सा के बाद उनको पूर्णतया कैंसर मुक्त घोषित कर दिया गया। अपनी कैंसर से जंग और उसको सफलता पूर्वक परास्त करने के बाद से ही, उन्होंने अपना पूरा ध्यान हर उस आदमी पर केन्द्रित कर दिया, जिसे कैंसर हैं। उन्होंने एच एण्ड आर ब्लॉक इंक का अपना व्यापारिक हक बेच दिया और 1982 में अपने व्यापार से सेवा मुक्त होकर अपने आप को पूर्णरूप से कैंसर पीड़ितों के लिए ही समर्पित कर दिया। रिचर्ड और ऐनीटी ब्लॉच कैंसर हॉट लाइन-कन्सास के संस्थापक हैं। यह एक स्वयं सेवी संस्था है, जिससे दौ सौ से भी ज्यादा कैंसर मरीज स्वयं सेवक के रूप में जुड़े हैं। उन्होंने 1980 में इस कैंसर हॉट लाइन की स्थापना के बाद, पच्चीस हजार से भी ज्यादा कैंसर मरीजों की टेलीफोन द्वारा उनके प्रश्नों व समस्याओं का निदान किया है। ये ज्यादातर वो लोग थे जिनमें हॉल में ही कैंसर का निदान हुआ था। बहुत से अन्य शहरों में भी इस हॉट लाइन की शाखाएँ फैली हैं।

ये मिसोउरी विश्वविद्यालय, कन्सास, के आर ए ब्लॉच कैंसर मैनेजमेंट सेंटर के भी स्थापक हैं। इसमें 1988 में इसके स्थापन के बाद से ही सौ से भी ज्यादा चिकित्सक अपनी निशुल्क सेवाएँ प्रदान करते हैं। यहाँ निशुल्क मल्टी डिस्पलनरी परामर्श की सेवाएँ भी 250 से भी ज्यादा कैंसर मरीजों को प्रदान की जाती हैं। जिसमें उनको इस बात की जानकारी दी जाती है कि क्या उनको उनके इलाज के लिए सर्वोत्तम व सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा मिल रही है या नहीं। यह जरूरी नहीं है कि 20 से भी ज्यादा दूसरे शहरों में भी यह सेवा निशुल्क ही हो।

मई 1, 1988 को, मिसोउरी विश्वविद्यालय, कन्सास, की भूमि पर, आर ए ब्लॉच कैंसर सर्पोर्ट के भवन को भी, इस विश्वविद्यालय को समर्पित कर दिया गया। यह भवन कैंसर मरीजों व उनके परिजन मित्रों व सहायकों के लिए एक मिलन स्थल है। यहाँ वे एक साथ बैठकर अपने अनुभव, अपनी भावनाएँ व अपना ज्ञान आपस में बांटते हैं। इस प्रोगाम का संचालन पेशेवर विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है और ब्लॉच के दूसरे प्रोगामों की तरह यह भी पूर्णतया निशुल्क है। समय-समय पर इस सेंटर में नये-नये सहायक प्रोगाम तैयार किये जाते हैं और, उनको समाज के परमार्थ के लिए समाजिक केन्द्रों में भेज दिया जाता था। जब यह महसूस किया जाता है कि ये प्रोगाम पूरी तरह से प्रचलित व मान्य हो चुके थे, तब इस सेवा को बंद कर दिया जाता था। इस सर्पोर्ट सेंटर को 2001 में बंद कर दिया गया था।

डिक ने दिमाग में एक कम्प्यूटर प्रोग्राम की रूपरेखा बनाई जिसको, नैशनल कैंसर इस्टीमेट ने तैयार करके पीडीक्यू (फिजिकल डेटा क्योरी) के नाम से शुरू किया। इसमें कैंसर की प्रत्येक जाति व प्रजाति के कैंसरों से सम्बंधित हर प्रकार की ताजा-तरीन व आधुनिकतम जानकारी जैसे उस कैंसर विशेष से सम्बंधित, चिकित्सा सुविधा के विभिन्न विकल्पों, प्रयोगात्मक पद्धतियों व उस पर होने वाले शोध कार्य इत्यादि। यह जानकारी अमेरिका के सभी कैंसर सैंटरों व बाईस विदेशों के कैंसर सैंटरों से भी एकत्रित की जाती है और बाईस शोधकर्ताओं द्वारा इसे लगातार ताजा किया जाता है। एक सरकारी विज्ञप्ति में यह माना गया है कि, यदि सभी कैंसर चिकित्सक पीडीक्यू द्वारा उपलब्ध जानकारी व सेवाओं का पूरा लाभ उठाते हैं तो, नैशनल कैंसर इस्टीमेट के अनुमान के अनुसार, कैंसर से मुक्त होकर उसे हराने वालों की संख्या में, कम से कम दस प्रतिशत की बढ़ोतरी हो जाएगी। अर्थात् चालीस हजार से भी ज्यादा लोगों को नया जीवनदान। ज्यादातर सरकारी कैंसर संबंधित सूचनाएँ इसी आर ए ब्लॉच कैंसर इनफॉर्मेशन सैंटर से ही निकलती है।

इन्होंने तीन पुस्तकें लिखी हैं, “कैंसर देयर इज होप” (“कैंसर....उम्मीद अभी है”) रिचर्ड और एनेटी द्वारा उनके खतरनाक फैंफडो के कैंसर से जंग व उस पर विजय की कहानी है। यह कोई कहानी नहीं है बल्कि इसका उद्देश्य दूसरों को यह बतलाना है कि, वे अपनी बीमारी से जंग के लिए क्या-क्या कर सकते हैं और करना चाहिए। “फाईटिंग कैंसर” (“कैंसर से जंग”) कैंसर मरीजों के लिए एक कदम-दर-कदम मार्गदर्शिका है। इसमें उनको अपने कैंसर की जंग जीतने में क्या-क्या कदम उठाने चाहिए, एक-एक बिन्दु के रूप में, विस्तार से बताती है। ये दोनों ही किसी भी पब्लिक लाइब्रेरी में उपलब्ध हैं। और इनकी कॉपी 1-800-4-CANCER पर कॉल करके भी निशुल्क प्राप्त की जा सकती है। “हेल्थिंग ए फ्रैन्ड ओर रिलेटिव विद कैंसर” विशेष तौर से कैंसर मरीजों को मित्रों, परिजनो व उनके सहायक दल के सदस्यों के लिए विशेष तौर पर एक बहुत ही उपयोगी मार्गदर्शिका है। 1998 में एनलेन्डर ने फाईटिंग कैंसर पुस्तक को अपने अखबार के लेखों में छापा था। इसके बाद, पहले दिन ही, हमारे पास आने वाली फोन कॉलों की संख्या में बहुत तेजी से बढ़ोत्तरी आई और हमने पहले ही दिन 4,23,000 टेलीफोन कॉलों का उत्तर दिया। केवल मरीजों के सहायकों की मदद और उनका मार्गदर्शन करने के लिए एक पुस्तक-गाइड फॉर कैंसर सर्पोटस लिखी गई है। यह हमारे कैंसर केन्द्र हॉटलाइन सेवाओं पर निशुल्क उपलब्ध है।

उन्होंने, सन् 1986 में कैंसर से जंग सम्मेलन-फाइट कैंसर रैली की शुरुआत की। जिसका उद्देश्य लोगों को और विशेष रूप से कैंसर मरीजों को यह समझाना था कि, कैंसर या मृत्यु एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द नहीं है। उनके कैंसर के निदान के बाद भी उनके भविष्य के जीवन व जीवन स्तर में सुधार के बहुत सी सम्भावनाएँ हैं। हर साल जून के पहले रविवार को पूरे देश में इस प्रकार की रैलियाँ की जाती हैं।

जून 1990 में कैंसास शहर की एक ऐसी ही रैली में, आर ए ब्लॉच कैंसर सरवाईवर पार्क को, 8 लाख जीवित अमेरिकावासियों को समर्पित किया गया। इन सब में कैंसर का निदान किया गया था। और उनमें से उस वक्त तक चार लाख लोग अपने कैंसर पर विजय प्राप्त करके उससे मुक्त हो चुके थे। अन्य दूसरे शहरों के लिए भी ऐसे ही पार्क बनाने की योजना है। आज की तारीख में, यह संख्या बढ़कर दुगुनी से भी ज्यादा हो गई है। कन्सास सिटी के अलावा, इस प्रकार के पार्क, बेकरफिल्ड-सी ए, बाल्टीमोर-एम डी, शिकागो-आई एल, क्लेवलैंड-ओ एच, कोलम्बिया-एस सी, कोलम्बस-ओ एस, डालास-टी एक्स, हाउसटन-टी एक्स, इंडियाना पोलिस-आई एन, जैक्सन विले-एफ एल, मिनीया पोलिस-एम एन, न्यू ओरलिनस-एल ए, ओमाहा-एन ई, फोनिक्स-ए जेड, रैंको मिराज-सी ए, साक्रामिन्टो-सी ए, सैन डीगो-सी ए, सान्टा रोजा-सी ए, टक्सन-ए जेड, टाम्पा-एफ एल और मिसीसाउंगा, ओन्टारियों-कैनेडा

जैसे विभिन्न जगहों पर बनाए जा चुके हैं। अन्य बड़ों शहरों के लिए भी और पार्क बनाने की योजना चल रही है।

ऐनीटी और डिक साल में एक हजार से भी ज्यादा कैंसर मरीजों से निजी तौर पर बात करते हैं, उनकी समस्याएँ सुनते हैं, उनकी व उनके परिजनों की हर समस्याओं को सुनकर, उनकी हर सम्भव सहायता करने का प्रयास करते हैं। वे पूरे देश में घूमकर, कैंसर संबंधित विभिन्न दलों व संस्थाओं से मिलकर बात करते हैं। उनके लेख बहुत सी पत्रिकाओं जैसे फ़ैमिली सर्किल, मेडिकल वर्ड न्यूज, प्यूपिल्स, कॉसमोप्लिसन, वोग्य और रिड्स डाइजेस्ट इत्यादि में, अक्सर चर्चा का विषय रहते हैं। वे बहुत से कार्यक्रमों में बहुत से बड़े-बड़े टीवी नेटवर्क में भी आते रहते हैं। उनको विभिन्न संस्थाओं द्वारा— जैसे अमेरिकन कैंसर सोसाइटी, सरटोमा क्लब, दा डिपार्टमेंट ऑफ हैल्थ एण्ड ह्यूमन सर्विससेज, रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, चर्च ऑफ जीसस क्रिस्ट और लेटर डे सेन्टस इत्यादि, उनको साइस्टिक फाइब्रोसिस द्वारा “मेन काइन्ड अवार्ड” से भी सम्मानित किया जा चुका है। सन् 1982 में राष्ट्रपति रीगन द्वारा छः साल के लिए उनको नैशनल कैंसर एडवाइजरी बोर्ड में नियुक्त किया गया था। सन् 1989 में उनको, वांशिंगटन के केयरिंग इस्टीट्यूट ने, चार हजार उम्मीदवारों में से “मोस्ट केयरिंग इंडीज्यूवल” के रूप में चुना था। वे प्रैसीडेन्ट सर्किल ऑफ दा नैशनल अकेडमी आफ दा साइंस, दा इस्टीट्यूट ऑफ मैडिसन के भी सदस्य हैं। वे एन आई एच के ऑफिस ऑफ अलटरनेटिव मैडीसिन में भी दो साल सदस्य के रूप में रह चुके हैं। 1994 में डिक को, उनकी कैंसर और कैंसर मरीजों के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए, “अमेरिकन सोसाइटी ऑफ क्लिनिकल ओनकोलॉजी पब्लिक सर्विसेज” के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। 1995 में उनको सोसाइटी ऑफ सर्जिकल ओनकोलॉजी द्वारा “लैमेन अवार्ड” द्वारा भी सम्मानित किया गया था। 2003 में, अमेरिकन-ईटेलियन कैंसर फाउंडेशन द्वारा, डिक को “ऐलीसेन्ड्रोडी मोन्टेजमोलो लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड” से सम्मानित किया गया था। यह पुरस्कार उनको कैंसर मरीजों के लिए समर्पण और विशेषकर पीडीक्यू प्रोग्राम तैयार करने के लिए दिया गया था।

ऐनीटी मॉडल ब्लॉच का जन्म फिलाडेल्फिया में हुआ था। जहाँ वह 1946 में डिक के साथ अपनी शादी के समय तक रही। उनके और डिक के, तीन बेटियाँ—बारबरा, नेनसी और लिन्डा और सात नवासे—नवासिया हैं। उनका परिवार ही उनके लिए सबसे उँची प्राथमिकता है। ऐनीटी ने बहुत से सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया है और आजकल डिक के साथ मिलकर उसके सभी तरह के कैंसर से जुड़े हुए कार्यक्रमों व विभिन्न दलों के चर्चा में, पूर्णरूप से सहयोग देती है। डिक और ऐनीटी को, 1995 में कारपिंग मैगजीन्स का “हीरो अवार्ड फोर लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड” द्वारा सम्मानित किया गया था।



## सामान्य भाषा में शब्द ज्ञान

**Benign** – बेनीन– कोशिकाओं द्वारा एक फोड़ें का निर्माण जो लगातार बढ़ता नहीं है, हाल फिलहाल कैंसर का भी नहीं हैं।

**Biopsy** - बायोप्सी – शरीर के उत्तको की जाँच यह पता करने के लिए कि, कैंसर है या नहीं, शरीर के उत्तको की जाँच।

**Cancer** - कैंसर– विद्रोही कोशिकाओं द्वारा अनियंत्रित बढ़त।

**Carcinogen** – कार्सिनोजन – कैंसर उत्पन करने का एक तत्व।

**Carcinoma** – कार्सिनोमा– शरीर के अन्दर एक कैंसर ग्रसित फोड़े की गाठ।

**Chemotherapy** – कीमोथेरेपी–रसायनों द्वारा इलाज।

**Immunization Therapy** - इम्यूनाइजेशन थैरेपी – शरीर की प्राकृतिक रोग प्रतिरक्षण तंत्र को सक्रिय करके इलाज करने की पद्धति।

**Leukemia** – ल्यूकेमिया– रक्त बनाने वाली अस्थिमज्जा की कोशिकाओं का कैंसर।

**Lymphoma** – लिम्फोमा– लसीका ग्रन्थि का कैंसर।

**Malignant** – मैलीगेंट– कैंसर कोशिकाएँ जो गुणात्मक रूप से बढ़ती रहती हैं।

**Metastasize** – मैटास्टेसाइज – मूल स्थान से कैंसर की कोशिकाओं का स्थानान्तर होकर शरीर के अन्य भाग में स्थापित होकर एक नये कैंसर के फोड़े का निर्माण होना।

**Nuclear Medicine** – न्यूक्लीयर मैडीसन– स्केनिंग और टोमोग्राम जाँच का एक दूसरा नाम।

**Oncologist** – ऑनक्लोजिस्ट – कैंसर विशेषज्ञ।

**Palliative treatment** – पैलेएटिव ट्रीटमेंट – वह कैंसर से सम्बन्धित दूसरे क्षेत्रों में भी जैसे की चिकित्सा, रेडिएशन और सर्जरी में भी विशेषज्ञ हो सकता है।

**Pathology** – पैथोलोजी – शरीर के उत्तकों के द्रव्यों की जाँच प्रक्रिया जिससे कैंसर और उसकी जाति का पता चलता है।

**Prognosis** – प्रोगनोसिस – बीमारी के भविष्य के बारे में आंकलन।

**Protocol** – प्रोटोकॉल – कैंसर का इलाज करने के लिए प्रयोग में लाने वाली कोई भी विशेष चिकित्साओं की श्रृंखला।

**Radiotherapy** – रेडियोथैरेपी – रेडिएशन और एक्स-रे द्वारा कैंसर का इलाज।

**Remission** – रैमिसन – जब कैंसर स्वतः ही लुप्त हो जाता है, परन्तु ठीक भी नहीं होता।

**Sarcoma** – सरकोमा – शरीर के सहायक तंत्रों जैसे कि, रेशेदार उत्तक या रक्त कोशिकाओं का कैंसर।

**Scan** – स्कैन – शरीर में रेडियोधर्मिक पदार्थ डालकर किसी विशेष अंग जैसे– मस्तिष्क, जिगर या हड्डियों का चित्र लेना। स्कैनिंग द्वारा शरीर के अंग का बहुत सूक्ष्मता से चित्र लिया जा सकता है।

**Tomogram** – टोमोग्राम – कम्प्यूटर द्वारा निर्धारित, एक खड़ी एक्स-रे प्रक्रिया जिससे शरीर के विभिन्न अंगों का सीधे टुकड़ों में चित्र लेना।

**Tumor** – ट्यूमर – कोशिकाओं का जमावड़ा जो निर्दोष भी हो सकता है और कैंसर ग्रसित भी।

